के साथ यथा योग्य प्रीति रखता है और तदनुसार उन के साथ बर्तता है वैसाही राजा को भी करना उचितही है–वह राजा काहे का जिस में ये बातें न हुईं राजा के नीति निपुण शासन की प्रशंसा तो तभी है कि धनी हो या दरिद्र दोनों यही समझें कि महाराज हमी को विशेष आदर देते हैं–विदेशी राजा की तो हम नहीं कहते अपने देश के राजा में तो यह गुण अवश्यही शोभा देता है ईश्वर की दया से तुक्को जी इस गुण के अथाह सागर थे--तुक्को जी की राज काज में निपुणता और प्रजा पर समभाव का एक प्रत्यक्ष प्रमाण इस से बढ़ कर और क्या हो सकता है--एक दिन महाराजा साहब हाथी पर सवार जलूस के साथ कहीं को जा रहे थे और सिपाही आदमियों की भीड़ हटाता आगे जा रहा था सिपाही ने एक बुड्ढे से कहा अरे बुड्ढा बच महाराज की सवारी आ रही है बुड्ढा ने कहा हां जानता हूं वही तुकवा तो है; इस बीच महाराज का हाथी भी पास आ गया सिपाही को उस बूढ़े मनुष्य को झिड़की देते देख और बूढ़े का वह कहना सुन हुलकर महाराज बोले हाँ बाबा मैं वही तुकवा हूं–महाराज की सरल प्रकृति प्रजारंजनेच्छा समय का सदुपयोग आदि पूज्य गुण परम प्रशंसनीय थे ऐसे राजा की स्तुति करने को किस का मन न चाहेगा--यह सब महाराणी अहिल्या बाई के लालन पालन तथा ताड़न और उत्कृष्ट विद्वानों से शिक्षा दिलाने का परिणाम है–राज काज में जिसकी विशाल बुद्धि और दूर दर्शिता इसी से प्रगट है कि पचासों बालकों की पंक्ति से तुक्को जी ऐसे गरीब दुर्बल बालक का भविष्य भाग्योदय का चिन्ह उस मे देख चुन लिया फिर उसे उत्तम विद्या और राज काज की उत्तम शिक्षा से अलंकृत कराया--जैसा गीली मिट्टी प्रवीण कुलाल के हाथ पड़ने से बड़े दाम के खेलौने बन जाती है वही मिट्टी साधारण कुम्हार के हाथ में आई तो घड़ा बन एक पैसे को बिकती है इसी तरह बालक की बाल्य अवस्था गीली मिट्टी की भांत सुयोग्य पोषक के आधीन रह उस को उत्तम और योग्य तथा निकृष्ट और कुपात्र बना देती है--

जब तुक्को जी १२ बर्ष के थे तो एक दिन उपाध्याय को पढ़ाने में कुछ अधिक समय लग गया कालातिक्रमण हो जाने से भूख ने भी ज़ोर किया क्रोध में आय सामने एक खिलौना रक्खा था उसे

दे पटका खिलौना के टूटने का शब्द और महाराज के क्रोध के वाक्य अहिल्या बाई के कान में पड़तेही आय उपस्थित हुई देखती हैं तो खिलौना चूर २ हुआ पड़ा है और तुक्को जी रोनी सूरत बनाये क्रोध में भरे एक कोने में खड़े हैं अहिल्या को देखतेही तुक्को जी डर गये--अहिल्या--बेटा तुम ने गुरू जी के सन्मुख बड़ा अपराध किया राजा हो के गुरू का अपमान करना कैसा बड़ा अनर्थ है खबरदार सचेत रहो आगे से ऐसी भूल न करना नहीं तो प्रजा तुम्हारा उपहास करेगी और कहेगी कि हमारा राजा बड़ा अयोग्य और क्रोधी है जाओ गुरू जी को दण्डवत् करो और कहो गुरू महाराज अब कभी ऐसा अपराध न करूंगा--गुरू जी के पास से जब लौट कर आये तो अलग इन को एक कमरे में ले जा समझाने लगीं कि बेटा यह खिलौना जिसे तुम ने क्रोध में आ तोड़ डाला है २० रुपये का था जानते हो ये रुपये कहां से आये थे--ये रुपये प्रजा के घर से आये थे जिसे खेती बारी आदि अनेक बड़े मेहनत के काम और अनेक कष्ट सह गरीब प्रजा पैदा कर हमें देती है--तुम ने इस खिलौने को तोड़ नष्ट कर डाला यदि गरीब दुर्बल प्रजा इस बात को जान लेगी कि उस के श्रमोपार्जित धन की राज द्वार में ऐसी दुर्गति होती है तो बिचार करो उस समय उस का चित्त कितना खिन्न होगा और अपने राजा की ओर से उस को कितनी अश्रद्धा होगी--राजा की ओर से प्रजा का जी दुखी होना और राजा की भक्ति प्रजा में न रहना राजा के विनाश और अण्ड नष्ट हो जाने का मुख्य कारण है--बेटा! तुम्हारे उपयोग में जितने पदार्थ हैं वे हमारे संपादन किये हुये नहीं हैं वरन हमारी सब ऐश्वर्य सामग्री प्रजा के परिश्रम का फल है--तुम राजा हो तुम्हारे राजकीय श्रेष्ठ गुणों को जब भूख ऐसी तुच्छ बात ने दबा दिया तो किसी प्रबल शत्रु के जीतने में तुम क्या समर्थ होगे--मनुष्य का यह शरीर एक गढ़ है जिस में कपट भेख धारी इन्द्रियां शत्रु सी वास करती हैं किन्तु मित्र सी बन प्रतिक्षण इसी ताक में लगी रहती है कि तुम को अपने वश में लाय शरीर कोट् में स्वच्छन्दता पूर्वक भोग विलास से तुम को रोगी निर्बल और निन्दित कर दें तो जब भीतरी इन शत्रुओं को तुम न जीत सकोगे तब बाहर के शत्रुओं को क्या जीतोगे--

इन्द्रिय शत्रुओं को वश में रखने को अच्छे लोग दुस्संग छोड़ सत्संग में रहना पसन्द कर श्रेष्ठ आचरण लोभ मोह मद मात्सर्ज आदि निंदित

कर्मों को स्वप्न में भी निकट नहीं आने देते- श्रेष्ठ पदाधिरूढ़ राजा लोग जब थोड़ी बात भूख प्यास के आधीन हो गये तो छोटे लोगों की कौन चलावे-इन्द्रियों के आधीन होनाही दुराचार और लोक निन्दा है फल जिस का अल्पायु है-बेटा ऐसे विनाश मूल क्रोध के बशी भूत हो तुम ने २० रुपये की बस्तु को नष्ट कर दिया कैसा अनर्थ राजा के पक्ष में है; राजा का व्यर्थ का कोप प्रजा के लिये प्रलय है—अच्छा राजा वही है जो "प्रकृति" प्रजा का रंजन करने वाला है-ऐसा मत समझो कि तुम्हारे ऊपर कोई नहीं है तुम महारानी विक्टोरिया के आधीन हो जो विलाइत में रहती हैं जिनका सदैव यही विचार रहता है कि उन के आधीन राजा लोग अपने काम में दत्तचित्त प्रजा पालक और सत्य आचरण वाले हों-जिस समय महाराणी को यह मालूम होगा कि तुक्को जी बड़ा क्रोधी और अविवेकी राजा है तो इसका परिणाम कितना भयानक होगा-

बेटा तुम अब निरे बालक नहीं हो १२ वर्ष के हो चुके तुम्हे अब सम्हल के चलना उचित है-आज से यह प्रतिज्ञा कर लो कि दिन में गुरु जनों से जो उपदेश सुनो उन को रात में सोते समय स्मरण कर सोओगे तो विश्वास है कि दूसरे दिन कभी कोई अयोग्य अनुचित काम न करोगे-भोजन के पहिले इस श्लोक को याद कर तब भोजन करो

दुराचारो हि पुरुषो लोके भवति निन्दितः ।
दुःखभागीच सततं व्याधितेल्पायुरेवच ॥

तात्पर्य यह कि अवकाश मिलने पर समयोचित उपदेश अहिल्या तुक्को जी को सदैव दिया करती थीं-सत्य है जो माता अपने पद का स्मरण करती हुई बालक को इस तरह का उपदेश देती है वह बालक युवा होने पर क्योंकर अपने कुल विरुद्ध पद विरुद्ध और उपदेश विरुद्ध काम कर सकता है इसी से मनु ने कहा है "गुरुणामेव सर्वेषां माताहि परमो गुरुः"-माताओं में भी अहिल्या सी वीरांगनारमणीरत्न भारत के मुख का दर्पण जिस में अपना मुह देख और २ देशों की स्त्रियाँ सभ्यता की शिर मौर होकर भी लाज से मुख नीचा कर सकती हैं-विदेशी महिलायें चाहो कितनाही गुण गौरव से भरी पुरी हों पवित्रता और सरल स्वभाव में यहां की साधारण रमणीकी अपेक्षा अणुमात्र नहीं हैं

तब रमणी रत्न की तो बातही निराली है—अन्त में हमारे पढ़ने वाले बालक तथा बालिकाओं को इस से कुछ भी उपदेश मिला और यह लेख उन्हें रोचक हुआ तो मैं अपना परिश्रम सफल कर मानूंगा—

विश्वेश्वरा नन्द सरस्वती।

संग्रहीत श्लोक।

हन्तालि सन्ताप निवृत्तयेस्या-किन्तालवृन्तं तरली करोषि।
सन्ताप एषोन्तर दाहहेतु-र्नतश्रुवो नव्यजनो पनोद्यः॥

इस श्लोक में "नव्यजना पनोद्यः" में अच्छी चातुरी रक्खी गई है—

मधुर मधुर मेतं मङ्गलं मङ्गलानां सकल निगम वल्ली सत्फलं चित्स्वरूपं। सकृदपि परिगीतंश्रद्धयाहेलया वा भृगुवर नरमात्रं तारयेत्कृष्णनाम॥

कृष्णः कृष्णः कृष्ण इत्यन्त काले जल्पन् जन्तुर्जीवनं यो जहाति। आद्यः कृष्णः कल्पते तस्य मुक्त्यै व्रीड़ा नम्रस्तिष्ठ-तो न्यावृणीस्तः॥

ऊपर के दोनों श्लोकों में अक्षर मैत्री के साथ कृष्ण नाम की महिमा बहुतही उक्ति युक्ति पूर्ण है—

स्वस्ति; स्वागत; मर्थ्यहं; वद विभो; किं दीयतां; मेदिनी का मात्रा; मम विक्रमत्रयमिदं; दत्तं; गृहीतं मया।
मादेहीत्युशनाह; किं हरिरयं पात्रं किमस्मत्परमित्येवं वलिनार्चितो मखमुखे पायात्स वो वामनः॥

दान वीर कैसे होते हैं इस के उदाहरण का यह श्लोक रस तरं-गिणी में दिया गया है आशीर्वाद देते हुये वामन और बलि की बात चीत का ढंग अच्छा निवाहा है—

बामन-आप का कल्याण हो—बलि—महाराज बहुत अच्छे आये आंप का स्वागत हो—बा—हम अर्थी हैं कुछ मांगा चाहते हैं—व—तो क्या लोगे हम वही दें—वा—पृथ्वी—व—कितनी—वा-हमारा तीन पांव—व—दिया—वा—हम ने लिया—शुक्राचार्य--मत दे--व—क्यों—यह हरि है सब हर लेंगे-व-तो इन से बढ़ के पात्र दान देने को अब कहाँ मिलेगा--इस भांत यज्ञ के प्रारम्भ में बलि से पूजित वामन तुम्हारा अर्थात् हमारे पढ़ने वालों का मंगल करैं--

हरिं हरीतकीं चैव सावित्री जान्हवी जलम् ।
अन्तर्मलविनाशय स्मरेद् भक्षेज्जपेत्पिवेत् ॥

हरि-हर्रै-गायत्री-गंगाजल-इन चारो को भीतर का मल दूर करने को स्मरण करै-खाय-जपै-पीवै—

गोदुग्धं बाटिकापुष्पं विद्या कूपोदकं तथा ।
क्षयेण वृद्धिमाप्नोति संचयेन विनश्यति ॥

गाय का दूध बगीचे का फूल विद्या कुआ का जल ये खरच करने से बढ़ते हैं जोड़ के रखने से नाश होते हैं ।

श्रीदीप्ती, ह्रीकीर्ती, धीनीती, गीःप्रीती ।
एधेते, द्वे' द्वे, ते, ये, नेमे, देवेशे ॥

ऊपर का श्लोक महा कवि दण्डी का है शब्द चातुरी अर्थ चातुरी दोनों का छोर इस में है दोनों का एक साथ निवाहना कठिन है शब्दालङ्कार हो तो अर्थालङ्कार नहीं आसकता अर्थ चातुरी हो भी तो शब्दचातुरी नहीं आवेगी--इस में शब्दालङ्कार यमक भरपूर है अर्थ में आशीर्वाद और प्रशंसा दोनों आगई है "श्री" शोभा या लक्ष्मी; "दीप्ति" शरीर की कान्ति; 'ह्री' लाज; और 'कीर्ति' यश; 'धी' बुद्धि; 'नीति' उचित न्याय; 'गी'; सरस्वती 'प्रीति' प्रसन्नता ये सब दो दो एक साथ जोड़ा या युग की भांत तुम्हारे में हैं और बढ़ती रहै जो सब देवेश इन्द्र में नहीं हैं तुम्हारे में हैं तो तुम इन्द्र से भी बढ़ कर हो प्रशंसा और आशीर्वाद दोनों एक सा इस में है-श्रीचदीप्तिश्च श्री दीप्ती ह्रीचकीर्तिश्च ह्रीकीर्ती धीचनीतिश्चधीनीती: गीश्चप्रीतिश्चगी: प्रीती—इस भांत द्वन्द्व समास करने से द्विवचन हो दो दो का एक युग हो गया ॥

रवं वस्ते कलविंकरुठमलिनं कादम्बिनी कम्बलं ; चर्चां पारयतीव दर्दुरकुलं कोलाहलैरून्मदम्। गन्धं मुञ्चति सिक्तलाजसदृशं वर्षेण दग्धा स्थली ; दुर्लक्ष्योपि विभाव्यते कमलिनी हासेन भासां निधिः ॥

ऊपर के श्लोक में वर्षा का बर्णन बड़ी अनूठी उक्ति युक्ति का है--

सहायार्थ दान।

प्रेस के सहायार्थ बांकीपुर चैतन्य पुस्तकालय का प्रेषित ५) हम धन्यबाद पूर्वक स्वीकार करते हैं हमें पूरा एक वर्ष इस राम रसरा को रेंघते हो गया पर ५०) भी पूरे न भये किस आशा पर और कब तक सब ओर से इस जर्जरित जहाज को खींचते रहैं--धन्य! हमारा देश धन्य; हमारे देश के लोगों की विद्या वृद्धि की ओर झुकावट धन्य; हिन्दी के सुदिन और सर्वोपरि धन्य, हमारे अभाग्य--जिन्होंने कुछ भी हिन्दी लिखना सीख लिया है उन्होंने अपनी चालाकी से हज़ारों कमाये सहस्त्रों मनुष्यों के बीच भाषा की वृद्धि के स्तम्भ समझे जाते हैं हम अपने मन से चाहो लेखक मंडली के परमाचार्य बने बैठे हों पर इतना भी न कर सके कि एक छोटा सा निज का प्रेस कर इसे सुगम रीति पर चलाये जाते धिक्!——

कासारः सरसी सरांसि सरितो धाराधरैः पूरितः नासौ सम्प्रति पूर्जते जलनिधिः संक्षीयतेप्रत्युत। किं वर्षर्तुकलंकएव बडवा वन्हेः किमागः परम् किं धाराधरपातकं किमथवा सत्यं कृतघ्नोम्बुधिः ॥

छोटे लाट की कौन्सिल और बजट।

अभी लखनऊ में जो छोटे लाट की कौन्सिल बैठी थी उस में राजकीय बिषय के दो एक बिचार के अतिरिक्त हमारे इस संमिलित प्रदेश के बजट का विचार किया गया था—इन प्रदेशों की कुल आमदनी है

करोड़ है उस में केवल ४ करोड़ स्थानीय 'लोकल' गवर्नमेंट को दे बाक़ी ८ करोड़ इंडिया गवर्नमेंट ले लेती है इसी ४ करोड़ में शिक्षा सफ़ाई पुलिस दीवानी या फौजदारी आदि बड़े २ महकमे के जितने ख़र्च हैं जिस से प्रजा का सुशासन सम्बन्ध रखता है लोकल गवर्नमेंट को करना पड़ता है-बंगाल मन्द्राज बम्बई ज़हां के लोग यहां से हर एक बात में आगे बढ़े हैं वहां कुल आमदनी का आधे के लगभग वहां २ की स्थानीय गवर्नमेंट को प्रजा के सुशासन निमित्त दिया जाता है और यहां इतना कम कि रुपये में ५ आने से थोड़ाही अधिक होता है-उचित था कि यहां के लोग बंगाल आदि की अपेक्षा पीछे हटे हैं और शिक्षा इत्यादि राज्य के उत्तम प्रबन्ध और सुशासन का पूरा फ़ाइदा नहीं उठाते तो जिन्में उन की भलाई और उपकार हो उस की ओर गवर्नमेंट बद्ध मुष्टि न हो औदार्य धारण करती न कि पिछले वर्षों में हमें कम मिला तो अब भी कम मिलेगा बंगाल आदि प्रदेशों को अधिक मिला तो उन्हें वैसाही फिर अधिक दिया जायगा महात्मा ईसा की कहावत "जिसे अधिक मिला उसे और अधिक दिया जायगा जिसे नहीं दिया गया उस से छीन लिया जायगा"-अस्तु कहने सुनने पर इण्डिया गवर्नमेंट उदार भाव भी ग्रहण किया तो ऊंट के मुह का जीरे की भांत १० लाख और देना मंजूर किया लोकल गवर्नमेंट उतनेही से सन्तुष्ट हो इंडिया गवर्नमेंट को धन्यवाद देने लगी-इस हाल की कौन्सिल में आनरेबुल पंडित मदन मोहन मालवीय ने देशानुराग और स्वदेश भक्ति के भाव से अपनी स्वच्छन्द अनुमति प्रकाश करते लाट साहब की कौन्सिल में सूचित किया कि देश के सुप्रबन्ध के लिये ४ करोड़ १० लाख काफी नहीं है और २ प्रदेशों की अपेक्षा शिक्षा में यहाँ बड़ी त्रुटि है प्लेग जो शत्रु हो प्रतिवर्ष कई लाख प्रजा को निगले जाता है उस की ओर गवर्नमेंट का भरपूर ध्यान देना उचित है-ऐडवोकेट के कथन के अनुसार कि सीमा पर जो कोई शत्रु की ज़रा भी संभवना आपड़ती है तो गवर्नमेंट कंजूसी न कर सेना और रसद इत्यादि के प्रबन्ध में दोनों हाथों से रुपया उलचने लगती है प्लेग तो उस सीमा वाले शत्रु से कितना अधिक भयंकर है तब गवर्नमेंट को इस बड़े शत्रु की उपेक्षा कर देना कितना हानिकारक है-इसी लिये मालवीय महाशय ने अपनी स्पीच में इस पर अधिक ज़ोर दे इस बात को सिद्ध कर दिया कि गवर्नमेंट यदि प्लेग के प्रारम्भही में लोगों को

अपने घरों से हटाय उन के रहने का अच्छा प्रबन्ध कर दिया करे तो १०८ में केवल ५ मृत्यु हो-दो वर्ष से ऐसा देखा भी जाता है कि जो लोग सर्कार की बनाई कुरियों में चले गये उन में एक भी नहीं जाया गये पर यह प्रबन्ध इतना देर के किया गया कि बहुतही थोड़े लोगों को उस में स्थान मिला—इत्यादि कई बातों को मालवीय जी ने कहा पर खेद होता है कि लाट साहब का ध्यान इस ओर न गया जिन्होंने इसी पर विशेष ज़ोर दिया कि गवर्नमेंट का अपने ऊपर कुल भार लेना असंभव है लोग कुछ करें तो उन के मांगने पर हम सहायता दे सकते हैं—किन्तु लाट साहब का यह कहना अनुचित सा बोध होता है लोग किस बूते पर कुछ करैं "नहि विद्या नहि बाहु बल नहि खरचन को दाम" सर्व साधारण में न ऊंचे दरजे की तालीम है कि प्लेग वास्तव में क्या है क्यों इस का कातिल ज़हर इस तरह पर ज़ोर करता है और कैसे इस से अपने को बचावै इन सब बातों को समझैं विद्या और बुद्धि का यह हाल है अब बल का विचार करें तो बल, और उत्साह मनुष्य में तब बढ़ता है जब सब ओर से सुचित्ती और प्रसन्नता हो जहां दिन भर की मेहनत के उपरान्त येन केन पेट पाल लेते हैं न और किसी तरह की ताकत हमें हासिल है न इतना दाम पास है तब किस भरोसे लाट साहब के कहने के अनुसार बिना सर्कारी मदद के हम कुछ कर सकते हैं—गवर्नमेंट प्रजा का सब भार अपने ऊपर वैसाही उठावे जैसा वह अपने निज स्वत्वकी रक्षा में बड़ी चैतन्य रहती हैं—प्लेग प्रतिवर्ष कई लाख मनुष्यों को चट्ट किये डालता है अभी न जानिये कै बर्ष तक और इस का ज़ोर रहे तब तक में तो न जानिये कितना संक्षय और होगा और कितने घराने जड़ पेड़ से अब तक में उजड़ गये और उजड़ जांयगे—गवर्नमेंट प्रजा के बल है जब प्रजा नहीं है तो राजा किस का शासन करेगा इसी से हमारे यहां राजा के सात अंग में 'प्रकृति' प्रजा को एक मुख्य अंग माना है हां गवर्नमेंट इस काम में अगुवा बनती तो लोग जो ऐसे विपत्ति के समय सहारा ढूंढ़ा करते हैं धन्य-वाद पूर्बक सरकार की पैरवी करने लगते और भयंकर विपत्ति से छुट-कारा पाते—

इन प्रदेशों मे सर्कारी ओहदे।

सन् १८७९ में गवर्नमेंट आफ इंडिया से यह हुक्म हुआ था कि २०० या २०० के ऊपर की तनख्वाह के ओहदे सब 'नेटिब आफ इंडिया' हिन्दुस्तान के रहने वालों को दिये जांय सिवाय उन ओहदों के जिन में इमतिहान की ज़रूरत है जो इमतिहान विलाइत में लिये जाते हैं या जिन ओहदों पर सेक्रेटरी आफ स्टेट या गवर्नर जेनरल नियत करते हैं-किन्तु हत भाग्य इस सम्मिलित प्रदेश में नेटिब आफ इंडिया के माने यूरेशियन या डेमिसाइल्ड यूरोपियन के लिये गये हैं यहां के रहने वाले हिन्दू या मुसलमान के नहीं-बंगल के सेक्रेटेरियट में २०० या २०० के ऊपर के २९ ओहदे हैं जिन में २२ हिन्दू या मुसलमान है; बोर्ड के दफ़्तर में १२ ऐसे ओहदे हैं जिन में ९ हिन्दुस्तानी हैं-मन्दराज के सेक्रेटेरियट में ११ में ६ हिन्दुस्तानी हैं बोर्ड में ८ ऐसे ओहदे हैं सबों पर हिन्दुस्तानी हैं-बाम्बे के सेक्रेटेरियट में १७ में ११ हिन्दुस्तानी हैं-वही यहां के सेक्रेटेरियट में १५ ऐसे ओहदों में एक भी हिन्दुस्तानी नहीं हैं सबों पर यूरोपियन या नेटिब क्रिश्चियन हैं; बोर्ड में ७ ऐसे ओ-हदे हैं उन में कोई हिन्दुस्तानी नही हैं--९ कमिशनरियों में ९ ओहदे हैं उन में भी कोई हिन्दू या मुसलमान नहीं हैं--कोर्ट आफ वार्डस में १६ ऐसे ओहदों में केवल ४ हिन्दुस्तानी हैं--शिक्षा विभाग में २८० से ५०० तक की नौकरियों में केवल ४ या ५ हिन्दुस्तानी हैं बाकी में यूरेशियन या नेटिब क्रिश्चियन हैं--ऐसाही पुलीस इत्यादि के मुहकमे में हिन्दुस्तानी नही रक्खे गये--इसी को बड़े लाट की कौन्सिल में जो मार्च के अन्त में बजट सम्बन्धी विचार के लिये बैठी उस में आनरेबुल राय बहादुर श्री राम ने अपनी स्पीच में बहुत अच्छी तरह कहा-- तद्यथा संमि-लित प्रदेश के फारेस्ट डिपार्टमेंट में १७ गज़टेड ओहदे हैं जिन में एक हिन्दुस्तानी नहीं हैं ओपियम डिपार्टमेंट में ५४ इस तरह के ओहदे हैं जिन में ५ हिन्दुस्तानी हैं जिन की तनखाह २५० से ५०० तक है-टेलिग्राफ के महकमें में १८ ओहदे हैं जिस की तनखाह २५० से १८०० तक है उन में एक भी हिन्दुस्तानी नहीं हैं—फइनेन्शियल डिपार्टमेंट में ७ गज़टेड ओहदों में कोई हिन्दुस्तानी नहीं हैं-इसी तरह प्रत्येक महकमे की ऐसीही त्रुटि दिखाई गई है और ऐसी दशा में जब चैतन्य से चैतन्य ग्रेज्युयेट लोगों का समूह प्रतिवर्ष यहां की यूनिवर-

सिटियों से निकल रहा है Mixed blood मिश्रित उत्पत्ति के कारण इन यूरेशियन तथा नेटिव क्रिश्चिनों में दिमाग की कूवत उतनी प्रबल नहीं हो सकती जैसी एकही जाति के बाप मा से पैदा शुद्ध रजवीर्य के इन हिन्दुस्तानियों की हो सकती है-इसी बात को आनरेबुल मालवीय ने भी यहां के छोटे लाट की कौन्सिल में पूछा और उद्घाटन किया है अभी इस का उत्तर या प्रतिफल नहीं मिला देखैं क्या हो-बहुत कुछ सोचने के उपरान्त यही मन में आता है कि महा संक्षयकारी इस प्लेग का मुख्य कारण दरिद्रता और भूख से मरना है—बंगाल के दिहातों में प्लेग का विस्तार बहुत नहीं हुआ इस का क्या कारण है यही की वहां इस्तिमिरारी बन्दोबस्त से भोजन दोनों जून सबों को भरपूर मिलता जाता है-यहां दिहातों में वहुधा शहरों में भी कठिन परिश्रम के उपरान्त भी एक जून लोग खाते हैं तो एक जून भूखे सो रहते हैं-गरीबों की कौन कहै धनी रुपये वाले भी हाथ पर हाथ रख बैठे २ झीख रहे हैं हुंडी वालों का रोज़गार मनी आर्डर ने छीन लिया ; बड़ी २ नदियों में नावों के ज़रिये जो तिजारत होती थी वह रेल के चलने से मारी पड़ी ; लेन देन कानून की हिन्दी की चिन्दी ने बन्द कर दिया सारांश यह कि क्या बड़े क्या छोटे कोई ऐसे नहीं हैं कि इस समय चिन्ता और फिकिर से मुक्त हों ; बड़ों को अपना बड़प्पन और अपने घर की मर्याद बनाये बनाये रखने की फिक्र दामनगीर है छोटे अपने पेट पालने की चिन्ता में व्यस्त हैं भरपूर पेट न भरनाही प्लेग के बढ़ने का महा कारण है हम नहीं जानते सरकार क्यों इस ओर नहीं ध्यान देती और प्लेग महा विपत्ति का जिस तरह पर जड़ पेड़ से उच्छेद हो वही करने में दत्त चित्त नहीं होती-प्रति सप्ताह की मृत्यु का टोटल जब कई हज़ार होता है तो प्रति मास लाखों और वर्ष के अन्त में करोड़ के लगभग की संख्या पहुंचती है ; होते२ कुछ वर्ष के उपरान्त कुल आवादी की आधी या तिहाई संख्या बच जायगी ; अस्तु अमेरिका इत्यादि देशों का वृत्तान्त पढ़ मालुम हुआ कि उन २ देशों के पहले निवासी कहीं २ सर्वथा नष्ट हो गये कहीं २ नष्ट प्राय हो रहे हैं ; कदाचित् वही हाल हमारे देश और हमारी जाति का भी हो तो क्या आश्चर्य है कि नई सभ्यता का मारुपक पाय यहां के पुराने निवासियों का उच्छेद हो जाय यह प्लेग उसी का सहायक हो रहा है-

हिन्दीप्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै
बचि दुसह दुरजन बायुसों मणिदीप सम थिर नहि टरै ॥
सूझै बिबेक बिचार उन्नति कुमति सब यामें जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० २६ सं० १-२-३-४ } प्रयाग { जनवरी, फरवरी, मार्च, अप्रैल सन् १६०४ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार
पं० रघुनाथ सहांय पाठक के प्रबन्ध से
यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥≡)
समर्थों से मूल्य अग्रिम ३।=) ——०*०—— पीछे देने से ४।=)

पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द की जिल्द मै पोस्टेज १=)

——:००:——



हिन्दीप्रदीप

जि० २६ सं० १-२-३-४ | प्रयाग | जनवरी, फरवरी, मार्च, अप्रैल सन् १९०४ ई०

न इतके भये न उतके।

ज्यों त्यों राम राम कर पचीसवां वर्ष भी समाप्त हुआ छब्बीसवें में पाँव पसारने का आरंभ है-इतना समय बीत गया पर हम इत के भये न उत के-"कालो न यातो वयमेव याताः"-"इतो भ्रष्टस्ततो भ्रष्टः" हमें कुछ ऐसा हवन्नकपन सवार रहा कि हम ने अपना एक निरालाही ढंग रखना चाहा इस पर कभी ध्यानही न गया कि लोकैषणा भी तो कोई बात है ज़माना साज़ी के बिना कभी किसी को सरसब्ज़ी मिली है ? कहावत है-"रोटी खइये शक्कर से दुनिया ठगिये मक्कर से" हम ऐसे अभागे हुए कि हम से सो न बन पड़ा जिसका परिणाम यह हुआ

कि किसी समाज दल तथा गोष्ठीमें कदर पाने लायक न समझे गये न आगे कोई आशा है कि कभी समझे जांयगे—वल्कि अपना सब्ज़ कदम जहां ले गये वहीं से दुरदुराये गये—कारण जिसका यही हुआ कि बहुत कुछ लोभ और लालच दिखलाने पर भी हम अपनी स्वच्छन्द अनुमति प्रकाश करने से न हटे बरन धवलागिरि के ऊंचे कंगूरे से डटे खड़े रहे—जो न्याय और उचित समझ पड़ा उसी पर दृढ़ रहे; "न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः" भर्तृहरि के इस सिद्धान्त को अपना शिक्षा गुरु बराबर मानते आये—संसार में लोकैषणा एक बहु मूल्य रत्न है लोकैषणा प्रवीण जहां होंगे वहीं सर्व सम्मत हो सुख से जीवन पार करेंगे दुर्दैव बश वह हमें न आई टिरें में भूले हुए कहीं के न हुए॥

नये २ ऐक्ट पास होने से सब ओर से ऐसा जकड़ दिये गये हैं कि राजकीय बिषय पर मुंह खोलना और अपनी राय ज़ाहिर करना पद २ में शंका का स्थान हो गया कौन बैठे बैठाये बे मतलब की बलाय बेसाहै और कर्मचारियों के आंखों का कांटा बनै—रहा सामाजिक बिषय कि उसी का सुधार और संशोधन पर कुछ कह सुन कलम की खुजली दूर करैं सो उसमें भी शत्रु मुख मित्र बन हम अपनी हिन्दू समाज में गये और सनातन की पोल खोलने लगे तो वहां से ऐसा धकियाये गये कि अर्द्धचन्द्र के सिवाय कुछ हाथ न लगा नास्तिक बिधर्मी बिक्षिप्त आदि अनेक उपाधि अलबत्ता गांठ बंधी—चलते पुर्ज़े और काम करने वाले समझ आर्य समाजियों में जा पहुंचे यह ख्याल कर कि कोई २ बात इनकी हमारे अनुकूल है—आरंभ में निरी "पोलिटिकल बेसिस" पर यह समाज स्थापित की गई थी इसके प्रवर्तक की नस २ में देश की दुरवस्था का ख्याल भरा हुआ था; इन के साथ मिल काम करने से लोगों में आपस की हमदर्दी और मुल्की जोश बहुत जल्द पैदा हो सक्ता है सो वहां भी घास मास के झगड़े और खंडन मंडन की ऐसी गोलियां चल रही हैं कि एक क्षण भी वहाँ ठहरना कठिन हो गया—दूसरे आर्यसिद्धान्त स्वीकार करने का महा

घोर तअस्सुब ऐसा इनमें दामनगीर है कि जो दीन और दुनिया दोनो से हाथ धो बैठाता है; तो वहां भी हमारी पूछ न भई—फिर मन में आया चलें प्रचारिणी नाम धारिणी नई २ सभायें कमेटियां और क्लब चल पड़े हैं उनमें जा मिलें ये लोग नई उमंग के हैं कदाचित् वेही हम पर श्रद्धा बुद्धि रक्खें और हमें सहारा दें; तो वहाँ ऐसा स्वार्थ छाया हुआ है और वे सब ऐसे मत्सर ग्रस्त हैं कि वे हमें अपना चेलाही बनाने को मुस्तैद हैं—हमारे पुराने नंबरों से उधृत कर जो छापैंगे उसमें हमारा नाम तक न देंगे बहुधा तो इन्ही में ऐसे भी कर्म चाण्डाल हैं कि ३ बर्ष तक पत्र गटकते गये अन्त में हार मान वी. पी. भेजा तो वह भी लौट आया हम अपना सा मुह ले बैठ रहे; जिनका नाम प्रकाश करना हम अनुचित समझते हैं इसलिये कि शठ के प्रति शठ बन जाना हमें शोभा न देगा—अस्तु "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन" काम करने में हमें अधिकार है उस किये काम का यही फल मिले यह हमारे आधीन नहीं है इस भगद्वाक्य पर दृढ़ हो आगे बढ़ते हैं देखिये क्या परिणाम हो " उम्र की किश्ती हमारी देखिये किस घाट जाती है—रहैगी डूब के दरिया मे या उस पार लगती है" ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

देशत्व रक्षा का उपाय।

जिस जाति में देशानुराग का असर बना है वहां देशत्व गुण की कमी नहीं है और जिस देश के निवासियों में देशत्व गुण विद्यमान है वही देश वहां के रहने वालों के लिये सुख की सब सामग्रियों से भरा पुरा मानो स्वर्ग भूमि है—भारत के पुराने इतिहासों के पढ़ने से मालूम होता है कि यहाँ के लोगों में भी किसी समय देशत्व गुण विद्यमान था जिस गुण के रहते वे स्वतंत्रता देवी के कृपा पात्र हो सुख से जीवन बिताते थे—प्राचीन समय यद्यपि इन दिनों की

भांति वाह्य विज्ञान की उन्नति यहां नहीं भई थी तौभी इस समय के लोगों में आध्यात्मिक योग्यता इतनी चढ़ी बढ़ी थी जिससे देशानुराग की कमी उन में नहीं थी जिसके प्रेम में वे " दुर्लभं भारते जन्म" की गीत सदा गाते रहे—आज उसी गुण के अभाव से परम पवित्र यह भारत भूमि इस वर्त्तमान् दशा में यहां के उन्नतिशील थोड़े से लोगों को नेत्रशूल सी खटका करती है–देशानुराग शून्य यहां की वर्तमान् जनता की जो शोचनीय दशा हो रही है उसका उद्घाटन मानो पीसे हुये को फिर पीसना है किन्तु इस लेख से इस समय हमारा प्रयोजन देशत्व रक्षा का सरल तथा सुख साध्य उपाय का बतलाना या ढूंढना है ॥

हम को सन्देह है कि भारत के इस अस्तव्यस्त उच्छृंखल ज़माने में नक्कारखाने में तूती की आवाज़ की भांत हमारा कहना लोगों को कब रुचैगा वरन उनके कान तक पहुंचाना दुर्घट है–जब हम इस बात पर ध्यान देते हैं कि यहां के लोगों में देशत्व की मात्रा क्यों घट गई तब हम को इस देशानुराग की कुंजी यथार्थ विद्या का अभाव का होना मालूम पड़ता है—या तो ये लोग नई रोशनी से ऐसा चौंधियाय गये कि इनके आँख की बीनाईही जाती रही अथवा नई सभ्यता से इनको इतना कष्ट पहुंचा है कि जिस कष्ट से पीड़ित हो रातो दिन सिवाय अपनी चिन्ता के और कुछ इनके ध्यानही में नहीं आता–जिस देश में सभ्यता ने लोगों को केवल नौकरी करना सिखाया है वहां हम देशत्व की क्या आशा कर सक्ते हैं–धन हीन गरीबों को जाने दीजिये धन संपन्न भी नौकरी करना फेशन समझने लगे हैं–जिस देश में धर्म में कुछ गड़बड़ होने से महा कोलाहल मचता था आज वही देश बासियों की नौकरी में कुछ भी गड़बड़ होने से हलचल मच जाती है—रेलवे कानूफेरेन्स में देशियों को ३०) से अधिक की नौकरी की जगह देने की बात गवर्नर जेनरेल की कौंसिल तक पहुंच गई २००) मासिक से अधिक की नौकरी मिलने पर गवर्नमेंट आफ इंडिया की

मंज़ूरी की बात सुन देशवाले हाय नौकरी हाय नौकरी कह उछलने कूदने लगे-हा! प्रिय पाठको क्या यह वही आप का देश नहीं है जहां के निवासी "सेवा न किंचिदस्तीति" कह कर एक समय सेवावृत्ति को गर्हित समझ इसकी उपेक्षा किया करते थे-अवश्य यह सब भुगतमान जो हम भुगत रहे हैं शिक्षा की प्रणाली के बिगड़ जानेही से है-यह आप का वही भारतबर्ष है जहां अध्यापक अपने विद्यार्थियों को विद्या पढ़ाने के साथही साथ आत्म गौरव, कुलाचार, कुल धर्म, उद्योग, उत्साह, सुख पूर्वक निर्वाह आदि की नित्य शिक्षा देते थे अब इस समय क्या कोई बता सक्ता है कि वर्तमान् किसी विद्या मन्दिर में इन बातों की शिक्षा पढ़ने वाले को दी जाती हैं-स्कूल और कालेजों से ताज़े निकले नव युवकों से जिन्हों ने भारत की हिस्टरी को घोट कर पी डाला है पूछिये कि क्या हिन्दुओं में भी कभी कोई ऐसा धर्मनिष्ट उत्साही देशानुरागी हुआ है जिसने देश की रक्षा में अपने थोड़े से सहकारियों के साथ अपने प्राण समर्पण किये हैं तो दांत बाय के रह जांयगे और इस प्रश्न का उत्तर देते न बनैगा-मिशन स्कूल तथा आर्य समाज के पाठशालाओं में तो देव पितर तीर्थ आदि में श्रद्धा उपजाने वाली शिक्षा दीही नहीं जाती किन्तु हमारे लोगों में ऐसा कोई भी पाठशाला नहीं देखा जाता जिसमें हिन्दुओं की धर्म नीति अनुसार देशत्व संरक्षण की यथार्थ शिक्षा बालकों को दी जाती हो-इन दिनों की वर्तमान् शिक्षा का फल यह होता है कि देशत्व का अभाव दिन २ बढ़ता जाता है और क्यों ऐसा न हो जब बालकों को बाल्य अवस्था ही से उनके मन में बैठाया जाता है कि आर्य लोग वास्तव में यहां के असली पुराने बाशिन्दे न थे बरन कहीं बाहर से आय यहाँ बस गये थे-स्वदेशाभिमान को नष्ट कर देने की कैसी अच्छी युक्ति है पर यह युक्ति सर्वथा निर्मूल और भ्रान्त है-जिस जाति ने अपनी पूर्ण उन्नति के समय अपने किसी

ग्रन्थ में अपने पूर्व निवासस्थान का नाम तक न दिया वरन "दुर्लभं भारते जन्म" का राग गातेही रहे उस आर्य जाति को बाहर से आई मान क्योंकर जीती मक्खी निगल बैठें—पर हमारी इस बात को समझे ही गा कौन ? आर्य जाति के संस्कार द्वारा जो कुछ उनमें देश की सहानुभूति आई थी वह सब बाल्य अवस्थाही से सी-ए-टि कैट कैट माने बिल्ली— जी ओ डि-डाग डाग माने कुत्ता रटते २ थोथी पड़ गई—अब तो सिवाय कुत्ता बिल्ली के दूसरी बात उनके मस्तिष्क में घसती ही नहीं क्या किया जाय-अंगरेज़ी की भांति हम को फारसी उर्दू पढ़नेवालों की भी दुर्दशा देख पड़ती है; फारसी पढ़े लिखों में तहज़ीब और तकल्लुफ इतना समा जाता है कि अन्त को सर्व शून्यं शून्यं रह जाता है—मखतब में पढ़े हुये बालकों को यह नहीं मालूम कि रेखा गणित बीजगणित इतिहास किसका नाम है आदि से अन्त तक उन्हे गुल बुलबुल तेग अब्रू माशूक की नज़ाकत और उसके हुस्न का बयान पढ़ते २ उनकी इति श्री हो जाती है देशत्व की महक तक पास नहीं फटकने पाती—अस्तु अब मातृ भाषा संस्कृत पढ़नेवालों को लीजिये तो अंगरेज़ी फ़ारसी पढ़नेवालों को संसारिक सुखों का कुछ आभास भी मिल जाता है और सभ्य समाज में दाखिल हुये माने जाते हैं—टोल में पढ़े संस्कृत वालों की मिट्टी सब से ज़ियादह पलीत है कौमुदी की फक्किका और सूत्रों पर न्यास और खण्डन मण्डन घोखते २ विद्यार्थी को ३ जन्म चाहिये—हां इतना अभिमान इन विद्यार्थियों को अलबत्ता हो जाता है कि हिन्दी पढ़ने में वे अपनी वेइज़्ज़ती मानते हैं—श्लोक कहो एक घड़ी में कोड़ियों बना डालें पर हिन्दी में एक मामूली चिट्ठी लिखने को कम से कम दिन भर तो चाहिये उसमे भी महावरेदार शुद्ध हिन्दी न लिख सकेंगे—इस विद्वत्ता पर अभिमान और क्रोध इतना कि १० या १५ ऐसे पण्डित इकट्ठे हो जांय तो शान्ति रक्षा के लिये पुलिस की आवश्यकता पड़े—देश क्या है देशत्व क्या है इन

बातों से इन्हे प्रयोजनही क्या—जिस संस्कृत की स्तुति सबों ने एक स्वर से की है उन संस्कृत पाठियों की यह दशा और हिन्दुओं को संस्कृत की ओर इतनी उपेक्षा देख किस परिणामदर्शी का हृदय नहीं बिदीर्ण होता होगा-देशत्व की कुंजी शिक्षा की जब यह दशा है तो देशत्व रक्षा की आशा तो निरी दुराशा और खपुष्प के समान है ॥

रोग होने से उसके शमन के लिये लोग औषधियां ढूंढते हैं इस देश में इस महा व्याधि की औषधि खोज के निकालना परिणाम दर्शियों का कर्तव्यही नहीं बल्कि धर्म है तो एक ऐसे संस्कृत के विश्व विद्यालय की आवश्यकता है जिसमे पूर्व और पश्चिम को बहनेवाली दोनो नदियों का संगम हो और दोनों नदियां अपने अमोघ जल से यहां के लोगों को आप्लावित करती रहैं—ईश्वर की कृपा से अब यहां बहुत से ऐसे लोग हो गये हैं जो दोनो के अमृत रस को भरपूर अनुभव कर चुके हैं उनको उचित है कि दोनो के बीच कोई ऐसा रास्ता निकालें जिसमें न पूर्व की अधिक सीमा दबे न पश्चिम ही को कोई शिकायत का मौका रहे-पं० माधो प्रसाद मिश्र का स्वतंत्र देशोद्धारक उद्देश्य वास्तव में उत्साह बर्द्धक है उक्त पण्डित जी ज़बानी जमा खर्च करने वालों का अनुकरण न कर बंगालियों के पड़ोसी कलकत्ते के धनी माड़वारियों से इतने थोड़े समय में एक लाख रुपये का चन्दा बिशुद्धानन्द विद्यालय के निमित्त करा लेना सहज नहीं है; इसको देशत्व गुण कहते हैं उक्त पण्डित जी जिस गुण की मूर्ति हैं—काम करनेबालों को ऐसों का उदाहरण लेना चाहिये जो तभी हो सक्ता है जब निस्स्वार्थ भलाई के काम में तत्पर हो-जब तक किंचित् भी निज स्वार्थ की दुर्गन्धि लगी है ऐसे बड़े काम का पूरा होना असंभव है ॥

सच तो यों है कि आत्मसमर्पण Self Sacrifice और देशत्व का बड़ा घनिष्ट सम्बन्ध है बरन यों कहना चाहिये कि देशानुराग महा रत्न की आत्मत्याग खानि है—उत्तम शिक्षा धन संपत्ति बीरता उत्साह आदि की

कमी हम लोगों में इस गिरी दशा पर भी नहीं है अभाव केवल इसी का है कि हम अणुमात्र भी अपनी हानि सहना गवारा नहीं करते-बहुधा देखने में आता है कि अपने थोड़े से फायदे के लिये मुल्क का बहुत बड़ा नुकसान करा देना कोई ऐब या बुराई नहीं है जहां ऐसी समझ है वहां देशत्व रक्षा की चर्चा चलना भी मूर्खता है-ईश्वर कुछ ऐसी प्रेरणा करैं कि हम लोगों में ऐसे पुरुष रत्न पैदा हो जांय जिनमे देश का अनुराग परस्पर की सहानुभूति आत्मसमर्पण का अंकुर भली भांति प्रस्फुटित हो तब देशत्व रक्षा भी सब तरह पर संभव है किन्तु भारत के ऐसे दिन कहां जो ईश्वर की कृपा दृष्टि का पात्र हो और उन्नतिशाली देशों की गणना में अगुआ बनैं ॥

गीतासार समुच्चय ।

पहिले के आगे से ।

चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनो ऽर्जुन ।
आर्तो जिज्ञासु रर्थार्थी ज्ञानीच भरतर्षभ ॥

भगवान् कहते हैं सुकृती जन मुझे भजनेवाले ४ तरह के होते हैं-पहला आर्त्त; दूसरा जिज्ञासू; तीसरा अर्थार्थी; चौथा ज्ञानी-पहला भजनेवाला आर्त्त अर्थात् पीड़ित मनुष्य है-रोग दोष, आधि व्याधि, कुटुम्ब का बिछोहा, अपने प्रियतम की जुदाई, बध बन्धन आदि क्लेश जिनमें पड़ मनुष्य सब भूल जाता है; और किसी समय ज्ञान की गठरी लादे हुए ऐसे लेकचर झाड़ा करते हैं जिससे यही बोध होता है कि यावत् उपदेश और परमार्थ सब इनके पास गिरों है किन्तु दुःख और क्लेश की हलकी सी कसौटी में कसे जाने पर उनका सब ज्ञान और

परमार्थ न जानिये कहां बिलाय जाता है; धीरज छोड़ ऐसा भरे मुंह गिरते हैं कि एक महा मूर्ख और पामर भी इतना अधैर्य न होगा–कबीर ने भी कहा है "दुख में सुमिरन सब करैं सुख में करै न कोय। जो सुख में सुमिरन करै तो दुख काहे को होय" इसी से भगवान् कहते हैं आर्त्त मेरा भजन करता है—सच है दुख की दशा में धैर्य धरे सच्चे जी से एकाग्र मन हो जो उसका स्मरण करते हैं उनका दुख संभव है हट भी जाता है–ऐसे समय मन जैसा सरल और अकुटिल भाव संपन्न होता है उसे वही जानता होगा जिसे कभी ऐसा इत्तिफाक पड़ा है इसी से किसी ने कहा है "विपदः सन्तुनः शश्वत् यासु संकीर्तनं हरेः" दूसरा जिज्ञासू अर्थात् वह जो भगवद्विभूति के जानने की इच्छा रखता है; "जो ढून्दः आविन्दः" जो सच्चे जी से किसी वस्तु की खोज में लगा रहता है वह एक दिन अपने मकसद को पहुंच जाता है–तीसरा अर्थार्थी अर्थात् किसी बात की चाहना रखने वाला—मेरी समझ में इस तरह का भजन करने वाला सब से निकृष्ट है क्योंकि यह इसका उसे भजना निरा स्वार्थ मूलक है अस्तु फिर भी अच्छा ही है मक्खन का लड्डू उलटा सीधा किसी भांत पेट में जाने से गुनही करता है–चौथा ज्ञानी जिसको भगवान् ने सब से श्रेष्ठ कहा है जिसकी प्रशंसा में आगे कहते हैं–

तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते।
प्रियो हि ज्ञानिनो ऽत्यर्थमहं सच मम प्रियः॥

इन सबों में नित्य योगाभ्यास में रत मेरा अनन्य भक्त चारो से बढ़ कर है–ज्ञानी मुझे बड़ा प्रिय है और मैं उसे प्रिय हूं इस श्लोक में भी रूखे ज्ञान पर नहीं ज़ोर दिया बरन वही जो ज्ञाननिष्ट हो भक्ति का रसास्वाद किये हैं–ज्ञानवान् होकर भी जल्द भगवान् को नहीं पा जाता॥

वहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते ।
बासुदेवः सर्वमिति समहात्मा सुदुर्लभः ॥

बहुत जन्मों के उपरान्त ज्ञानवान् मुझे पाता है-जिसे यह सम्यक् बोध हो गया है कि बासुदेव मैं सब में व्याप्त हूं इस तरह का बोध वाला महात्मा तो बहुतही दुर्लभ है—कयामत के दिन रूहैं उठैंगी तब तक पड़ी २ सोती रहैंगी हज़ार ज्ञान के पीछे सिर धुना करै क्या होता है-धन्य इस अकिल को इसी भरोसे हिन्दुस्तान को पादरी साहबान रूहानी शिक्षा देने का दावा बांध रहे हैं—आगे कहते हैं-

कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञाना प्रपद्यन्ते ऽन्यदेवताः ।
तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियता स्वया ॥

अपनी तामसी राजसी सात्विकी प्रकृति से बंधे हुये (क्यों उनका ऐसा स्वभाव पड़ जाता है सो पूर्व जन्म के संस्कार से होता है उसी प्राक्तन संस्कार की डोर में बंध) तीन २ अपनी सात्विकी राजसी तामसी कामनाओं से जिनका विवेक और विचार शक्ति नष्ट हो गई है ज्ञान का आधार सच्चिदानन्द परमेश्वर की उपासना से बहिर्मुख हो भूत प्रेत पिशाच डाकिनी शाकिनी आदि तामसी राजसी स्वभाव वाले देवताओं को मानते पूजते हैं-अस्तु जो कुछ श्रद्धा के साथ करते हो भगवान् कहते हैं मैं उनकी श्रद्धा के अनुसार उसी देवता के रूप में परिणत हो उन्हें वैसा फल देता हूं "मान न मान मैं तेरा महमान" ईश्वर के अस्तित्व से इनकार न कर किसी तरह श्रद्धा बुद्धि रख उस पर विश्वास Faith हो और आस्तिकों की कोटि में आ गया हो तब तो वह मानो हमारे पन्थ में आ गया-ख्रीष्ट धर्म में बुतपरस्ती न करो ईश्वर की १० आज्ञाओं में से एक है और बुत पूजना पाप ठहराया गया है सो क्योंकर संगत हो सक्ता है-चित्त इस बात को

स्वीकार नहीं करता कि जब वह श्रद्धा के साथ ईश्वर की ओर प्रवण चित्त है तो पाप कैसे हुआ—इसी को आगे के श्लोक में कहते हैं—

यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति।
तस्या तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम्॥
स तया श्रद्धयायुक्त स्तस्याराधनमीहते।
लभते च ततः कामान् मयैव विहितान् हितान्॥

जो जो मनुष्य जिस २ मेरे रूप को अपनी श्रद्धा के अनुसार कायम कर उसी मेरे रूप को पूजते हैं उन २ मनुष्यों की श्रद्धा और अचल विश्वास मैं उसी में दृढ़ करता हूं "तदेवाग्निस्तत्सूर्यस्तदु चन्द्रमा" "यस्यादित्यः शरीरम्" इत्यादि श्रुतियों में सर्वदेव मय वही कहा गया है "सर्वदेव नमस्कारं केशवं प्रतिगच्छति" केवल अकुटिल अन्तःकरण रख सीधे सरल भाव से श्रद्धा और विश्वास मुख्य है—वह मनुष्य उसी अपनी सरल भाव की श्रद्धा से युक्त हो उस अपने इष्टदेव की आराधना करना चाहता है और उसी आराधना से हमी करके नियमित अपनी कामनाओं को पा जाता है—अन्तर केवल इतनाही है कि संसार में फसे हुये अल्प बुद्धि वालों को जो उस आराधना का फल मिलता है वह नाशवान् है थोड़े समय के लिये रहता है—इन्द्र आदि देव को पूजने वाले स्वर्ग आदि लोक में प्राप्त हो वहां से फिर च्युत होते हैं किन्तु मेरे सच्चे भक्त मुझी को प्राप्त हो चिरस्थायी लोक में जाय सायुज्य सारूप्य आदि ४ प्रकार की मुक्ति में किसी एक के अधिकारी होते हैं—

अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम्।
देवान् देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि॥

स्थूल बुद्धिवालों के लिये ऊपर कही इस तरह की उपासना है—

अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः।
परं भाव माजनन्तो ममाव्ययमनुत्तमम् ॥

स्थूल बुद्धिवाले, जिन्हे इतना ज्ञान नहीं है कि मुझे नित्य और अविनाशी सर्वश्रेष्ट सर्वोत्तम समझ सकें सबमें व्याप्त मैं हूं फिर भी मेरी एक मूर्त्ति कायम कर मुझे पूजते हैं इसी से कहा है-"प्रतिमास्व स्थूलबुद्धीनाम्" स्थूल बुद्धियों के न जानने का कारण क्या है सो आगे कहते हैं-

नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमाया समावृतः।
मूढ़ोयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम् ॥

योगमाया से आच्छादित मैं सब को नहीं दीखता इसीसे मूर्ख मनुष्य अजन्मा अविनाशी मुझे नहीं जानते-

वेदाहं समतीतानि वर्तमानानि चार्जुन।
भविष्याणि च भूतानि मां तु वेद न कश्चन ॥

भूत भविष्य वर्तमान् जो हुये हैं; हैं; और होंगे मैं सब को जानता हूं पर मुझे कोई नहीं जानता-

इच्छाद्वेष समुत्थेन द्वन्द्वमोहेन भारत।
सर्वभूतानि संमोहं सर्गे यान्ति परन्तप ॥

इच्छा और द्वेष से उत्पन्न भये सुख दुख लाभ अलाभ आदि द्वन्द्व से मोहित प्राणी मात्र संसार में मोह को प्राप्त होते हैं-किनको यह मोंह नहीं व्यापता सो आगे कहते हैं-

येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम्।
ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता भजन्ते मां दृढव्रताः ॥

जिस सुकृतीजन पुण्य का काम करनेवाले का पाप नाश होजाने से अन्तः करण विमल होगया है वह द्वन्द्वातीत होजाता है अर्थात् सुख दुःख उसे नहीं व्यापता और दृढव्रत हो मुझे भजता है—

जरामरणमोक्षाय मामाश्रित्य यतान्ति ये ।
ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्नमध्यात्मं कर्म चाखिलम् ॥

जो मेरे आश्रित होके जरा और मरण के दुःख से छुटने के लिये यत्न करते हैं वे उस ब्रह्म को और समस्त आध्यात्मिक कर्म को अच्छी तरह जानते हैं—अधिदैव अधिभूत और अधियज्ञ सहित जो मुझे जानते हैं वे प्राण विछोह के समय में भी मुझे जानते रहते हैं—गीता के अनुसार मनुष्य का अन्त का समय उसके भले या बुरे होने की बड़ी कसौटी है—जो अच्छे सरल चित्त के सीधे लोग हैं वे जाकन्दनी का बहुत कष्ट मरती समय नहीं भोगते—जो दुष्ट और कुटिल होते हैं उनका प्राण बड़ी कठिनाई से निकलता है और बड़ा कष्ट भोगते हैं—अधिभूत अधियज्ञ क्या है सो आगे के अध्याय में कहैंगे—शेष

पत्नीस्तव ॥

हे महाराणी पत्नी तुम्हें नमस्कार है—तुम संसार का बन्धन महा जगद्वाल की मूलाधार हो—एक बार विवाह कर तुम्हारे जाल में फस जाना चाहिये फिर क्या सामर्थि कि इस छंदान को तोड़ कोई कहीं भाग सके—यह तुम्हारी ही कृपा है कि आदमी एक जोरू कर खुद संसार भर की जोरू आप बनता है—अति अल्प वय दसही बारह वर्ष की उमर में तुम्हारे जाल में फँस जाने से हिन्दू जाति की कमज़ोरी हीन बल क्षीण वीर्य हीन सत्व होजाने का तुम्ही मुख्य कारण हो—हम लोग अल्प बुद्धिवाले किस गिनती में हैं त्रिकालज्ञ पाणिनि ऐसे महर्षियोंने भी तुम्हारी कदर की है "पत्युर्नो यज्ञ संयोगे" पति शब्द को नुक् का आगम हो यज्ञ के संयोग में—तात्पर्य यह कि धर्म

शास्त्र में " पत्न्या सहाधिकारात् " के आधार पर यज्ञ दान आदि बड़े २ धर्म के कामों में तुम्हे अपने संग लै तभी पुरुष को उन २ धर्म के कृत्यों का अधिकार है-शास्त्रवालोंने तुम्हारा महत्व और गौरव यहां तक माना है कि " अनाश्रमी न तिष्ठेत् " विना गृहस्थ हुये न रहै ऐसा लिख गये हैं जो इस कारण संयुक्तिक भी मालूम होता है- कहा है " ऋणानि त्रीण्ययाकृत्य मनो मोक्षे निवेशयेत् " विद्या पढ़; पुत्र पैदा कर, बड़े २ यज्ञ और दान के ऊपरान्त तब मनको मोक्ष में लगावै अर्थात् संन्यास ग्रहण करै-ऐसा न होता तो कितने ऐसे सभ्य समाज के सिरमौर संशोधन और देश हित का बीड़ा उठाये महा महन्त माननीय मान्यवर क्यों सदैव पत्नी २ रटते; उनके बद्धांजलि वशंवद रहते और बिना उनकी आज्ञा के एक कदम आगे पांव न रखते-तस्मात् हे पत्नि लोक और वेद दोनो तुम्हारी नमस्या और अंपचिति में सावधान और प्रवण हैं-हे पत्नि तुम्हारे कोमल अङ्ग सौष्टव का संपर्क; तुम्हारे अधरामृत का पान, बाचाख कोकिला लाप कुहू नाद को तिरस्कार करने वाला तुम्हारे कोकिल कण्ठ निर्गत शब्दों को जिसने अपने कानों का अतिथि न किया उस लंडूरे का जीवनही क्या-करण रसायन द्व्यक्षरात्मक पत्नी शब्द सुन और तुम्हारा मोहनी रूप देख कौन ऐसा युवक है जो आप्यायित हो आनन्द निर्भर नहो जाता हो--हे आदि रस की अधिष्ठात्री शूर वीर साहब लोग मुल्क के इन्तिज़ाम की चतुराई में कहीं से नहीं चूकते पर तुम्हारे समस्त नाज़ नखरों पर अपना अधिकार जमाना तो दूर रहा एक साधारण गौन के इन्तिज़ाम में उनकी सब भूल जाती है; छोट-भइये औसत दर्जे की तनखाह पाने पर भी सदा कर्ज़दार बने रहते हैं--जिस घर में तुम अपना सौम्य रूप धारण किये हो वहां समग्र संपत्ति हंस रही है जहां तुम्हारा विकट भयंकर प्रचण्ड और उद्दण्ड रूप घर के एक २ प्राणी को बिकल किये है वहां दरिद्र का बास रुदन और क्रन्दन का सहकारी हो हाहाकार मचाये हुये है--सेवा करने

में दासी; एकान्त में सलाह देनेवाली मित्र; घर गृहस्थी की बातों में उपदेश देनेवाली गुरु; पति भक्ता पति प्राणापत्नी उन्ही को मिलती है जिन्होने किसी पुण्य तीर्थ में अच्छी तपस्या कर रक्खा है—गजगामिनी जिसकी चाल के आगे हंसों को अपनी चाल का घमण्ड चला जाता है; जिस पिक बैनी की बचन माधुरी सुन कोकिला लज्जित हो मौन व्रत धारण कर लेती है; जिसके नवनीत कोमल अंगों के साथ होड़ होने में चमेली की कोमलता पत्थर सी कड़ी मालूम होती है; शोभा और सौन्दर्य की अधिष्ठात्री लक्ष्मी जिसके लावण्य जलधि की लहरी में अचम्भे में आय गोता खाने लगती हैं "एका नारी सुन्दरी वा दरी वा" भर्तृ हरि की इस उक्ति ऐसी ही सह धर्मिणी के मिलने से सुघटित होती है—इत्यादि इस पत्नी के गुणार्णव को कहां तक पल्लवित करते जांय इसकी फल स्तुति में विश्वगुणादर्श का यह श्लोक उपयुक्त मालूम होता है ।।

व्यापारान्तरमुत्सृज्य वीक्षमाणो वधूमुखम् ।
यो गृहेष्वेव निद्राति दरिद्राति स दुर्मतिः ॥

सब काम काज छोड़ जो वनिता भक्त पत्नी के मुख की छवि निरखता हुआ घर में सोया करता है वह मूर्ख अवश्यमेव दरिद्र का दास बन जाता है ॥

प्राचीन ग्रन्थकारों का संक्षिप्त विवरण ॥

कैय्यट (१)

ये महा भाष्य प्रदीप के रचयिता हैं । सुनने में आता है कि ये काव्य प्रकाश कार मम्मट के कनिष्ठ भाई हैं और उबट भी इनके एक भाई थे । महा भाष्य प्रदीप में लिखा है 'कैयटो जैयटात्मजः' अर्थात्

जैयट के पुत्र कैयट थे। येही जैयट मम्मट के पिता हैं। जैयट, कैयट, वज्रट, उबट, उद्भट, रुद्रट, धम्मट, मम्मट, कल्लट, भल्लट, अम्रट, लोल्लट, कल्हण, बिल्हण और शिल्हण ये सब नाम उस समय कश्मीरियोंही के धरे जाते थे जिस्से ये कश्मीर निवासी जान पड़ते हैं। कश्मीर में कैयट के विषय में जो कथानक प्रचलित है उसे पीटर्सन साहिब ने सुभाषितावली की भूमिका में उठाया है कि कैयट ने बड़े परिश्रम पूर्वक पतञ्जलि के महाभाष्य को पढ़ा और उनका अभ्यास महाभाष्य में यहां तक बढ़ गया कि विद्यार्थियों को कण्ठाग्र समग्र-भाष्य पढ़ा सकते थे। भाष्य के जिन स्थानों को वररुचि ने ठीक २ न समझने के कारण छोड़ दिया था वे भी कैयट को स्पष्ट होगये थे। कुछ लोग कहते थे कि जब कृष्णभट्ट दक्षिण देश से इनका दर्शन करने आये तो इनको हाथ के किसी परिश्रमी कार्य में (कुल्हाड़ी आदि से लकड़ी चीरने इत्यादि में) लगे हुये भी विद्यार्थियों को पाठ पढ़ाते देख बड़ा अचरज माना। कृष्णभट्ट ने कश्मीर के राजा से कैयट को कुछ भूमि और अन्न दक्षिणा दिलानी चाही पर कैयट ने राजा का धन लेना स्वीकार न किया। पीछे से कैयट काशी आये जहां शास्त्रार्थ में उनने कई एक पण्डितों को हराया और भाष्यप्रदीप बनाया। कैयट पामपुर के निवासी थे। यदि ऊपरोक्त कथानक सत्य है तो कैयट अजिता पीड़ से (जिसने कि पामपुर बसाया और सन् ८४४ ई० से ८४९ ई० तक कश्मीर के राजा रहे) पीछे हुये होंगे। कुछ लोगों का मत है कि कैयट १३ वीं सदी से प्राचीन नहीं है और सायणमाधव के पूर्व का कोई लेखक उनका उल्लेख नहीं करता है। मेरी समझ में तो मम्मट उव्वट के भाई होने के कारण कैयट का समय ग्यारहवीं सदी का पिछला भाग ठीक जंचता है॥

कैय्यट (२)

ये भी कश्मीर के निवासी जान पड़ते हैं। इनने सन् ९७७ ई० में आनन्द वर्द्धन के रचित देवी शतक की टीका लिखी है। इनके पिता

का नाम चन्द्रादित्य और पितामह का नाम वल्लभदेव था। ये कवि राजा भीमगुप्त के समय में जीवित थे॥

कल्याणवर्मा।

ये एक प्रसिद्ध ज्योतिषी थे। इनका बनाया सारावली नाम का एक ज्योतिष का ग्रन्थ है जिससे विदित होता है कि ये बराह मिहिर से पीछे उत्पन्न हुये होंगे। ये देव ग्राम निवासी बघेल क्षत्रिय रहे होंगे। ब्रह्मगुप्त के ग्रन्थ में इनका नाम मिलता है अतएव ये ब्रह्मगुप्त के समकालीन वा उनसे कुछ पूर्व विद्यमान रहे होंगे। श्री पण्डित सुधाकर द्विवेदी जी के मतानुसार इनका समय सन् ५७८ ई० अनुमान होता है। निदान इनके जन्म काल में बराह मिहिर जीवित थे॥

कविराज।

ये प्रसिद्ध कवि 'राघव पाण्डवीय' नामक श्लेष युक्त काव्य के रचयिता हैं। इनकी गणना सुबन्धु और बाणभट्ट के साथ बहुधा की जाती है। निज रचित ग्रन्थ में ये अपने को जयन्तीपुर (जो आसाम में है) के राजा कामदेव के सभासद बतलाते हैं। यह राजा सन् ११८१ ई० में वर्त्तमान था। 'राघव पाण्डवीय' में मुञ्ज नाम राजा का उल्लेख मिलता है जिससे विदित होता है कि मालवा के राजा भोज के पितृव्य मुञ्ज की अपेक्षा यह कवि अर्वाचीन हैं। एक ऐसा श्लोक भी सुनने में आता है जिसके द्वारा कविराज, उमापतिधर, जयदेव आदि कवि एक समय के जान पड़ते हैं। वह श्लोक यथा—

गोवर्द्धनश्च शरणो जयदेव उमापतिः।
कविराजश्च रत्नानि समितौ लक्ष्मणस्य च॥

यह लक्ष्मण सेन बङ्गाल का सेनबंशी राजा है और सन् १११६ ई० में विद्यमान था। सो कविराज का समय खीष्टीय १२ वीं सदी अनु-

मान किया जा सकता है। कुछ लोग समझते हैं कि कविराज केवल उपाधि है नाम और कुछ होगा। जो कुछ हो इनका उल्लेख कविराज छोड़ और किसी नाम से नहीं मिलता। पद्यावली में कविराज का बनाया एक श्लोक उठाया गया है। राघव पाण्डवीय के निम्न लिखित श्लोक से भी जान पड़ता है कि कवि का नाम कविराजही था। श्लोक यथा—

सुबन्धुर्बाणभट्टश्च कविराज इति त्रयः।
वक्रोक्तिभङ्गि निपुणाश्चतुर्थो विद्यते नवा॥

एक श्लोक श्लेषात्मक लिखना कठिन है नकि १३ सर्ग राघव पाण्डवीय इनका रचित है जिसमें एकही श्लोक में रामायण और भारत दोनो की कथा एक साथ निबाहा है जैसा कविने अपने ग्रन्थ में लिखा है—

पदमेक मपिश्लिष्टं वक्तुं भूयान् परिश्रमः।
कथाद्वयैक्यनिर्वोढुः किंधरापतितो ऽधिकम्॥

जि०-१९ सं-५-६-७ में कविराज की जीवनी लिखी जा चुकी है—

कात्यायन।

लोग इन्हें वररुचि भी कहते हैं पर ये वररुचि उनसे बिलकुल भिन्न हैं जो राजा विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नों में से थे। कात्यायन वैदिक मुनि हैं और पाणिनि के लगभग समकालीन भी थे। इनके रचित ग्रन्थों के नाम वाजीसूत्र, क्रमप्रदीप, पाणिनीय व्याकरण पर वार्तिक और प्राकृत व्याकरण आदि हैं। कथा सरित्सागर में लिखा है कि 'कात्यायन बचपनही से अति अद्भुत बुद्धिमान् थे। वे नाटय-शाला में किसी नाटक का खेल देखते तो उसे अपनी माता के निकट आके समग्र आद्योपान्त कह दे सकते थे और जनेऊ होने के पहिलेही व्याड़ि आदि मुनियों से सुने प्रातिशाख्य को कण्ठाग्र कह जा सकते थे। ये वर्ष मुनि के शिष्य थे और वेद वेदाङ्ग में ऐसे निपुण थे कि पाणिनि भी इनकी समानता न कर सके पर महादेव जी की सहायता

से पाणिनि ने इन्हे जीता । ये राजा नन्द के मन्त्री थे राजा नन्द पाटली पुत्र के राजा चन्द्रगुप्त के पिता हैं । चन्द्रगुप्त का राज्य काल सन् ई० के पूर्व चौथी शताब्दी में स्थिर होता है अतएव खीष्टीय चौथी शताब्दी वा उसके भी कुछ पूर्व कात्यायन का समय हो सकता है । रमेशचन्द्रदत्त के मतानुसार पाणिनि का समय खीष्ट से ८८० वर्ष पूर्व जान पड़ता है उनके अनुमान से कात्यायन पाणिनि के सम-कालीन होने के कारण खीष्ट से पूर्व नवीं सदी में रहे होंगे । डाकृर भाण्डार कर कात्यायन का समय खीष्टीय सन् से पूर्व चौथी सदी के पूर्वार्द्ध में रखते हैं । कात्यायन का जन्म कौशाम्बी में हुआ इनके पिता का नाम सोमदत्त था । वेद की सर्वानुक्रमणी भी इन्ही कात्यायन मुनि की बनाई है । महाराज नन्द के समकालीन और उनके मन्त्री मानने से कात्यायन मुनि का समय खीष्ट के पूर्व ३१५ वर्ष से (जब कि चन्द्र-गुप्त राज्य पर बैठा) भी पहिले स्थिर होता है ॥

कामन्दक।

इनका बनाया कामन्दकीय नीतिसार नामक एक ग्रन्थ है जिसमें इनने चाणक्य का नामोल्लेख किया है इससे निश्चय होता है कि ये चाणक्य की अपेक्षा अर्वाचीन हैं । चाणक्य वही है जिसने मगध के राजा नन्द का विनाश कर चन्द्रगुप्त को पाटलि पुत्र के राजसिंहासन पर बैठाया और इसी के द्वारा मौर्यवंश की जड़ जमी । निदान चाणक्य का समय खीष्ट से ३१५ वर्ष पूर्व निर्णय होता है अतएव का-मन्दक को उनसे थोड़ा पीछे वा खीष्ट से पूर्व चौथी सदी के पिछले भाग में मान सकते हैं क्योंकि लोग कामन्दक की गणना प्राचीन शास्त्र-कारों में करते हैं ॥

कालिदास (१)

राजशेखर कवि के समय तक तीन कालिदास प्रसिद्ध हो चुके थे जिनमें से रघुवंश, कुमार सम्भव, मेघदूत, ऋतुसंहार, विक्रमोर्वशी,

अभिज्ञान शकुन्तला आदि के रचयिता पहिले कालिदास रहे होंगे। सन् ६३७ ई० में लिखे गये शिलालेख में भारवि के साथ कालिदास का नाम प्रसिद्ध कवियों में मिलता है। येही कालिदास राजा विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नों में से एक रहे होंगे। सन् ५८८ ई० के महा नामन् वाले बौद्ध गया के लेख में रघुवंश के श्लोक से मिलता एक श्लोक पाया गया है अतएव बहुत सम्भव है कि कालिदास का रघुवंश सन् ५८८ ई० से पूर्व में बना हो। कीलहार्न का मत है कि ऋतु संहार के रचयिता कालिदास सन् ४७२ ई० से नवीन नहीं हो सकते क्योंकि ऋतु संहार का एक श्लोक कुमार गुप्तवाले मन्दासोर के शिलालेख से बहुत मिलता है॥

कालिदास (२)

सुनने में आता है कि भवभूति अपने उत्तर चरित को कालिदास को दिखलाने लेगये। उस ग्रन्थ को देख कालिदास अति प्रसन्न हुये पर उनने भवभूति से 'अविदित गतयामा रात्रिरेवं व्यरंसीत' के एवं के स्थान में एव करवा दिया। यदि यह कथानक सत्य हो तो भवभूति के समकालीन ये कालिदास रहे होंगे। शिशुपाल बध के रचयिता माघ कवि भी लग भग इसी समय में रहे होंगे। संभव जान पड़ता है कि इन कालिदास और माघ ने मिल के कोई काव्य बनाया है। मालविकाग्निमित्र नाटक और श्रुतबोध कदाचित् इन्हीं कालिदास का बनाया हो। ये शृङ्गार रस लिखने में बड़े निपुण जान पड़ते हैं। इनका समय सन् ७४८ ई० के लगभग रहा होगा॥

कालिदास (३)

ये राजा भोज के सभासद रहे होंगे और जो बहुतेरे किस्से भोज और कालिदास के सुनने में आते हैं वे सब इन्हीं से सम्बंद्ध होंगे। राजा भोज धारा नगरी के निवासी मालवाधिपति थे और उनका समय

लोग सन् ९९६ ई० से लेके सन् १०५१ ई० तक मानते हैं। अतएव ये कालिदास भी ११ वीं सदी के पूर्वार्द्ध में माने जा सकते हैं॥

कालिदास के विषय में बड़े २ शास्त्रार्थ मच चुके हैं अतएव उनके विषय में और कुछ लिखना निरर्थक जान पड़ता है। जान पड़ता है उपरोक्त इन्हीं तीनों कालिदासों का स्मरण राज शेखर को रहा होगा। विद्धशालभञ्जिका, बाल रामायण आदि के रचयिता राजशेखर ये नहीं हैं जिनने कि तीन कालिदासों का उल्लेख किया है विद्धशालभञ्जिका वाले राज शेखर का समय सन् ७६१ ई० है और दूसरे का समय लोग १४ वीं सदी बताते हैं निदान भोज के समकालीन कालिदास का उल्लेख इन्हीं दूसरे राजशेखर से सम्मत है॥

कुमारिल भट्ट।

ये प्रसिद्ध मीमांसक दक्षिण देश में उत्पन्न हुये थे। बर्नैल साहिब के मतानुसार इनका समय सन् ६५० ई० से ७०० ई० तक होता है। पर के. टी. तैलङ्ग ने युक्ति पूर्वक इसके खण्डन की चेष्टा की है और सिद्ध करना चाहा है कि कुमारिलभट्ट और भगवत्पाद शङ्कराचार्य ये दोनो खीष्टीय छठीं सदी के उत्तरार्द्ध में विद्यमान रहे होंगे। यदि इनका अनुमान ठीक हो तो शङ्कराचार्य का जन्म सन् ७४८ ई० में हुआ केरलोत्पत्ति की यह बात अशुद्ध वा सन्दिग्ध हो जाती है। कुमारिल ने तन्त्र वार्त्तिक रचा॥

कुल्लूकभट्ट।

ये विख्यात स्मृति शास्त्र वेत्ता हैं। मनुस्मृति की टीका के प्रारम्भ में ये अपना परिचय इस भांत से देते हैं—

गौड़े नन्दन वासिनाम्नि सुजनैर्वन्द्ये वरेन्द्र्यां कुले।
श्रीमद्भट्ट दिवाकरस्य तनयः कुल्लूक भट्टोऽभवत्॥

काश्यामुत्तर वाहिजह्नुतनया तीरे समं पण्डितै ।
स्तेनेयं क्रियते हिताय विदुषां मन्वर्थ मुक्तावली ॥

अर्थात् गौड़ देश में सज्जनों से मान्य नन्दन वासी नामक जो बारेन्द्र श्रेणी के ब्राह्मणों का कुल है उसमें श्रीमान् भट्ट दिवाकर उत्पन्न हुये । इन भट्ट दिवाकर के पुत्र का नाम कुल्लूक भट्ट है जिसने पण्डितों के साथ काशी में जहां कि गङ्गा नदी उत्तर की ओर बहती हैं निवास कर विद्वज्जनों के उपयोग के लिये यह मन्वर्थ मुक्तावली बनाई ॥

विश्वकोष नाम अभिधान ग्रन्थ में उदयनाचार्य भादुड़ी को ख्रीष्टीय १४ वीं शताब्दी में वर्त्तमान और कुल्लूकभट्ट का समसामयिक भी लिखा है । प्रसिद्ध स्मृतिशास्त्रवेत्ता कुल्लूक भट्ट के भाई का नाम श्रीयुक्त त्रैलोक्यनाथ भट्टाचार्य ने पुरुसोत्तम वेदान्त वागीश बतलाया है । भट्टाचार्य महाशय कहते हैं कि पुरुसोत्तम वेदान्त बागीश की १० वीं पीढ़ी में राजा कंस नारायण हुए । ये राजा कंस नारायण ख्रीष्टीय १६ वीं शताब्दी के बिचले भाग में राजशाही ज़िले में प्रकट हुए थे । यदि एक २ पीढ़ी के लिये २५ वर्ष का समय रक्खा जावे तो बहुत संभव जान पड़ता है कि ख्रीष्टीय १४ वीं शताब्दी में कुल्लूक भट्ट रहे हों। निदान इस प्रकरण में विश्वकोष का प्रमाण मान लेने से कुल्लूक भट्ट का समय ख्रीष्टीय १४ वीं शताब्दी ही निर्णीत होता है ॥

कृष्ण मिश्र ।

प्रबोध चन्द्रोदय नाम नाटक इन्हीं का बनाया हुआ है । उस नाटक से विदित होता है कि चन्देल राजा कीर्त्तिवर्मा ने चेदि के कर्ण देव को युद्ध में हराया । बनारस में इस राजा कर्ण के नाम के लेख ताम्र पत्र पर खुदे मिलते हैं । जिसका समय कि सन् १०४२ ई० मिलता है । हेमचन्द्र और विल्हण के ग्रन्थों से यह विदित होता है कि और २ राजाओं ने भी इसे पराजित किया है । कर्णदेव को पराजित करने

हारे राजा कीर्त्तिवर्मदेव सन् १०५० ई० से ११९६ ई० तक विद्यमान थे। और उन्हीं के सभासद होने के कारण कृष्णमिश्र का समय भी ११ वीं सदी का अन्तिम भाग माना जा सकता है॥

क्षपणक।

महाराज विक्रमादित्य जी की सभा में जो नवरत्न थे उनमें ये द्वितीय हैं। नाम से विदित होता है कि ये भी अमर सिंह की नाईं बौद्ध वा जैन रहे होंगे। इनके बनाये किसी ग्रन्थ का नाम सुनने में नहीं आया पर काव्य संग्रह में जो नव रत्न के श्लोक उठाये गये हैं उनमें से निम्न लिखित श्लोक क्षपणक विरचित है—

नीतिर्भूमिभुजां नतिर्गुणवतां ह्रीरङ्गनानां रतिः।
दम्पत्योः शिशवो गृहस्य कविताबुद्धेः प्रसादोगिराम्॥
लावण्यं वपुषः श्रुतिः सुमनसां शान्तिर्द्विजस्य क्षमा।
शक्तस्य द्रविणं गृहाश्रमवतां शीलं सतां मण्डनम्॥

अर्थात् राजाओं को नीति, गुणियों को नम्रता, स्त्रियों को लज्जा, दम्पति का विलास, घर के बाल बच्चे, बुद्धि की कविता, बचन की मिठाई, देह की सुन्दरता, सज्जन का वेद ज्ञान, ब्राह्मण को शांति, सामर्थवान् को क्षमा, गृहस्थों का धन वैभव और सज्जनों का शील भूषण अर्थात् शोभा बढ़ानेवाला गहना है॥

इस एकही श्लोक से क्षपणक की कविता शक्ति भली भांति जान पड़ती है। विक्रम के सभा रत्न होने से इनका काल वही खीष्टीय छठीं सदी का मध्यभाग निर्णीत होता है॥

क्षीरस्वामी।

ये कश्मीर के महाराज जयापीड़ के राज्य काल में विद्यमान थे। राजतरङ्गणी में जयापीड़ का राज्यकाल ७८० शाके अर्थात् सन् ७७९ ई०

से ले के सन् ८१३ ई० तक दिया है और यह भी लिखा है कि क्षीरस्वामी राजा जयापीड़ के गुरु थे। क्षीरस्वामी ने अमरकोष पर टीका लिखी है और भी धातु पाठ तथा पाणिनि व्याकरण से सम्बन्ध रखने वाले कई एक ग्रन्थ इनने लिखे हैं। कुट्टिनीमतम् के रचयिता दामोदर गुप्त और अलङ्कार शास्त्र बनाने हारे भट्टोद्भट इनके समकालीन थे॥

क्षेमेन्द्र।

ये कश्मीर निवासी एक प्रसिद्ध कवि हैं। पीटर्सन साहिब लिखते हैं कि सन् १०५० ई० में राजा अनन्त के राज्यकाल में क्षेमेन्द्र ने समयमातृका बनाई और बुलर साहिब के मतानुसार क्षेमेन्द्र का विद्या संबन्धी जीवन सन् १०२५ ई० से सन् १०७५ ई० तक रहा होगा। निदान इनका समय ११ वीं सदी ही जान पड़ता है इनके बनाये २८ ग्रन्थ हैं जिनमें कई एक ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं उनमें से औचित्य विचार चर्चा, कलाविलास, दर्पदलन कविकण्ठाभरण, चतुर्वर्गसंग्रह, चारुचर्या, वृहत्कथामञ्जरी, भारतमञ्जरी, समयमातृका और सुवृत्ततिलक बहुत प्रसिद्ध हैं॥

इनके ग्रन्थों के पाठ से विदित होता है कि ये विलक्षण कवि और व्यवहार में बड़े कुशल थे। इनके ग्रन्थों में कायस्थों और मुसल्मानों की बड़ी निन्दा है। समयमातृका ग्रन्थ का विषय दामोदरगुप्त के कुट्टिनीमत सरीखा है कदाचित् उसी के परते पर लिखा गया है—एक ग्रन्थ इनका अवदान कल्पलता है जिसमें बौद्धों में जो महात्मा महापुरुष हुये हैं उनका हाल दिया गया है संस्कृत इसकी बड़ी स्वच्छ प्रसाद गुण विशिष्ट और उपदेशात्मक है—यह ग्रन्थपाली अक्षरों में तिब्बत में था कलकत्ते की एशियाटिक सोसाइटी ने इसे पाली और संस्कृत दोनो अक्षरों में छाप दिया—१७ वीं जिल्द में क्षेमेन्द्र का स्तृत हाल दिया गया है—

हरिमङ्गलमिश्र।

छोटे लाट की कौंसिल ॥

"प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रैव यान्त्यापदः" सन् १८६१ और १८९२ के ऐक्टों के अनुसार प्रत्येक प्रान्त की व्यवस्थापक सभा को अपने २ प्रान्तों से सम्बन्ध रखनेवाले काइदे तथा आईन बनाने का अधिकार प्राप्त है–उस सभा के सभापति उन २ प्रान्तों के सब से ऊंचे दर्जे के राज कर्मचारी गवर्नर या लफटिनेंट गवर्नर हैं और इसके मेम्बर ओफीशियल और नान ओफीशियल दो तरह के होते हैं–ओफीशियल वे हैं जो गवर्नमेंट के कर्मचारी हैं और जिनको गवर्नमेंट ही चुनती है और नियत करती है–नान् ओफीशियल उन २ प्रान्तों की प्रजा के द्वारा चुने जाकर गवर्नमेंट के मंजूर करने पर मुकर्रर होते हैं और इस सभा के मेम्बर आनरेबुल कहे जाते हैं–अन्य २ प्रान्तों के गवर्नर या लफटिनेंट गवर्नर की कोई बात न कह आज हमको अपने प्रान्त के छोटे लाट साहब की कौंसिल का कुछ हाल कहने की आवश्यकता है–इस प्रान्त के वर्तमान् छोटे लाट सरजेम्स जानडिगिस लटूस हैं–इस सभा में ८ ओफिशियल और ६ नान् ओफिशियल सब मिल १४ मेम्बर होते हैं-संयुक्त प्रान्त की प्रजा के सुख दुःख मान अपमान हानि लाभ का कुल दार मदार इन्हीं १४ मेम्बरों पर निर्भर है–इस सभा के मेम्बरों को प्रजा से सम्बन्ध रखनेवाले प्रश्न सर्कार से पूछने का अधिकार है और साथही गवर्नमेंट को यह भी अधिकार है कि वह उन प्रश्नों का उत्तर दे या न दे–हाल में आनरेबुल पण्डित मदनमोहन मालवीय के प्रश्न करने पर कि डिपटी कलट्टरों को नियुक्त करने के लिये परिक्षा की प्रथा क्यों बन्द की गई इसका उत्तर कुछ न मिला–८ एप्रैल के अधिवेशन में इस साल के सर्कारी खर्च के चिट्ठे पर इस प्रान्त के छोटे लाट की कौंसिल में बहश थी जिसपर बहुत कुछ लिखने की आवश्यकता है और जिससे संयुक्त प्रान्त की प्रजा का बहुत कुछ हानि या लाभ सम्भव है–गवर्नमेंट के शासन का बीज मंत्र पालि-

सी है इस बीज मंत्र के जानने से ही सब अरिष्ट दूर हो सब सिद्धि स्वतः प्राप्त हो सक्ती हैं-प्रान्तीय छोटे लाट ने गवर्नमेंट की पालिसी प्रकाश करते हुये कहा है-

Government is desirous to help peaple in every possible way; but its policy is to help those who help themselves.

"गवर्नमेंट प्रजा की सहायता हर तरह पर किया चाहती है परन्तु गवर्नमेंट की पालिसी उनको मदद देने की है जो खुद आप अपनी मदद कर सक्ते हैं-" बात बड़ी भली बड़ी मीठी और साथही बड़ी सच्ची भी है किन्तु जिस प्रसंग में यह बात कही गई उसे देख कर विदित होता है कि छोटे लाट ने यह बात प्लेग से प्रजा की रक्षा के सम्बन्ध में कही है अर्थात् गवर्नमेंट उनको सहायता देना कुबूल करती है जो प्लेग से बचने के लिये स्वयम् अपनी सहायता करैं-पण्डित मदनमोहन मालवीय ने इस प्रान्त में प्लेग के उपद्रवों को देखलाते हुये और उससे प्रजा को बचाने के लिये उपाय बता कर प्रान्तीय गवर्नमेंट से कहा था कि इलाहाबाद का तीन बर्ष का अनुभव यह जताता है कि प्लेग से बचने का सब से उत्तम और सुगम उपाय प्लेग के समय मकान छोड़ नगर के बाहर रहने का है-यहां म्युनिसिपलिटी द्वारा जो हेल्थकैम्प बनाया गया उसमें जेतने लोगों ने भाग २ कर शरण ली उनमें से एक मनुष्य पर भी प्लेग अपना अधिकार न जमा सका-मालवीय जी को इससे यहां तक विश्वास है कि प्लेग के आरम्भ में ही लोग जो मकानों को छोड़ २ चले जांय तो सब नहीं तो फी सदी ९३ या ९४ आदमी इस दुर्दान्त प्लेग के पंजे से अवश्य छूटे रह सक्ते हैं इस लिये गवर्नमेंट को शहर के बाहर कुछ मकान बनवाना उचित है-

राजा और प्रजा में पिता और पुत्र का सा सम्बन्ध माना गया है तब गवर्नमेंट का धर्म है कि प्रजा की रक्षा केवल बाहरी दुस्मनों ही से करके प्रजा पर सैनिक खर्च का भार न डाले किन्तु राज्य के

भीतर घुसे हुये महा संक्षयकारी शत्रु से बचाने का भी यत्न करै-प्लेग से बढ़ कर आज भारतीय प्रजा का कौन सा शत्रु है जिसके द्वारा प्रति दिन और प्रति सप्ताह असंख्य मनुष्य और वर्ष के अन्त में तो कई लाख काल के गाल में चले जाते हैं-हम इसे प्रत्यक्ष देख रहे हैं सैकड़ों वरन हज़ारों अबलायें अपने एक मात्र प्राणाधार पतियों को खो २ कर अपने सतीत्व रक्षा के निमित्त घर २ दाने २ को मारी २ फिरती हैं-कदाचित् ही कोई ऐसा भाग्यवान् होगा जिसका कोई न कोई निकट अथवा दूर का नातेदार मित्र कुटुम्बी अथवा परिचित इस प्लेग दव दहन में इन्धन न हुआ हो-प्रजा के रहने और उसके प्रतिदिन बढ़ने ही से राजा की शोभा है जब प्रजा का इस तरह संक्षय हो रहा है तब राजा किसका शासन कर राजत्व के पद को सार्थक करेगा "राजा प्रकृति रंजनात्" पुत्र स्थानापन्न प्रजा की रक्षा तन मन धन से करने को कटिबद्ध होना चाहिये विशेष कर ऐसे समय जब प्रजा अपनी रक्षा के लिये दयालु गवर्नमेंट की प्रतीक्षा करते हुये मुंह ताक रही है-इसमें सन्देह नहीं कि मालवीय जी के बताये हुये प्लेग से बचने के उपाय में धन का व्यय अधिक है इसी से हमारी प्रान्तीय गवर्नमेंट इस अमोघ प्लेग रक्षा के उपाय का अवलम्ब करने से हिचकिचाती है परन्तु विचार कर देखो तो जितना रुपया सर्कार का मकानों को डिसिनफेक् कराने, प्लेग का टीका लगाने, प्रति वर्ष फूस की झोपड़ी बनवाने और इन सब के इन्तज़ाम के लिये नये २ कर्मचारियों के रखने में खर्च होता है उससे कहीं कम खर्च एकबार कुछ पक्के मकान नगर के बाहर फासले पर बनाने में पड़ेगा-गवर्नमेंट के ऐसे "माडेल विलेज" बनाने पर नगर के धनवान् स्वयम् गवर्नमेंट के इस नमूने पर बाहर मकान बनाने लगेंगे जैसा बम्बई में देखने में आया है॥

हमारी न्याय परायण विचार शील गवर्नमेंट ज़रा ध्यान पूर्वक विचारै कि उसकी वर्त्तमान् पालिसी से प्रजा की सरासर हानि होरही

है और यदि यह पालिसी न बदली तो बराबर हानि होती जायगी—अतः हम अपनी प्रान्तीय गवर्नमेंट से प्रार्थना करते हैं कि हे छोटे लाट महोदय; कृपा कर प्रजा की "अपने आप अपनी सहायता" करने की प्रतीक्षा न कर समान्य रीति पर प्रजा मात्र की सहायता करना आरम्भ कर दीजिये—यदि ऐसा न हुआ तो अवश्यही ऊपर की यह कहावत सुघटित होगी "प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रैव यान्त्यापदः" भाग्यहीन जहाँ जाते हैं वहीं विपत्ति और मुसीबत उनकी दामनगीर बनी रहती है—हमारे मन्द भाग्य की इससे अधिक परख और क्या होगी कि ऐसी कोई बात जिसमें सर्व साधारण प्रजा मात्र का उपकार है उसमें एक न एक अड़चन लगी तो जाता है इसमें कुछ नहीं या तो पालिसी ही हानिकारक और बाधक हुई—

तिब्बत की चढ़ाई का खर्च।

क्या तिब्बत की चढ़ाई का खर्चा भी हिन्दुस्तानही से लिया जायगा ? यों तो गवर्नमेंट को सर्वतो मुखी प्रभुता है हम लोग सब भांति वशंवद हैं जो कुछ किया जायगा माननाही पड़ेगा कैसे इनकार कर सक्ते हैं पर है यह सर्वथा अनुचित और न्याय के विपरीत—इस लिये कि तिब्बत की चढ़ाई केवल लार्ड कुर्ज़न के बलन्द हौसिलों का परिणाम था इससे हिन्दुस्तान का क्या लाभ हुआ और क्यों बैठे बैठाये तिब्बत पर चढ़ाई की गई—वर्फिस्तान के कीड़े तिब्बत वालों से हमे कौन सी भय थी—सरहद्द में जो हिन्दुस्तान के आय से दिया जाता है वह एक प्रकार जां भी है इस लिये कि वहां पश्चिम से आने वाले शत्रुओं से भय है पर इन तिब्बतियों से हमे कुछ भय न था—दूसरे यह कि न जानिये कितने बेगुनाहों की हत्या इसमें की गई है; भीतरी बात जो कुछ इसमें हो प्रगट में तो यही मालूम होता है कि तिब्बत पर चढ़ाई गवर्नमेंट की सब भांत क्षिप्रकारिता और उजलत का काम

है "सहसा विदधीतन क्रियाम्" मृतकप्राय हिन्दुस्तान से इनका खर्च लेना मानो मरते हुये गत प्राण रुद्रुश को जल्द लिपट जाने की कोशिश करना है—

हिन्दी की वर्तमान् दशा।

बलिहारी समय राज की जिसने किसी को भी अछूता नहीं छोड़ रक्खा जहां देखो वहीं यह गाल बजाने को मुस्तैद खड़ा है—समय राज का चांचल्य विश्व व्यापक है; किसी को हसाना, किसी को रुलाना, किसी की समाप्ति, किसी का आरम्भ, बस इसी झंझट में समस्त संसार फस रहा है—यह समय की ही कृपा है कि भारत कुछ का कुछ होगया; ब्राह्मण लोग इस अधो गति को पहुंचे और न जानिये कहां तक नीचे गिरते जांयेगे; इसी समय राज की अवाच्य कृपा से हमारी हिन्दी कुत्ते खसी में पड़ी दुर्गति सह रही है—हिन्दी भाषा के विद्वानों में आपस की मत विभिन्नता के कारण भाषा की उन्नति तो एक ओर रही उलटी अवनति होती सी समझ पड़ती है; इस लिये कि ज़रा भी हिन्दी जानने वाले अपने को गुरुगुरू मान लेते हैं अखबार नवीसी और पुस्तक गढ़ंत खासकर "नोवेल्स" के अनुवाद का एक अजीब खब्त सवार हो जाता है; जिसका परिणाम यही होता है कि हिन्दी साहित्य के बढ़ने की कौन कहे हमारी भाषा राख और मिट्टी में मिली जाती है—कारण इसका यही है कि इनमें इतनी स्वतंत्रता समानी है कि ये किसी पूर्व लेखक के मार्ग का अनुसरण नहीं किया चाहते बल्कि एक नया रास्ता निकाल अपनी नई विद्या और बुद्धि वैभव का एक नये ढंग का परिचय दिया चाहते हैं—नया मार्ग खोजते २ ऐसे अनगढ़ शब्द निकाल लेते हैं जिनके प्रचार होने से साहित्य के यथार्थ लक्षणों का लोप सा होता जाता है—केवल इतनाही नहीं जहां कोई एक

छोटी सी पुस्तक लिखा कि पत्र संपादकों को "समालोचनार्थ" टइटिल पेज पर लिख भेजने लगे-सम्पादक बेचारे के जानकी आफत अगर करतव्य पालन की दृष्टि से यथार्थ समालोचना करता है तो समालोचना यदि एक पन्ने में छपी तो उसकी पर्यालोचना ४ पन्ने होगी जिसमें सिवाय रहहो पुतहो के सार बात एक पंक्ति भी न होगी—समालोचक के बताये हुये दोषों पर पुस्तक रचयिता का ध्यान नहीं जाता इस लिये कि वे जो उन दोषों को मान लें तो सर्व शास्त्र विशारद तथा समस्त कला कोविद फिर न समझे जांय-उनके सिद्धान्त सब तरह पर अभ्रान्त हैं तब उनके दोषों का उद्घाटन उनकी इज्जत में बट्टा लगाना है-ऐसाही हाल वर्त्तमान् किसी २ पत्र सम्पादकों का है ऐसी दशा में जब की हिन्दी किसी स्थिर क्रम पर नहीं आई कि इसके अपने २ ढंग के विचित्र स्टाइल बन गये पंडित स्टाइल, बनिआ स्टाइल, मौलवी स्टाइल; मुंशी स्टाइल; बङ्गाली स्टाइल कहां तक गिनावें पढ़नेवाले पढ़ते २ आजिज़ आजांयगे पर स्टाइलों का अन्त न होगा—ज़रा हिन्दी भाषा के इन महामहोपाध्याओं से पूछै कि हमारी भाषा की उन्नति का यही बड़ा अच्छा क्रम है कि एकही घर में १६ चूल्हे जलैं ? तो निश्चय हुआ कि इन स्टाइलों की परस्पर विभिन्नता और मत भेद हमारी भाषा के ज़िल्लत का मुख्य कारण है। ख़ैर स्टाइलों से नजात मिली तो अब लफ़जों के तकल्लुफ ने आ गर्दन दबाया; सूरत महा घिनौनी हो घर में तावा हांड़ी भी नहो पर हिन्दी के तकल्लुफ की बुनियाद श्री युक्त, श्रीमान् बिना लिखे पूरा नहीं पड़ता "महानुभाव" और "महाशय" तो हिन्दी के किबले कावा हो गये हैं-मत् प्रत्यय का प्रयोग जगत् नियन्ता ईश्वर के लिये उचित है जब मत्प्रत्ययान्त शब्द आपसही में वर्तडालो तो उस जगत् कर्ता के लिये मानसूचक कौन सा शब्द रिज़र्व Reserve रक्खोगे। कदाचित् कुछ दिनों में यह तकल्लुफ लखनऊ को भी मात करदेगा।—

जैसी दशा गद्य की है वैसी ही फज़ीहत पद्य की भी हो रही है-खड़ी बोली, पड़ी बोली, बैठी बोली, अधर में लटकी बोली आदि

तरह २ की बोलियां ईजाद की गई हैं इन दिनों की हिन्दी कविता का ढंग क्रियाओं में थोड़ा अदल बदल कर संस्कृत शब्दों को ठूस देना है–दूसरी भाषाओं से अनुवाद करते समय विलक्षण हिन्दी बनाई जाती है एक ने Red hot soldier का अनुवाद लाल गरमागरम सिपाही कर डाला इभी से हम कहते हैं कि समय राज ने हिन्दी विचारी का भी सत्यानाश कर डाला–

गुणवती गृहिणी॥

पत्यनुकूला चतुरा प्रियंवदा या सुरूप संपूर्णा।
सहजस्नेह रसाला कुलवनिता केन तुल्या स्यात्॥

इस संसार में घर गृहस्ती का मनुष्य को सुख अधिकांश उसकी घर वाली पर निर्भर है–जितने तरह के सुख हैं उनमें स्त्री का सुख सबों में श्रेष्ठ है और वह तभी मिल सक्ता है जब योग्य पुरुष को योग्य स्त्री मिले; धन और धन के उपयोग से मिलने वाला सुख इसके सम्मुख बहुतही तुच्छ और हलका है; या यह कहना अत्युक्ति न होगी कि सुशील अच्छी स्त्री का घर में आना सकल संपत्ति और अन्य उपभोग्य वस्तुओं की सफलता है–खेती बारी; व्यौपार; देश देशान्तर की यात्रा; धूप छांह भूख प्यास आदि सह कर कठिन से कठिन परिश्रम; कहां तक कहें दुःख दायी दासत्व को भी जो हम स्वीकार करलेते हैं सो सबों का परिणाम और उद्देश्य केवल संसार के सुख भोग की लालसाही मालूम होती है–आधि व्याधि संताप और बन्धु वियोग आदि अनेक दुःख और क्लेश से उत्पन्न करुणा रस प्रधान इस संसार नाटयशाला की मुख्य नायिका या प्रधान पात्री स्त्री ही है वह जिसे सुशीला मनोनुला गृहस्थी के कामों में चतुर और प्रवीण मिले उस पुरुष महोदय के सौभाग्य का कहनाही क्या है–इससे यह बहुतही स्पष्ट है कि ईश्वर ने

हमको अपने अभीप्सित सुखों का कितना बड़ा ख़जाना स्त्रियोंही के आधीन कर रक्खा है-सच पूछो तो सुखपूर्वक निर्वाह करने को इस संसार शकट के चलाने के लिये स्त्री और पुरुष ये दोनों उस छकड़े की पहिये हैं गाड़ी का एक पहिया यदि टूट जाय तो दूसरा जैसा अकेला गाड़ी को नहीं खींचेगा वैसेही ज्ञान और सुचरित्र में यदि स्त्री पुरुष से कम हुई और पुरुष को सहायता न मिली तो संसार रथ की गति या-तो रुक जायगी या जैसी होनी चाहिये वैसी न होगी परिणाम में संसार यात्रा कभी सुखदायक न होगी-भारत में स्त्रियों की हीन दशा हम लोगों की संसार यात्रा कैसी अस्त व्यस्त कर रक्खा है सो देखनेही में आता है 'प्रत्यक्षे किं प्रमाणम्'

स्त्रियों में कई गुण ऐसे होते हैं जिनकी सहायता की पुरुष को आवश्यकता सदा होती है हमारे पढ़ने वालों में बहुतेरों ने अनुभव किया होगा कि विपत्ति के समय स्त्रियां दुःख और शोक के कड़े दिनों को बड़े धीरज चतुराई और सन्तोष के साथ झेल गई हैं-"नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण" के अनुसार जिस समय पुरुष पर अनेक विपत्तियां आ पड़ती हैं और धीरज छूट निराश हो जाता है उस समय साहस धीरज चित्त की उदारता आदि स्त्रियों के अनेक स्वाभाविक गुण एकाएक विकसित हो जाते हैं और प्राण सम वल्लभ पति को सब भांत सहारा दे दुःख सागर की लहरों को टक्कर देने के लिये अटल रहती हैं॥

कवि कुलगुरु कालिदास ने एक जगह अपनी कवित्व चातुरी से स्त्री और पुरुष में नवमल्लिका और सहकार की समता दिखलाया है-मल्लिका अपने कोमल लतामय शरीर से आम्र को चारो ओर से लिपटी हुई मानो अपने नूतन रक्त पल्लवों से उसे हवा कर रही है; सुगन्धित फूलों के गुच्छों से उसकी पूजा कर रही है और उसी का आश्रय ले हिल कर प्रातः कालीन सूर्य की मृदु किरणों का उपभोग कर रही है-परन्तु कभी को जो प्रचण्ड अन्धड़ बहता है और घनघोर घटा

छा जाती है आम की डालियां टूटने पर होती हैं तब यही चारो ओर से आम में लिपटे हुये अपने लता अवयवों से उसे सम्हालती है और उसे गिरने नहीं देती—यही चमत्कार मानवी सृष्टि का भी दृष्टि गोचर होता है—जगत् चालक ईश्वर ने अपनी सृष्टि का कुछ ऐसा प्रबन्ध रच दिया है कि सुख के समय जो स्त्री पुरुष को भूषण सदृश थी वही दुःख के पर्वत का आघात होते ही अवलम्ब और विश्राम देने वाली बन जाय और दोनों इस तरह बराबर परस्पर के सुख दुःख का हिस्सा लेने वाले हों—

एक दिन मैं अपने एक मित्र के साथ जो बड़े सुशील सच्चरित्र और रसिक थे घर गृहस्थी की बात चीत कर रहा था; मित्र जी के कई एक छोटे बड़े लड़के लड़कियां बाप मा भाई बहन सब मिलाय बड़ा परिवार था और इनका प्रेम अपने कुटुम्ब के लोगों पर अलौकिक और अकथनीय था बात चीत करते २ मित्र की छाती भर आई बोले "सच-मानियो कलत्र और पुत्र के समान सुख दायक इस संसार में कोई दूसरा नहीं है; असंख्य धन सम्पत्ति असीम वैभव के होने पर सबी तुम्हारे मित्र और सहायक बन जाते हैं पर सब धन सिमिट जाने पर दीन हीन दशा में तुम्हारे निराश जीवन को शांति देने वाले यही स्त्री पुत्र होते हैं—उस लंडूरे का जीवनही क्या जिसने विवाह नहीं किया; दार परिग्रह किये बालबच्चे वाले की इस संसार में अविवाहित लंडूरे की आपेक्षा स्थितिही निराली है—समाज में आदर पाने लायक भारी भरखं जैसा घर गृहस्थी वाला है वैसा अविवाहित कभी हो सक्ता है; उस बे परवाह का दुराचारी हो जाना बहुत संभव है—वह बहुधा यही सोचता है कि मुझे दुनिया की झंझटों से क्या काम क्या मेरे कोई जोरू जाता है; न मेरे घर न द्वार न पुत्र न कलत्र; "जहां पड़े मूसल तहां छेम कुसल"—पर यह सब उसके कहने ही मात्र की बातें हैं संकीर्णता में पड़ निराधार निरावलम्ब हो जैसा वह घबड़ाता

है वैसा वह नहीं जो बालबच्चे वाला हो घर गृहस्थी रखता है-सच-मानिये मनुष्य के हृदय सदन में किसी प्रेमाधिष्टात्री की मूर्ति न रहने से उसके जल्द नष्ट हो जाने की अधिक संभावना है-इसी के विपरीत संसारी मनुष्य बाल बच्चे वाले की कुछ बातही और है उसकी ज़िन्दगी अपने प्रिय वर्गों की भलाई करने में बीतती है; कदाचित् उसपर कोई मुसीबत आ पड़ी तो अपने परिवार के लोगों को देख उसका चित्त हरा भरा रहता है-कहा भी है॥

दिवस्याष्टमे भागे शाकं पचति स्वगृहे।
अनृणी चाप्रवासी च स वारिचर मोदते॥

दिन में एक बार भी बाल बच्चों में रह शाक पात खा जल पान कर बिना किसी का कुछ कर्ज़ धराये या जिस्का कुटुम्ब का कोई कहीं विदेश न गया हो अपने घर में रहता हो वही सुखी है-बाहर उसे चाहो जैसी झंझट उठाना पड़े, परिवार पालन के लिये कितनाही परिश्रम उठाना पड़े, बहुतों से अनादर सहना पड़े, किन्तु दिन भर की मेहनत के उपरान्त जब वह अपने गृह रूप स्वतंत्र राज्य में प्रवेश करता है तो उसे सब भूल जाता है-जब उसकी प्रियतमा पत्नी और बालक उसे चारो ओर से आ घेर लेते हैं और अपनी मीठी तोतरी बोल से उसके चित्त को आप्यायित करते हैं तब वह आनन्द निर्भर हो सब भूल जाता है और अपने को धन्य मानने लगता है-उस समय उसको कितना सुख मिलता है लिख कर कोई कैसे बतलावे केवल अनुभव से ही जाना जा सक्ता है-इसी का उदाहरण स्वरूप एक वृत्तान्त मैं यहां अपने पढ़ने वालों के चित्त विनोदार्थ निवेदन करता हूं जो कल्पित कथा या किस्सा नहीं है किन्तु अपने आंख की देखी बात है इतनाही नहीं वरन उससे मेरा कुछ जातीय सम्बन्ध भी है-

पारसी जाती का फीरोज़शाह पटेल नाम का एक मेरा अत्यन्त प्रिय मित्र था जो बहुत सुशील सच्चरित्र और भलामानुष गृहस्थ था;

वह अपनी पूरी जवानी के उमर में हो कर भी स्वभावही से शान्ति प्रकृति और गम्भीर भाव का पुरुष था–उसका विवाह एक अच्छे कुल की सुलक्षणा गुणवती रूपवती स्त्री से हुआ था–पारसियों की रिवाज के अनुसार यह पढ़ी लिखी थी पिता उसका धनवान् पारसियों के घराने में गिना जाता था–फीरोज़शाह को कुल में अपने बराबर का समझ उसे व्याह दिया था–रूप राशि सर्वांग सुन्दर नव यौवना बाल्य अवस्थाही से धनी श्रीमान् के घर में लाड़ प्यार के साथ पाली पोषी जाने के कारण उसके शरीर के एक २ अवयव इतने नेत्राकर्षक थे कि उसकी मृदुअङ्ग लतिका देख यही भ्रम होता था कि कहीं काम को भस्मसात् करने वाले शिव को फिर एक बार धोखे में डालने को स्वयम् मोहनी तो इस भूलोक में नहीं उतर आई–

फीरोज़शाह भी छवीला रँगीला आनन्दी और विलासी पुरुष था श्याम वरण ऊंचे कद का सुडौल होने से उसकी स्त्री के गौर वरण गठीले नाटे अंग की तुलना की जाय तो मेघ में दमकती हुई दामिनी की कल्पना की जा सक्ती है–

मैंने बहुधा देखा है कि जब फीरोज़शाह अपने मित्रों के साथ घर पर बैठ गप शप करता था तो इसकी स्त्री इसे आन्तरिक प्रेम की दृष्टि से चुरा कर देखा करती थी ज्यों २ अपने प्राण पति को देखती त्यों २ शरत् काल की कुमुदिनी चन्द्रमा को देखने के समान उसकी मुख छवि विकसित और हरी भरी होती जाती थी–जो यह उसका इस तरह पर देखना कोई ताड़ जाता था तो वह खिले हुये गुलाब के फूल की तरह लाज से अपना मुख ऐसा छिपा लेती जैसा पत्तियों में गुलाब छिप जाता है–इस देखने से यही बोध होता था मानो वह यह कह रही है कि पति ही मेरा परम देवता है–ऐसाही फीरोज़शाह भी अपनी प्रिय पत्नी का यथावत् लालन पालन करने और उसको सब भांत सन्तुष्ट और सुखी रखने में अपना जीवन सफल मानता था–इन

दोनों का दाम्पत्य औरों के लिये एक उदाहरण सा था और प्रगट करता था कि इस तरह जो पति पत्नी प्रेम की नौका पर चढ़े रहते हैं वे इस भवसागर को सहज में तर जाते हैं—

संसार में सबके दिन एक से नहीं बीतते दुःख के उपरान्त सुख और सुख के उपरान्त दुःख पारी २ आता रहता है किन्तु ॥

सुखं हि दुःखान्यनुभूय शोभते धनान्धकारेष्विव दीपदर्शनम्।
सुखेन यो याति नरो दरिद्रतां धृतः शरीरेण मृतः स जीवति ॥

जैसा घने अन्धकार में चले जाते को एक बारगी दीपक की रौशनी मिल जाय वैसाही दुःख भोग सुख का होना अच्छा लगता है किन्तु सुख में रह जो दरिद्र हो जाता है वह मानो शरीर तो धारण किये है पर जीता ही मृतक है—फीरोज़शाह का यही हाल हुआ उसकी सारी संपत्ति पिता के समय से व्योपार में लगी हुई थी पिता के स्वर्ग बास होने के पीछे वह सब सम्पत्ति इसे मिली और वह पिता का सब कारो बार देखने लगा—कुछ काल तक इसके पिता का चलाया हुआ ढांचा ठीक २ चला—दैव वशात् सट्टे में उसने एका एक हार खाई और उसकी सब सम्पत्ति नष्ट हो गई—यहां तक कि कुछ स्थावर धन मकान और ज़मीदारी आदि घाटा पूरा करने में सब चला गया—थोड़ेही समय में वह निष्किंचन निराश और बेदिल हो गया दुर्दैव के एक ही कठोर आघात ने उसे निरधन बना दिया—इसे बहुत दिनों तक यह किसी को सूचित न कर सका अपना चित्त दृढ़ कर इसे दबा रखने की चेष्टा में लगा रहा—

एक २ दिन उसे एक २ युग बीतता था काटे नहीं कटता था; सब से बड़ा कष्ट जो उसे उठाना पड़ा वह यह था कि यह सब हाल कहीं मेरी स्त्री को न मालूम हो जाय; इस लिये उसके सामने यह प्रसन्न मुख हंसोड़ अपने को बनाये रहता था अपने दुःख की दशा जताय उसे भी

दुःख सागर में डुबोने का साहस उसे नहीं होता था किन्तु उस चतुर सयानी ने अपने पति की मलिन मुखच्छवि शरीर की दिन २ दुर्बलता और पिलाई से जान गई कि मेरे पति को कोई हृद्रोग है पर ऊपर से निश्चिन्त और प्रसन्न रहने की चेष्टा में लगे रहते हैं—

दुःख के उद्वेग से पूर्ण एक दिन वह मेरे यहां आया और आदि से अन्त तक सब वृत्तान्त कह सुनाया वह अत्यन्त भग्न चित्त हो रहा था उसकी बोल चाल में नैराश्य और दुःख भरा हुआ था, जब वह सब कुछ कह चुका तब मैंने पूछा भला मित्र यह तो कहो कि यह सब बात तुमने अपनी स्त्री से कहा है या नहीं—मेरे मुख से इतना निकलतेही उसका कण्ठ गद्गद हो गया आंख से आँसुओं की धारा बह चली स्तिमित सा हो गया कुछ देर बाद बोला—मित्र सच मानियो तुम्हे ईश्वर की शपथ है मुझ दीन पर दया करो उसकी याद आतेही दुःख का समुद्र मेरे सामने उमड़ आता है इसी से मैं इतना मूढ़ और बिकल हो रहा हूं—

मैंने कहा आज नहीं कल कभी न कभी तो उसे मालूमही हो जायगा कब तक छिपाये रहोगे किसी दूसरे मार्ग से जानने की अपेक्षा यदि तुम स्वयम् सब वृत्तान्त कह सुनावो तो यह उसे इतना दुखदायी नहो—दूसरे तुम एक और भी बड़ी भूल कर रहे हो कि अपने सब दुख का बोझ स्वयम् उठाये हुये हो उसे जताय दुःख का हिस्सा लेने वाली बना लोगे तो अच्छा होगा—अपने बिचार अपनी इच्छा प्रेम पात्री से कह देने में प्रीति का बन्धन दृढ़ हो जाता है नहीं तो उसके ढीला होने में देर नहीं लगती—

उसने फिर कहा कहते तो तुम ठीक हो पर वह मैं ही नहूं जिसने उसके सब सुख को धूलि में मिला दिया मैं उससे कैसे कहूं तेरा पति दरिद्र भिखारी होगया; अभ्यास के अनुसार जो श्रीमन्त कुलीन और सभ्य समाज में रह आप आनन्द से रहती थी और दूसरों को आनन्दित करती थी

अपनी सहेलीयों की दृष्टि को सुधाञ्जन सी थी वह अब कैसे दरिद्र का दुःख उठावेगी-जो ललित युवतिजन शिरो भूषण और अशेष गुण की राशि थी वह इस दरिद्र दशा में अपमान क्योंकर सहैगी—

मैंने जब देखा कि उसके शोक सागर की पूरी उमंग आ रही है इसने इतने दिनों तक जो दुःख दबा रक्खा वह अब अवकाश और रास्ता मिलतेही बड़े बेग से बाहर आ रहा है उसे रोकना उचित नहीं-कुछ दिन बाद जब यह मालूम हुआ कि उसका दुःख अब कुछ शांत हुआ तो उसको दिलासा देता हुआ कहने लगा-मित्र तुम अपना हाल अपनी स्त्री से अवश्य कहो; इसपर वह हां कह सिर झुकाया जिस्से बोध होता था कि अब वह इस बात पर राज़ी हुआ है; जिस्से मेरे चित्त को बहुत ही सन्तोष भया-दुःख के उमंग में भरा यह बोला; मित्र तुम सच कहते हो उसके साथ मैं चाहो जहां रहूं सुखी रहूंगा; मैं दरिद्र होगया तोभी स्मशान ऐसे भयंकर स्थान में भी उसके प्रेम कटाक्षों की चाँदनी में रहने से सन्तुष्ट रहूंगा; मेरी प्राण प्यारी सुखी रहे मुझे अपने निज की कोई चिन्ता नहीं है-मैं उसका हाथ पकड़ फिर समझाने लगा प्रिय मित्र याद रक्खो वह तुम्हारे साथ वैसाही प्रेम का बर्ताव रक्खेगी जैसा पहले रखती थी; अच्छे कुल की स्त्रियां अपना सर्वस्व खो बैठती हैं पर अपने पति के सुख या दुःख में हिस्सा लेने से मुह नहीं मोड़ती-पति चाहो कैसी दशा में आगया हो उसके साथ उत्तम बर्ताव करना अपने लिये भूषण मानती हैं-सच तो यों है कि उनके सच्चे प्रेम की कसौटी और स्वाभाविक धैर्य गुण का आविष्कार ऐसेही समय में होता है-मैं तो समझता हूं कि दुखी होने के बदले वह प्रसन्न होगी कि उसे एक ऐसा अवसर हाथ लगा जिस्में वह यह प्रगट कर सके कि उसका सच्चा प्रेम तुम पर दौलत के सबब नहीं है वरन वह जो तुम से प्रीति करती है वह शुद्ध चित्त से और पति में भक्ति के भाव से-सच तो यों है कि कुलीन स्त्रियों के मन में प्रेम पथ सदा प्रकाशमान् रहता है सूर्य की रौशनी में जैसा दीपक की रौशनी तुच्छ

समझी जाती है किन्तु विपत्ति अन्धकार के आतेही प्रेम पथ तुल्य दीपक के प्रकाश की भरपूर क़दर की जाती है; तस्मात् अपना हाल उससे कह देने से तुम्हारा दुःख बहुत हल्का हो जायगा—

मैंने अपने मित्र को कहने के लिये बहुत हठ किया किन्तु शंका मन में लगी ही रही इस लिये कि नवयौवना युवतियों का क्या भरोसा जिन्हे धन और वैभव के भोग विलास की सदैव बासना बनी रहती है—चढ़ती जवानी का समय विशेष कर स्त्रियों में तो निरालेही ढंग का होता है उनका चंचल मन ऐसी बड़ी छालागें भरता है कि जिस्को पूरा कर देने में गृहस्थ अपनी औकात के बाहर ख़रचने पर भी सांगोपांग उन्हे सन्तुष्ट नहीं कर सक्ता कुछ न कुछ कसर लगी ही रहती है—कहीं उसकी स्त्री जो हठ कर बैठी अपने पति की दीन दशा का कुछ ख़याल न कर अपनेही आराम और भोग विलास का तान छेड़ बैठी तो हमारे मित्र को फिर बड़ा दुःख होगा—किन्तु दूसरे दिन फीरोज़ मेरे घर आया और कहने लगा भाई मैंने सब वृत्तान्त अपना उससे कह सुनाया तब वह मेरे गले में अपनी बांह छोड़ और दिलासा देती बोली—"तभी आप के मन में कुछ दिनों से उद्वेग छा रहा था अच्छा तो अब उसकी क्या परवाह" मित्र उसके ये मीठे शब्द मेरे कानों में अब तक गूंज रहे हैं—

मैंने फिर कहा अच्छा तो सब से कठिन काम तो तुम्हारा निर्विघ्न हो गया अब सब लोगों को अपनी गरीबी का हाल जहां तक हो सके जल्द प्रगट करदो क्योंकि तुम अपनी निर्धनता को छिपाये रहोगे तो ऊपरी आडम्बर में बड़ा क्लेश सहना होगा—क्योंकि पहले का सा सब ढोंग रचाही रहता है पर भीतर पोल थैली खाली; धनवानों की सी शान शौकत और थैली खाली दोनो एक साथ नहीं निभते—फीरोज़शाह मिथ्या आडम्बर का स्वयं विरोधी था मेरे कहने को स्वीकार कर लिया उसकी पत्नी के बारे में पूछा तो मालूम हुआ कि वह तो उसी क्षण से अपने घर की सब व्यवस्था बदल देने को उद्यत होगई—

कुछ दिन बाद सायंकाल को एक दिन वह मेरे घर पर फिर आया उसने अपना पक्का मकान वगैरह सब बेंच शहर से थोड़ी दूर एक गांव में छोटा सा कच्चा घर बनवा लिया था और उसी घर के उपयोगी सामान भी खरीद लिया था धनियों के योग्य पहले का सब सामान बेच डाला था फिर भी दो चीज़ रख छोड़ी ; एक चांदी का डब्बा जिस्में उसकी स्त्री की सोहाग की सामिग्री रहती थी दूसरा एक सितार जो उसके आमोद प्रमोद का साथी था बल्कि उसके इस अजीब शौक को देख मुझे हंसी भी आई और यह मसल याद आई "मरे जांय मलार गाये जांय" दिन भर के श्रम से छुट्टी पाय वह शहर से अपने ग्राम वाले मकान को जा रहा था इस बात को जानने के लिये कि अब उसकी पत्नी किस तरह अपना समय बिताती है मैं भी उसके साथ होलिया–

दिन भर की मेहनत से वह बहुत थक गया था अपने नये घर के सामान इकट्ठा करने में उसका चित्त व्यग्र था–मार्ग में चलते २ एका एक ठंढी सांस भर कह उठा "हाय २ गरीब दुखिया अब वह क्या करे-गी"–मैंने पूछा क्या उसको कुछ हुआ तो नहीं? उसनेकहा–निर्धन दशा में एकबारगी आ गई अब इस्से बढ़कर दुःख और क्या होगा; भविष्य में होनहार दरिद्रता के दुःख मूर्तिमान् उसके सामने नाचते होंगे–मैंने सोचा कदाचित् ऐसा संभव हो इस्से मैंने कुछ न कहा और उसके साथ बराबर चलाही गया–अन्त को हम बड़ी सड़क छोड़ घने वृक्षों के भीतर जाने वाले एक मोड़ पर जा पहुंचे वहां से फीरोज़ का वह नया घर हमें दिखाई देने लगा–वह घर शांत और रमणीय स्थान में बना था घर क्या मानो एक आश्रम था; जिसके चारो ओर लम्बा चौड़ा अ-हाता था और बहुत स्वच्छ सुथरा था ; जिसके बीच एक घेरे में फूलों के पौधे लगे हुये थे जिसे देख मन बहुत ही सन्तुष्ट हो गया–फाटक खोल भीतर गये भीतर जातेही थे कि कोकिल के कुहू नाद समान मधुर स्वर की आवाज़ मुझे सुन पड़ी–फीरोज़शाह मेरा हाथ ज़ोर से

दबा रक्खा हम दोनो खड़े रहगये और कान दे सुनने लगे—उपरान्त मालूम हुआ कि वह आवाज़ कोकिल बयनी उसकी स्त्री की थी जिसके सुनने की उसके पति को बड़ी चाह थी—जिसे सुन वह गद्गद् हो गया और जिस बात का उसे तरद्दुद था कि मेरी पत्नी को मेरे कारन दुःख सहना पड़ा सो दूर होगया क्योंकि दुःख में गाना बजाना नहीं सूझता वरन वह उदासी छाई रहती है कि जिस दशा में राव रङ्क से आदमी कोसों भागता है—उस समय उसका गला भर आया आंसुओं की धारा बह चली टूटे फूटे शब्दों में बोला; "मित्र सच मानो बाहर कितनोही झंझटें और दुःख रहे पर घर में सब आनन्द और स्वास्थ्य हो तो उसे एक प्रकार ईश्वर की कृपा मानना चाहिये—अब मुझे निश्चय हो गया कि हमारा शेष जीवन इस दरिद्रता में भी सुख से बीते गा; स्त्रियाँ पुरुष की अर्द्धांगिनी इसी से कही जाती हैं यह मुझे आज मालूम हुआ—मित्र सच है पर जब ऐसी ही गुणवती स्त्री मिले जैसी तुम्हे मिली है; सुशीला गुणवती सहधर्मिणी मिले तो दरिद्रता का दुःख और धन सम्पत्ति का सुख दोनो एक सा है"—यह कह मैं वहां से बिदा हुआ और अपने मित्र को फिर कभी दरिद्रता की शिकायत करते न सुना—गणपति जानकीनाथ दुबे बी. ए.॥

शब्द योजना सम्वलित उपयुक्त विशेषण और विशेष्य।

बहुत से शब्द ऐसे हैं जिनके योग से सरस और उपयुक्त विशेषण हो जाता है; यह बात केवल संस्कृत ही में है; कुछ थोड़ा घना हिन्दी में भी हैं; उर्दू शायरों ने भी इसका कुछ प्रयत्न किया है पर अंगरेज़ी सी रूखी भाषा में तो कहीं इसका नाम भी नहीं है तद्यथा—

चरित—चारु चरित्र। चरित्र चंचरीक। चरित्र वर्द्धन। चरित्र माधुरी। चरित्रामृत॥

कुल।कुलकुठार।कुलपांसन।कुलाङ्गार।कुल पताका।कुल दीपक। कुल भूषण।कुल दूषण।कुलतारन।कुलबोरन।कुल घालक।कुल पालक। कुल उजागर।कुल कलङ्क।कुल गुरु।"कुलं कुलंअटति" कुलटा॥

कर्म।कर्म चाण्डाल।कर्म शूर। कर्मठ। कर्मपरायण॥

गेह।गेहे नर्दी। गेहे शूर। गृहमणि।गृह देवता।गृह लक्ष्मी। घर घालक। घर उजाड़। अंधेरे घर का उजाला॥

ध्यान।ध्यान ध्येय। ध्यान गम्य। ध्यान स्थ। ध्यान निष्ठ। बक ध्यान॥

नीति।नीतिपथ प्रवर्तक।नीति निष्णात। नीतिज्ञ।नीतिनिपुण। नीति प्रावण। नीति वल्लीबनारुभोद। नीति विशारद॥

धन्य। धन्याति धन्य। धन्यजन्मा। धन्य कर्मा॥

दीन। दीन दयापर। दीन दयार्णव। दीनोद्धारक। दीनबन्धु। दीन दयानिधि। दीन दयामय। दीन दरिद्रदारण। दीन दयाधाम। दीन दरिद्रविद्रावण। दीन दुखदुःखी। दीन दुःखौघविध्वंसन। दीन दुःखराशि दलन। दीन दुःखक्षयकृत॥

दुर्। दुर्धर्ष। दुराराध्य। दुरूह। दुर्दान्त। दुर्दैव दुराशा। दुर्मति॥

गुण। गुणग्राम ग्रामणी। गुणाग्रगण्य। गुणाढ्य। गुण्य। गुण-गरिमा। गुणगौरव। गणनीयगुण॥

पुण्य। पुण्य श्लोक। पुण्य पथपथिक। पुण्यार्जित यशोराशि। पुण्यकाम। पुण्यधाम। पुण्यनाम। पुण्यजन। पुण्यशील। पुण्यभाजन॥

भव। भवजलधिसन्तरणनाविक। भवजाल। भव भय भञ्जन। भव भय मोचन। भव भयातीत। भव भयान्तकारी॥

यश। यशस्कर। यशोराशि कृत मन्दर। यशः पुंज पिंजरित दश-दिगन्त। स्फटिकोज्वल। करीन्द्र कुन्द कुमद क्षीरोदनीर प्रभ।शरच्चन्द्र मरीचिरुट्॥

भुजा। मृणाल कमनीय। उद्दण्ड दोर्दण्ड। शालप्रांशु। "शाल-प्रांशुर्महाभुजः"। रघु॥

मुख। चन्द्रानन। अरविन्दानन। विकच पंकज दृप्त दास्य। आस्य कमल। जितशर्वरीश। प्रभा पुंजपिंजरित। मुखकमल। मुखारविन्द मुखच्छवि। प्रसन्नवदन। इन्दुतुल्याश्या। मुख का सूखना—"मुख सूख गया पिलाई सी छा गई लुरयाने लगे"—चेहरे की बशूशासी॥

स्मित। ज्योत्स्नास्मित। सुधाधवल। सुधावर्षि। कैरवकुल विकाशि। उदारहास्य। ईषत्हास्य। पुष्पोज्वल॥

नेत्र। स्मितसरोरुहचारु। चंचल चंचरीक सहोदर। खंजन मृग मीन मदभञ्जन। मीन तरल। कुटिल कटाक्ष। लोलभृंग। केश। कचकलाप। रेशम के लच्छे। चामरद्युति॥

ललाई। विद्रुमलतारक्त। शोण शरीजरूट्। तप्तहाटक द्युतिभुट्॥

पिलाई। लवलिफलपाकप्रणयिनी। कनककान्ति। चम्पकवरण॥

अधर। बिम्बाधर। बन्धूकबन्धु। विद्रुमाधर। अधरितप्रवालन वलक्ष्मी। बन्धुजीवप्रभाहर। जपाकुसुमप्ररोह। गुलाब की पखुरी से। अधरामृत। अधर सुधा॥

सत्कविरसनाशूर्पी निस्तुपतर शब्दशालिपाकेन।
तृप्तो दयिताधरमपि नाद्रियते कासुधादासी॥

नाशिका। शुकतुण्ड। तिलपुष्प॥

दन्तावली। विजित दाड़िम दामराजि। मोतियों की लड़ी से॥

कण्ठ। कम्बुकण्ठ। कपोतग्रीव॥

कपोल। मधूक कलिकामधुर। गोल कपोल॥

कन्धा। वृषस्कन्ध। परिणद्धकन्धर॥

वक्षस्थल। "कपाटवक्षाः परिणतकन्धरः" रघु॥

कमर। मृगराज कटि॥

जंघा। कदलीकाण्ड। करभोरू॥

चरण। चरण कमल। पादपद्म। अंघ्रिसरोरुह॥

गमन। मृगराज गमन। मराल गमन। चींटी की चाल। जनवासे की चाल। मनोवेग॥

चेष्टा। काकचेष्टा। निद्रा। श्वान निद्रा। कुंभकरण की नींद। सुख की नींद। गाढ़ी नींद॥

कीर्त्ति। कीर्त्ति कौमुदी। कीर्त्ति मराली। कीर्त्ति कण्टक। कीर्त्ति सुधाकर। कीर्तित कीर्ति॥

प्रभा। तड़ित्गौरी। दामिनी सी दमकती॥

जीवन। नलिनीदलगत जलवत् तरल। पानी का बुल्ला। क्षणिक्। मनहूस। ऊब पैदाकरने वाला॥

व्रत। कपोत व्रत। "है व्रत लाल कपोत व्रत, कठिन नेह की चाल। मुख सों आह न भाखिहैं निज सुख करी हलाल"—मौन व्रत। वैडाल व्रत। वृत्ति—बैत सी वृत्ति। शिलोञ्छ। श्ववृत्ति॥

भाव। दास्य भाव। सेव्य सेवक। उदार भाव॥

बुद्धि। अगाध। तीव्र। मन्द। पैनी। हलाग्र। कुशाग्र॥

भालपट्ट॥

कवि लोग लिलार की उपमा पटरे से देते हैं सच पूछो तो विधिना को अपने अमिट अक्षरों के लिखने को यह भाल पट्टही एक मज़बूत स्लेट मिली है जिसपर बालिश ब्रह्मा लड़कों की भांति आज तक खरी पट्टी लिखने का अभ्यास नहीं छोड़ता और जन्मतुये की छट्टी छदिन नये २ भाल पट्ट पाय फिर २ बालक बन बालक्रीड़ा का अनु-

भव करता है–बालक तो लिख कर मिटाल डाल सक्ते हैं पर यह लेख ऐसा अमिट है कि कोई कितनाही चेष्टा करे कभी मिट नहीं सक्ता "करम रेख ना मिटै करै कोई लाखों चतुराई"–चतुरानन की चतुराई का चमत्कार कुछ लिलार ही के सम्बन्ध में देखा जाता है-अच्छे २ विद्वान् गुणवान् कृत विद्य भी भाग्यमान् के सामने हाथ पसार दीन बनते हैं–इसी बात पर कुढ़ किसी कवि ने कहा है–"भाग्यवन्तं प्रसूयेथाः मा शूरान् माच पंडितान्" धन्य हैं वे भाग्यमान् पुरुष जिनको हर एक के सामने माथा नहीं नवाना पड़ता हाथ नहीं पसारना पड़ता–मूर्ख नासमझ को समझा कर राह पर लाने को हज़ार२ माथा पटको कुछ नहीं होता–"मूरख को समझाइबो ज्ञान गांठ को जाय" "ज्ञान लव दुर्विदग्धं ब्रह्मापितं नरं नरञ्जयति"–घर में चोरी होगई चोर सेंध दे सब माल मताल ढो लैगये इधर दौड़े उधर दौड़े थाना पुलिस लाये सौ २ ततबीर किया कुछ न हुआ अन्त को माथा ठोक बैठ रहे–यह भालपट्ट क्या है मानों भौं के ऊपर आड़ी बेल की भूमि या ज़मीन है सांझीबाज़ जान सक्ते हैं पहले ज़मीन साफ कर तब बेल बूटे उठाये जाते हैं–अथवा भौं रूप शोसनी तहरीर के बाद यह लिलार ही ऐसी चौड़ी बेल आ पड़ती है जिसमें ललना जन सौभाग्य सूचक सिन्दूर रोरी या श्याम मञ्जनी आदि के रङ्ग विरङ्ग भांत २ के बूटे जमाय टिकुली रूपी बुन्दा उसमें जड़ लिलार को पूरी सांझी बनाय अपने सौंदर्य को शतगुण विशेष करती हैं–दार्शनिकों के समस्त दर्शनों का आश्रय भूत चित्त वा मन यद्यपि दसों इन्द्रियों का राजा वा प्रभु माना गया है; उस मन का सहकारी ज्ञान वा बुद्धि का निवास स्थान मस्तिष्क है जो इस लिलार ही में रक्खा गया है इसी से हमारे शास्त्र कारों ने इसे उत्तमांग माना है–योरप में इसी लिये अपूर्व अद्भुत प्रतिभा वालों का सिर बिकता है जर्मनी के वृद्ध विस्मार्क न जानिये कै बार अपने बहुमूल्य मस्तिष्क का बड़ा दाम लै चुके बे-नसीब किसमत करम भाग लिलार दिष्ट आदि इसी भालपट्ट के नाम

हैं - नसीब के सितारे की चमक को कोई सितारा नहीं पाता - लोग कहते हैं करम की रेख अमिट है - "यद्धात्रा निज भाल पट्ट लिखितं तन्मार्जितुं कः क्षमः" करम की रेख में मेख मारना बिरले चतुर सयाने पुरुषार्थियों का काम है - हम भी उसी मेख मारने के खयाल से पढ़ने वालों को भांत २ की चतुराई दिखाया चाहते हैं कि ग्राहक बढ़ें पर इस पत्र की फूटी किस्मत नहीं जगती लाचारी है -

---

श्री राधाचरण गोस्वामी ने हमे यह प्रतिष्ठा पत्र भेजा है जिसे हम उनकी आज्ञानुसार अविकल छापते हैं ॥

श्री युक्त हिन्दी प्रदीप सम्पादकेषु

आज हिन्दी प्रदीप का २५ वां वर्ष समाप्त हुआ देख कर हृदय में परमानन्द प्राप्त हुआ; आप का बचन "अचि दुसह दुर्जन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै" सफल हो ! जिस प्रकार आप संसार में स्वतंत्र वृत्ति से रहकर जीवन निर्वाह कर रहे हैं यह पत्र भी उसी प्रकार सुख दुःख हानि लाभ सहकर चल रहा है ! धन्य ! आप ! धन्य आप का पत्र ! "सताङ्केनोद्दिष्टं कठिनमसिधाराव्रतमिदम्" महाशय ! संसार की गति बड़ी विलक्षण है । "सर्वं स्वार्थं समीहते" जो संसार की गाड़ी लीक पर चलाये जाता है किसी प्रकार इसके अन्त को पहुंच जाता है । परन्तु जो संसार की गति के विपरीत चलने वाले हैं उन का क्या किया जाय ! आप भी उन में से एक हैं । आप यदि संसार की हवा के रुख पर चलते तो आज आपका पत्र एक प्रेस क्या कई प्रेस बना लेता । पर आप तो बड़े हंसव्रत हैं यही बहुत है की आप जीते तो हैं । बाबू हरिश्चन्द्र के उपरान्त यदि कुल्हाड़ी लेकर कोई अक़ल के पीछे पड़ा है तो आप ही हैं ! खेद है कि आप ने घोंचा पुरोहितों की हां में हां नहीं मिलाई न यजमानी धर्म, व बनीयां धर्म के पक्षपाती बनकर बाल्य

बिब्राह को सराहा ! आर्य्य समाजी ब्रह्मसमाजी , आदि नई रोशनी वालों को आपने वृथा कलङ्कित नहीं किया ? हुक्काम की खुशामद और उनकी सन्मान भिक्षा के लिये कांग्रेस के वृथा बैरी बन कर आपने सम्पादकनाम पर काजल नहीं पोता? न बड़े २ हाकिमों की कृपा दृष्टि, और छोटे छोटे अत्यचारी शासकों की कोप दृष्टि की आपने पर्वाह की ! आपने जो लिखा दो टूक तलवार की धार लिखा । कहा सो पत्थर की लीक कहा ! आप यदि बाल बिधवाओं के गले पर छुरी चला कर बिधवा बिबाह के प्रतिकूल लिखते तो बहुत सी मंडली आपकी ग्राहक होती ! यदि आप सुमुद्र यात्रा को रोक कर हिन्दू जाति को डुबाने पर लेख लिखते तो बहुत्त सी धर्म सभायें आप को स्थान देतीं । आप का लक्ष्य " न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदन्नधीराः " " अस्य दग्धोदर स्यार्थे कः कुर्य्यात् पातकम्महत् " " विना दैन्येन जीवनम् " है-जो हो हम तो आप के काव्य मर्मज्ञ उद्‌गम, प्रतिभाशाली उद्‌भट और परच्छाया रहित लेख, सरस सुधा मय बाग्धारा, एवं अतलस्पर्शी-विद्यानुराग, प्रज्वलित देश वात्सल्य के प्रेमी हैं । आपने एक समय कहा था कि "उत्पत्स्यतेहि मम कोपि समानधर्मा कालो ह्ययन्निर वधिर्विपुला च पृथ्वी" ईश्वर करै, सत्य हो । आप के चाहने वाले उत्पन्न हों । आप का पत्र हिन्दी का मुखोज्ज्वल करै ॥

मैं एक सामान्य गृहस्थ हूं । जिस समय आप प्रेस ख़रीदें, मुझसे भी ५) मंगा लें-

आप का मित्र
राधाचरण गोस्वामी
श्री वृन्दावन ॥

इस पत्र को आप छापदें ॥
रा० च० गो० ॥

बिश्वास ॥

धर्म या मज़हब की जड़ केवल विश्वास है इसी पर ईश्वर का अस्तित्व निर्भर है क्योंकि विश्वास बिना रक्खे जो कुछ किया जाय वह न करने के तुल्य है इस लिये कि यह पहली सीढ़ी है—विश्वास होने पर भक्ति या श्रद्धा का दर्जा आता है इसी से गीता में भगवान् ने कहा है।

अश्रद्धया हुतं दत्तं तपस्तप्तं कृतं च यत्।
असदित्युच्यते पार्थ नच तत् प्रेत्य नो इह॥

बिना श्रद्धा के जो हवन किया गया दान किया गया तपस्या की गई या जो कुछ किया गया वह न करने के बराबर है; न उसका फल इस लोक में है न परलोक में—पर लोक के लिये तो किसी तरह पर नहीं है इस लोक में कभी को तारीफ हासिल कर ने को दंभ मात्र के लिये है॥

लिखा है "भावेषु विद्यते देवो तस्मात् भावोहि कारणम्"—भाव अर्थात् विश्वास में देवता रहते हैं इस्से बिश्वासही प्रधान है; कहावत भी ऐसी ही प्रचलित है "मानो तो देव नहीं पत्थर" सच्चा विश्वास जिसे एतकाद् कहेंगे अब इस समय हम देखते हैं तो बहुत कम हो गया और ज्यों २ तालीम का ज़ोर बढ़ता जायगा सच्चा विश्वास उच्छिन्न होता चला जाय गा केवल दंभ और आडंबर बच रहा सो भी कहीं २ और किसी २ में—यही कारण है कि आज कल के संशोधक रूखी तबियत वाले जिन में प्रेम और भक्ति का कहीं स्पर्श भी नहीं है उन्हे चिरकाल का प्रचलित वर्तमान हिन्दू धर्म सब ओर से दंभही दंभ जचता है—कदाचित् ऐसा हो भी क्योंकि मज़हब के साथ मक्कारी ने अपना घनिष्ट संबंध जोड़ रक्खा है पर धर्मसंबन्धी सब दंभ ही दंभ है हम ऐसा कभी न मानैंगे बल्कि उन्हीं संशोधकों का थोड़ा दोष है जिनमें भक्ति का किंचित् भी लगाव नहीं है—

कृष्ण चैतन्य महा प्रभु नान्हक और कबीर आदि पुराने संशोधक और इस समय के संशोधकों में यही बड़ा अन्तर आ गया है; पुराने संशोधक भक्ति, श्रद्धा, प्रेम और विश्वास से पूर्ण थे तो जो कुछ उन्होने किया उस्में पूर्णतया कृतकार्य हुये-कृष्णचैतन्य ने संपूर्ण बङ्गाल को अपना अनुयायी कर डाला; गुरु नान्हक देव ने पञ्जाब भर को अपना चेला मूड़ लिया; वल्लभाचार्य ने गुजरात को अपना कर डाला; रामानुज स्वामी ने मन्द्राज में अपना पूर्ण प्रभुत्व स्थापित कर दिखाया-इन दिनों के संशोधक गला फाड़ २ गली २ चिल्लाते फिरते हैं पर उनके कहने का किसी पर कुछ असर नहीं होता इस लिये कि ये रूखे वैज्ञानिक बन भक्ति श्रद्धा और सच्चे विश्वास को अपने में नहीं आने देते-अन्तर्यामी परमात्मा तो सबों की चित्त वृत्ति पहिचानता है इस लिये वह उनको अपने उद्यम में यथोचित कृत कार्य नहीं करता-इन दिनों झूठा विश्वास Faulse belief चल पड़ा है सभ्य समाज वाले अपढ़ मूर्खों को किसी धर्म सम्बन्धी कार्य में लगे हुये देख उनके विश्वास को फाल्स बिलीफ कह उन्हे हंसते हैं पर हम कहते हैं विश्वास ऐसी चीज़ है कि वह झूठा होही नहीं सक्ता जिन्हे विश्वास हई नहीं उनसे उनका झूठा विश्वास भी भला-बल्कि यों कहिये जिसपर जिसका विश्वास जम गया उसको वह विश्वास ही तदाकार हो भावनानुकूल फल देता है इसी से कहा है "विश्वासः फल दायकः"-जो कुछ हो अब इस समय हम देखते हैं तो विश्वास की जड़ बहुत कट रही है जिसका परिणाम सोचते हैं तो बड़ा भयंकर जान पड़ता है—आस्तिक्य बुद्धि ईश्वर में प्रीति यह सब बातें बड़े कल्याण की हैं न जानिये क्यों हमारे सुसभ्यों को इधर से अरुचि है; बड़े लोग हैं कुछ समझे होंगे हम अपनी ओछी अल्प बुद्धि को कहां तक पछतायें जो जेठऊ तरबूज़ से उनके भारी और पैने दिमाग़ के साथ नहीं मिल वजती-

---

सहायार्थ दान॥

इन महाशयों को हम बहुत २ धन्यबाद देते हैं जिन्होंने प्रेस के सहायार्थ यथा शक्ति हमें चन्दा भेजा है; आशा है हमारे लेख के रसिक सज्जन और लोग भी इनका अनुकरण करेंगे और इसी भांत थोड़ा२कर कतिपय दिनों में हमारा यह मनोरथ सफल हो जाय—

पं०—पद्मप्रसाद शर्मा मुदर्रिस सौरिख ज़िला फ़र्रुखाबाद १)

पं०—गंगादत्त शर्मा गुरुकुल हरिद्वार २)

पं०—भीमसेन शर्मा गुरुकुल हरिद्वार १)

पुस्तक प्राप्ति

बाल भारत॥

महाभारत के अट्ठारहो पर्व का सरल साधु भाषा में संक्षिप्त विवरण; बालकों को उपयोगी ऐसी ही पुस्तक हो सक्ती है जिसकी भाषा सहज और मीठी हो और बिना किसी अंश के छोड़े कथा भाग थोड़े शब्दों में सब आ गया हो यह छोटी सी पुस्तक बालक और बालिकाएं सभों को लाभ दायक है—यह ठाकुर सूर्यकुमार वर्मा की लेख चातुरी का बहुत अच्छा नमूना है इंडियन प्रेस प्रयाग में छप कर प्रकाशित मूल्य ॥)

जनरल गारफील्ड॥

इस पुस्तक के पढ़ने से ठाकुर सूर्यकुमार वर्मा की उपयुक्त लेखनी पर पढ़ने वालों की श्रद्धा और अधिक बढ़ती है; सरल और सीधी भाषा के अतिरिक्त जो उपदेश इससे मिलता है वह निस्सन्देह बहुत उत्तम है कि निज पौरुष और योग्यता से मनुष्य दीन हीन दशा में गारफील्ड के समान कहां तक ऊंचे पद का अधिकारी हो सक्ता है यह इस पुस्तक के अनुशीलन से सुस्पष्ट है—कसर केवल इतनी ही है कि

अमेरिका और योरप सरीखे देशों में पौरुषेय गुणाग्रगण्य तथा और २ गुण ग्राम गामणी पुरुषों की क्या कमी है जहां नगरों की कौन कहै एक २ छोटे से गांव में तथा प्रत्येक घराने में बहुधा ऐसे लोग निकल आते हैं जिन में कुछ न कुछ लोकोत्तर विच्छित्ति विशेष रहती ही है-तारीफ तब है कि भारत ऐसे गिरे देश में इस तरह के लोग निकाले जांय जिनकी गुण गरिमा योरप और अमेरिका के लोगों से किसी अंश में कम नहो-पर क्या किया जाय अपने यहां विद्या का प्रचार सर्व-साधारण में घट जाने से इस ओर लोगों का ध्यानही नहीं जाता-मूल्य इस पुस्तक का ।)

मनोविज्ञान ॥

रा० — रा० — गणपति जानकीराम दुबे बी. ए. लिखित और काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित -- पुस्तक यह अपने ढंग की बिलकुल नई और निराली है हिन्दी साहित्यका भंडार भरने को ऐसी पुस्तकों की उपयोगिता अवश्यमेव कही जायगी—ग्रन्थकार ने इस पुस्तक के रचने में मालूम होता है अच्छा परिश्रम किया है—साधारण पढ़ने वालों को तो पहले यही नहीं मालूम हो सक्ता कि मनोविज्ञान क्या वस्तु है किन्तु जिन्हे Scholar छात्र होने का दावा है उन्हे अल-बत्ता इस पुस्तक में यथोचित आनन्द मिल सक्ता है ग्रन्थकार को इस पुस्तक रचने पर काशी नागरी प्रचारिणी सभा की ओर से मेडल मिला है इसी से मालूम हो सक्ता है कि कहां तक पुस्तक यह उत्तम है मूल्य ॥)

पृथ्वी राजरासो ॥

कविराज चन्दवरदाई कृत-हम नहीं जानते राहिसा के अनुरागियों को इसकी कौन सी बात पसन्द है; पढ़ने वालों को इसमें किसी प्रकार का रस नहीं मिल सक्ता; इसकी अटपटी कविता और ऊबड़ खाबड़ शब्दों में न जानिये क्या अटपटांग भाव भरे गई है कि इसकी दस

लैन पढ़ने से जी ऊब जाता है और फिर इस पुस्तक के छूने का मन नहीं चाहता–हम तो जानते हैं कि इसके प्रेमी मोहनलाल पंड्या और बा–श्यामसुन्दरदास को भी इसका भावार्थ नहीं खुला यदि खुला होता तो इसपर कुछ टिप्पणी या तिलक अवश्य करते केवल Different reading पाठान्तर लिखने से क्या फायदा हुआ–हां यह कह सक्ते हैं कि जैसा अंगरेज़ी में चासर लोग इस लिये पढ़ते हैं कि पुरानी अंगरेज़ी के लेख का क्या ढंग था वही बात पुराने समय की हिन्दी के लेख का क्रम जानने के लिये रासिसा भी कदाचित् हो मूल्य ॥।)

वेदान्त तत्वसार ॥

बराबांधिपति श्रीमान् राव महाबीरप्रसाद नारायण सिंह देव बहादुर कृत भाषा अनुवाद युक्त; इस पुस्तक के पढ़ने से श्री स्वामी रामानुज के सिद्धांतानुकूल वेद की श्रुतियों का संग्रह किया गया है और रामानुज संप्रदाय में क्या भलाई है सो इससे अच्छी तरह प्रगट हो जाती है ॥

मनोदूत ॥

यह पुस्तक भी उक्त बराबांधिपति की रची हुई है जिसमें ग्रन्थकार की कवित्व शक्ति अच्छी तरह पर प्रगट हो जाती है–इसमें मन को दूत बना कर भगवंत् चरण सरोज की ओर भेजा है विषय इसका अवश्य उत्तम है भक्ति का उद्गार ऐसे रूखे ज्ञान के समय में जिसके पढ़ने से हो उसे हम अच्छाही समझैंगे ॥

ईश तथा केनोपनिषद् ॥

आर्योपदेशक पंडित बदुरीदत्त शर्मा कृत उक्त पंडित जी ने इसका अनुवाद अन्वय के क्रम पर बहुत अच्छा किया है मूल्य दोनों का =)॥ मेरठ के स्वामी यंत्रालय में छपी है ॥

अबला सन्ताप ॥

यह पुस्तक भी उक्त पंडित जी की रचित है इसमें विधवा विवाह के संबन्ध में न जानिये क्या २ गा गये हैं इन दिनों के संशोधकों में एक २ सनक सबको सवार रहती है इनको यही सनक सवार हुई और करीब १८० पेज की एक पुस्तक लिख मारा-विधवा विवाह चाहने वालों ने कभी यह भी सोचा है कि जिनका हम विवाह करना चाहते हैं उन कुलवती अबलाओं के यह कभी पसन्द आवेगा; दूसरे हम हिन्दुओं को अपनी शुद्ध रज वीर्य की पैदाइश का बड़ा घमंड है सो विधवा विवाह से कहाँ रह सक्ता है मूल्य ≡) मेरठ के स्वामी यंत्रालय में मुद्रित ॥

गंगा की नींद ॥

जिसे लाला मलिकराज भल्लाने उर्दू छन्द के ढंग पर बड़ी सुघराई से रचा है इसमें गङ्गा की नींद के बहाने मुसलमानों के समय से अब तक भारत में क्या उलट पलट हुआ सो दिखाया है पुस्तक पढ़ने लायक है यह छोटी सी पुस्तक इटावा में ग्रन्थकार को लिखने से मिल सक्ती है ॥

प्रेम शतक ॥

छवि और माहात्म्य वर्णन के शृंगार रस मिश्रित १०८ दोहे श्री वृन्दावन निवासी गो स्वामी श्री गोवर्द्धनलाल जी उपनाम प्रेम कवि कृत-इसको कविता और कवित्व शक्ति कहते हैं जो छटा और रस खड़ी बोली पड़ी बोली में कभी किसी भांत आवेहीगा नहीं-हमें तो कुछ ऐसीही भावना है कि मन को आकर्षण करना जो कवित्व का प्रधान अंग है वह कविता के इस पुरानेही पथ पर चलने से आ सक्ता है किन्तु इस समय के चतुर और प्रवीण नया रास्ता निकाला चाहते हैं अस्तु "कानोहानिः" ॥

गोपिका गीत ॥

रहस्य पञ्चाध्यायी की गोपिका गीत का छन्दोबद्ध शब्दार्थ अनुवाद श्री राधाचरण गोस्वामी कृत—कविता में कहां तक मनोहारी गुण है यह तो इसी से स्पष्ट है कि श्री राधाचरण कृत है जिन्हे ऐसाही कोई हिन्दी का रसिक होगा जो न जानता हो; हमे विशेष हर्ष इस कारण है कि उक्त गोस्वामी जी ने फिर लेखनी उठाई; इस हीन हिन्दी का अवश्यमेव सौभाग्य होना है ॥

आदर्श रमणी ॥

काशी में इन दिनों उपन्यास की बाज़ार खूबही गरम है ज़रा सा होश सम्हाला गूं गां करने आगाया कि उपन्यास लेखक बन बैठते हैं बँगला, मराठी, गुजराती से तर्जुमा कर पांचवें सवार में दाखिल हो जाते हैं—दूसरी बात उनको यह समाई हुई है कि ऐयारी या तिलिस्म उसमें नहो तो वह किसी कामही का न रहा किन्तु इस आदर्श रमणी का ढंग उन सभों से निराला है यह एक ऐतिहासिक उपन्यास है इस समय इसकी बड़ी ज़रूरत है कि पढ़ने वाले ऐतिहासिक घटनाओं से भी जानकार होते रहैं—उपन्यास पढ़ने वाले बहुधा साधारण योग्यता के लोग होते हैं इतिहास या पुरावृत्त के सम्बन्ध में जो कुछ उन्हे मालूम हो गया वह मानो विना प्रयास हाथ लगा—दसवें परिच्छेद में गोस्वामी किशोरीलाल ने नायक नायिका के नखसिख का वर्णन जिस क्रम से उठाया है वह गोस्वामी की प्रौढ़ लेखनी का बड़ा उत्तम नमूना है मूल्य ॥) मिलने का पता ज्ञानवापी बनारस—

भाषा लेखक ॥

जिसके द्वारा मनुष्य अपने मानसिक विचार का प्रकाश करता है उसे भाषा और जब वह व्याकरण के नियमानुसार अलङ्कारादि से अलंकृत हो लिखी या बोली जाती है तब उसे रचना कहते हैं। मनोगत

भाव शुद्ध न होने से रचना शुद्ध नहीं होती। यदि रचना को विविध विभूषण भूषित शरीर समझो तो भाव को प्राण कहना पड़ेगा। जिस प्रकार प्राण के विना शरीर की शोभा वृथा है उसी प्रकार भाव के बिना रचना है। केवल यमक से रचना विशुद्ध नहीं हो सक्ती है।

विषय भेद से रचना भी युक्त हो जाती है। यदि यह भेद न हो तो सुष्टु रचना किसे कहते हैं यह जानना कठिन हो जायगा। भाषा की गति विवक्षा के आधीन तो है ही पर जहां २ भाव की गूढ़त्ता वा सरलता अपेक्षित हो वहां २ उसमें गूढ़ता व सरलता अवश्यमेव आनी चाहिये लिखने में जैसे स्थल बिशेष पर अक्षर या शब्द को बड़ा या छोटा बनाते हैं वैसेही स्थान विशेष पर भाषा भी गूढ़ वा सरल रहनी उचित है। जिस भाषा में ऐसे स्थूल सूक्ष्म का भेद नहीं है उसे सुभाषा कहना पक्षपात है। किसी २ भाषा की रचना में संस्कृत शब्दों का प्रयोग अत्यधिक होता है जिससे भाषा संकुचित हो रचना को खङ्कीर्ण कर भाव को भी संकुचित कर देती है। जिस शब्द के प्रयोग करने से जहां मनोभाव सुगमता से प्रगट हो सक्ता है वहां उसी शब्द का प्रयोग करना उचित है। शब्द अच्छा है पर उससे जब भाव प्रकाश में बाधा आपड़ती है तो ऐसे शब्द के उपयोग से कोई लाभ नहीं जिनका मत यह है कि रचना संस्कृत शब्दही से शुद्ध होती है तो कहा जायगा कि वे भ्रम में पड़े हैं। उन से भाषा की उन्नति होनी कठिन है; भाषा का पुष्ट होना तभी संभव है जब संस्कृत के साथ अन्यान्य भाषा का उचित आदर हो। ऐसा नहो कि संस्कृत शब्द के साथ दूसरे शब्द का समास तक कर दिया जाय जैसे कोई २ जगत् जाहिर अन्न पानी इत्यादि लिखते हैं ऐसा न हो कर यातो संस्कृत शब्दही रक्खा जावे या मुहाविरे के अनुसार अन्यान्य भाषा के शब्द॥

कोई ज्ञान हो विना शिक्षा के प्राप्त नहीं होक्ता; यही बात भाषा ज्ञान में भी है; शिक्षा के बिना लेखक बनना हास्य एवं पाप है; जो

जन हिन्दी भाषा की रचना को सहज मानते हैं वे उसके सुलेखक कदापि नहीं हो सक्ते। उनको उचित है कि जैसा पाया वैसा लिख दिया को छोड़ उसकी योग्य शिक्षा लाभ करैं॥

भाषा का असल रूप उस का प्रचलित मुहाविरा है। मुहाविरे से भाव का विकाश जैसा सुगम और सुबोध्य होता है वैसा कालम का कालम रंग देने से नहीं हो सक्ता। विशुद्ध रचना के लिये उत्तम आदर्श का अनुशीलन अवश्य कर्त्तव्य है। आदर्श को शिक्षा का सोपान समझना चाहिये। इससे बड़ी भारी सहायता मिलती है पर जैसे पांव में शक्ति न रहने से सोपान रहते भी कोई ऊपर नहीं चढ़ सक्ता उसी प्रकार मानसिक भावों का दारिद्र होने से आदर्श भी वृथा हो जाता है। जिसका चरित्र कलुषित है उसका हृदयगत भाव शुद्ध नहीं होगा। मन सद्भाव पूर्ण न होने से रचना चित्ताकर्षक कदापि न होगी अतएव सुलेखक होने वाले को उचित है कि वह भाषा का पूर्ण ज्ञान लाभ करे, पक्षपात को छोड़ सब के सिद्धान्त को समझे और उत्तम आदर्श का अनुगामी हो। सिवाय इसके वह अपने लेखों की उचित समालोचना भी कराया करे; आज कल समालोचक समाज में सभी टाँग अड़ाया चाहते हैं यह ठीक नहीं है जो इसके योग्य हो वही इस काम का पूर्ण अधिकारी है दूसरा नहीं॥

अनन्तराम पांड़े
रायगढ़॥

क्याहोगा।

इस प्रश्न का उत्तर अति दुष्कर है–पुरान के ऐतिहासिक वर्णनो से क्या होता है इसका दृष्टान्त तो बहुत ठौर मिलता है पर क्या

होगा इसकी ठीक कहीं से नहीं लगती—महाभारत के बन पर्व में महाराजा युधिष्ठिर से प्रेत ने चार प्रश्न किये थे—"कावार्ता च किमाश्चर्यं"—क्या होता है अचरज क्या है? इत्यादि—इसके उत्तर में महाराजा युधिष्ठिर ने कहा था—"भूतानि कालः पचतीति वार्ता"—प्राणी मात्र को काल बटोर २ अंधेरे गड्ढे में फेकता जाता है यही हो रहा है—पर क्या होगा न इसके पूछने ही का साहस उस प्रेत को हुआ न महाराजा युधिष्ठिर सरीखे बुद्धिमान् को पूछने पर भी इसका उत्तर सूझता—सच है मनुष्य के लिये भविष्य का ज्ञान सर्वथा महा निशा का अन्धकार है गोरख धन्धा है पहेली है मुअम्मा है रिड्डिल है हज़ार २ टटोला करो सिर पचाते रहो कुछ पता नहीं मिलता—कदाचित् भविष्य का ज्ञान होजाने से मनुष्य किसी काम का न रहेगा संसार के सब काम स्थिर होजांयगे यह समझ ईश्वर ने मनुष्य को भविष्य जानने की शक्ति नहीं दी—यदि प्रत्येक मनुष्य को यह मालूम होजाय कि आगे की घड़ी में दिन में महीने में साल में हम यह करेंगे और यही होगा तो इस संसार की क्या दशा होती—जीव की अल्पज्ञता और उस अलख अगोचर के अनन्त ज्ञान में अन्तर ही फिर क्या रहता? उधर प्राणनाथ महाराज दशरथ को स्वर्ग बास होगया जीवन सर्वस्व रामचन्द्र सरीखे सत्पुत्र बन को सिधारे कैकेयी सी सौत डाकिनी सापिन सी बन डसने को बैठी है उस समय अथाह दुःख सागर में मग्न कौशिल्या देवी हाय अब "क्या होगा" यह कहते भी जो जीती रहीं इसमें निर्लज्ज प्राण को जीविताशा पिशाची ही कारण थी—बानरों की असंख्य सेना ने लङ्का को सब ओर से घेर लिया यह सुन ललना जाति सुलभ भीरुता के बशीभूत हो मन्दोदरी अपनी सहचरी सखियों से बोली एक बन्दर जो पहिले आया था सो तो प्रलय का सा दुन्द मचा गया अब कि बार तो इतने आये हैं सखियो अब "क्या होगा"—इन्द्रजित की शक्ति से विह्वल लक्ष्मण अचेत पड़े थे वैद्य सुखेण नाड़ी देख बोला सूर्योदय के पहले हनूमान जी संजीवनी लेकर न लौटे तो इनके जीने की कोई

आशा नहीं है यह सुन रामचन्द्र अधैर्य हो बोले हाय अब "क्या होगा" माता सुमित्रा को क्या मुह दिखावेंगे—मेरे सौ हीरा लाल एक एक कर भीम के भीम पराक्रम में सब के सब बलि चढ़ गये इसे याद कर दुखित गांधारी सोचने लगी हाय "क्या होगा" अब मैं अपने बुढ़ापे को कैसे झेलूंगी—दर्शनी हुंडी आ गिरी मिती पुजने को आई रुपया तैयार नहीं न होसक्ता है आधी रात को शाहजी सोच के मारे बिछौने पर करवटें लेते हैं और ठंढी सांसें भर कहते जाते हैं हाय दिवाला पिटा कैसे इज़्ज़त रहे अब "क्या होगा"–सावन का महीना है झड़ी पर झड़ी लगी है पानी एक दम की फुरसत नहीं देता; आधीरात है हाथ पसारे नहीं सूझता सन्नाहटा छाया हुआ है आंख की पुतली घर का चिराग़ एकलौता लड़का है हाल की ब्याही बहू घर में बैठी है बस समझ लीजिये रामही से अयोध्या है बेटे को हैज़े ने आकर दाबा हांथ पांव ठंढे होगये ऐसे समय रांड़ बुढ़िया मा ढाढ़ास छोड़ छाती पीट २ रोने लगी हाय "क्या होगा" मेरा बुढ़ापा कैसे कटैगा—चश्मबद्दूर रूस रेल और तार बराबर बैठाता तार बांधे चला आरहा है ईश्वर नकरे वह दिन आवे कदाचित् आगया तब "क्या होगा" दुष्यन्त ने अपने रनवास में लेने से इनकार किया, कण्व के चेले भी छोड़ चले, अभिज्ञान वाली मुन्दरी अपनी अंगुलियों में न पाय, शकुन्तला व्याकुल हो बोली हाय सर्बनाश अब "क्या होगा"–हिन्दुस्तान में ठौर २ कपड़े की कल और भांत २ के कारखाने जारी होते जाते हैं बोध होता है एक दिन ऐसा भी आवे कि देशी चीज़ों के आगे विलायती कारीगरी का अनादर होने लगे तब मेंनचेस्टर वाले तथा विलायत के अन्य कारीगरों का "क्या होगा„–बिलायत के थोड़े से सौदागरों की एक कंपनी यहां व्योपार करने की इच्छा से आई थी उन्हे क्या मालूम था कि आगे चलकर "क्या होगा„ कि हमीं लोग इस देश के पूर्ण स्वामी बन बैठेंगे–महरानी को यह क्या मालूम था कि हमारे प्रोक्लेमेशन का

अर्थात् हम काली गोरी प्रजा को एक नज़र देखती हैं असर "क्या होगा,, कि हिन्दुस्तानी बात २ मे उसी प्रोल्केमशन की बुनीयाद पर झगड़ने लगते हैं-सुतराम् "क्या होगा,, महा निशा के इस अन्धकार को टटोल भी लिया तो "क्या होगा,,-आपने इस पहेली का मतलब खोला भी तो "क्या होगा,,-और हमने उस हल किये हुये का मतलब को जाना भी तो "क्या होगा,,-यह सब व्यर्थ की टांय२ है होगा वही जो ईश्वर को मंज़ूर है "हुइ है वही जो राम रच राखा, को करि तर्क बढ़ावे शाखा"

समान शील व्यसनेषु सख्यम् ॥

किसी बुद्धिमान् का सख्य अर्थात् मैत्री के संबन्ध में कथन है कि मैत्री उसी की ठीक है और पूरी २ निभती है जिन दो व्यक्तियों का शील स्वभाव एक सा है या जिन दो की सुख दुःख की अवस्था एक सी है--सच तो है दो असमान व्यक्ति जो गुण कर्म बात व्यौहार या वय में एक दूसरे के तुल्य नहीं हैं उनकी मैत्री पहले तो कभी संभव नहीं कि हो और यदि हुई तो अवश्य कुछ न कुछ दाल में काला है-जैसा दरिद्र और धनाढ्य, तरुण और बालक, स्वामी और सेवक, ऊंचे ओहदे का हाकिम और एक साधारण प्यून, जप्यल खुर्रांट बुढ़िया और कुल कामिनी इत्यादि इत्यादि-पहले तो दरिद्र और धनाढ्य का सम्बन्धही क्या यदि हुआ तो लोग यही कहेंगे यह दरिद्र राता दिन बाबूसाहब की खुशामद में लगा रहता है इनकी हां में हां मिलाय किसी तरह अपना पेट पाल रहा है-योंही बाबूसाहब पर भी लोग शक करेंगे कि इनको क्या कोई अपने बराबर का नहीं मिलता था जो इस परम दरिद्र निष्किंचन से इनकी इस कदर दांत काटी रोटी है तो इस गाढ़ी मैत्री का अवश्य कोई कारण और गुप्त भेद है-तरुण और बालक की दोस्ती तो बाल सखित्व के नाम से बदनाम हई है "बाल सखित्व मकारण हास्यम्" मूर्खता की पहिचान है हमको इस बारे में कहने की कुछ ज़रूरतही नहीं है-स्वामी और सेवक में

सेव्य सेवक भाव के अनुसार स्वामी का अपने सेवक पर छोह और सेवक का अपने स्वामी की भक्ति और नमकहलाली अलबत्ता उचित और प्राकृतिक है किन्तु दोनो में यदि बराबर की दोस्ती हुई तो कभी ख़ाली अज़ इस्लत न होगी—इख़्तियार वाले ऊंचे ओहदे के हाकिम की एक साधारण प्यून के साथ गाढ़ी मोहब्बत से जरूर शक पैदा होता है कि साहब बहादुर राशी हैं और यह चपरासी जो इनके बहुत मुंह लगा है इसी के ज़रिये भुक्तान होता है—ईश्वर न करै किसी भलेमानुष गृहस्थ के घर को कोई खुर्रांट बुढ़िया तक ले दामोदर गुप्त के कुट्टनी मत को पढ़ने से अच्छी तरह मालूम हो सक्ता है कि इन बुढ़ियाओं में क्या २ गुन हैं—

इसी बराबर की दोस्ती के सिलसिले में हम पति पत्नी में असमभाव और दोनों का चित्त एक दूसरे से न मिलने से क्या परिणाम होता है सो दिखाना चाहते हैं-शिक्षा के द्वारा हमारा अनेक उपकार हुआ किन्तु विचार के देखो तो इस समय के कृत विद्य युवक जन के पक्ष में यह नितान्त अप्रीत कर बोध होता है—सच पूछो तो इन बेचारों का दाम्पत्य भाव किसी भांत उनके अनुकूल नहीं है; अच्छे वंश के युवक अंगरेज़ी भाषा में ऊंची से ऊंची उपाधि प्राप्त कर सभ्यता के सिरमौर बन बड़े से बड़े ओहदे पाय मन मानता धन कमाने लगे; किसी बात की त्रुटि न रही गाड़ी घोड़ा नौकर चाकर धन धान्य से पूर्ण हो समाज में प्रचुर मान और प्रतिष्ठा के अधिकारी हुये; किन्तु गुलाब में कांटा की भांत घर की स्त्री बहुधा उनके जीवन में कंटक तुल्य हो जाती है—पति बड़ा कष्ट सह अपने बित्त के अनुसार गहने कपड़े लाता है जिस्में वह अपनी सहधर्मणी को प्रसन्न रक्खे किन्तु अपना सब कला कौशल समाप्त कर देने पर भी उन्हें प्रसन्न न करसका-कारण यह कि पति अपनी गुणगरिमा और उच्च शिक्षा के द्वारा सभ्यता की अन्तिम सोपान पर चढ़े हुये हैं; स्वामी राजनीति विज्ञान और दार्शनिक विषयों पर कथोपकथन और बड़े २ लेक्चर झाड़ते हैं स्त्री को गोबर पाथने से

छुट्टी नहीं मिलती; बाबूसाहब का उद्देश्य रहता है कि किसी भांत अपने देश और जाति का कुछ उपकार करें घर वाली का उद्देश्य यही होता है कि मंत्र यंत्र तंत्र के द्वारा जैसे हो सके स्वामी को अपना वशीभूत और दास किये रहें-कहीं ऐसा भी देखने में आता है कि स्त्री साक्षात् लक्ष्मी और सावित्री है पर स्वामी उसका महा मर्कट रूप साक्षात् राक्षस मिला जिसका साथ पाय आजन्म उस बेचारी को दुःख झेलते बीता तो सिद्ध हुआ कि समान शील और व्यसन ही एक दिल होने का सहकारी है; बिना जिसके हुये सच्चा प्रेम और संसार का सच्चा सुख कभी मिली नहीं सक्ता इस्से "समान शील व्यसनेषु सख्यं,, बहुतही सयुक्तिक है-

---

यहां के हिन्दुओं के लिये लज्जा की बात॥

ईसाई लोग, हिन्दुस्तान में हमलोगों को धर्म की शिक्षा देने को आये हैं। इस धर्म की शिक्षा के फैलाने के लिये वे लोग तरह २ की चेष्टाकिया करते हैं। बाज़ारों में संध्या को उपदेश देते हैं मिशन की ओर से मदर्से खोलते हैं जिस में अक्सर देखने में आता है कि बड़े बड़े धुरन्धर पण्डितों के बालक भी पढ़ने जाते हैं। इस में संदेह नहीं कि वे लोग अपना मतलब पूरा करने के लिये हर तरह से प्रयत्न करते हैं-जब इन लोगों का असली भेद सबों पर खुल जाता है तब ये लोग एक नया जाल फैला कर बिचारे भोले भाले मनुष्यों को फंसाया करते हैं। प्रति बर्ष १०-१२ भूले भटके पेटार्थू अथवा बिषय लोलुप हिन्दुओं को अपने धर्म में मिला कर अनाप शनाप डींगे मारना अब मिशन उच्च कर्म चारियों को पसन्द नहीं है-विलायत की बड़ी बड़ी मिशन सोसाइटी को यह बात मालूम हो गई है कि भारतबासी हमारे धर्म के महत्व को जानकर अपना धर्म नहीं छोड़ते बल्कि धर्म छोड़ने के अन्य कारण हैं तो भारत बर्ष में रहने वाले मिशनरीज़ ने अब इन सब

बातों का असली भेद खुल जाने से हिन्दू धर्म की जड़ काटने लायक़ नया उपाय बिचारा है। अर्थात् अपनी मेमों को हिन्दुओं के घरों में पढ़ाने के मिस से भेज कर भारत बासी ललनाओं के धर्म सम्बन्धी दृढ़ बिश्वासों को हिलाना आरम्भ किया है। और साथ ही हिन्दू मुहल्लों में छोटी २ लड़कियों को पढ़ाने के लिये मदर्से खोल कर उन छोटी २ बिशुद्ध दुग्ध के फेन ऐसी कोमल हृदया बालिकाओं के मस्तिष्क में योरप और अमेरिका की नई सभ्यता का रंग जमाय हिन्दुओं के परम्परागत आचार बिचारों को मूलसे नष्ट करने का प्रयत्न करना आरम्भ किया है–सनातन धर्म को जो क्षति महमूद गज़नवी और औरङ्गज़ेब की तलवारों ने नहीं दी उससे कहीं अधिक क्षति हिन्दू धर्म की इन मेमों के द्वारा हो रही है। हिन्दू धर्म की अच्छी से अच्छी बातों को दोषयुक्त सिद्ध करना तथा ईसाई धर्म की गन्दी से गन्दी बातों का बड़ा महत्व समझाना ज़नाना मिशन का प्रधान लक्ष्य है। पेड़ की डालियां छट जाने से पेड़ कालान्तर में फिर हरा भरा हो सकता है किन्तु यदि वृक्ष की जड़ ही काट डाली जाय तो वह सूख कर किसी काम का नहीं रहता–मनुष्यों के संस्कार यद्यपि इमकिरस्तानी शिक्षा की दीक्षा सेअधिक दूषित हो गये हैं, तथापि घर की स्त्रियों के आचार बिचार जैसे के तैसे बने रहे ईसाई धर्म का प्रभाव हिन्दू धर्म पर अधिक नहीं पड़ने पाया किन्तु अब जिस उपाय का अवलम्बन इस ज़नाना मिशन ने किया है उस को देख कर हमको इन हिन्दुओं की बिद्या तथा बुद्धि को धिक्कारने की इच्छा होती है; पढ़े लिखे, हमारे हिन्दू भाई जानते होंगे कि ये मिशनरी लेडियां अन्त में कैसा चौका फेरती हैं और लड़कियों को कैसी पुस्तकें पढ़ाती हैं जिन पुस्तकों मे हिन्दू धर्म पर सब ओर से चौका फेरा गया है–क्रिश्चन लिटरेचर सोसाइटी की पुस्तकें इन बालिकाओं को पढ़ाने से भविष्य मे क्या हानि है इसे कौन नही जानता स्थानाभाव से दो एक टुकड़े उन पुस्तकों के हम दिखाते हैं–जैसा "कोई मूरख पण्डित के साथ खाना खाने से पण्डित

नही हो जाता वैसाही एक हिन्दू इसाई के साथ खाने से इसाई नही होजाता"-परमेश्वर के सिवाय कोई देवी देवता नही है-गंगा नहाने से भीतर का पाप नही कटता-इत्यादि पुस्तकों का भाव इन बालिकाओं के मन में बैठ जाने से आगे को कैसा बुरा परिणाम होनहार है इसे साधारण बुद्धि वाले भी जान सकते हैं परतौभी इन सेनों को अपने यहां न आने का कोई प्रबन्ध नहीं करते हमे इसका बड़ा पछतावा है।

एक हिन्दू ॥

कन्याबोधनी ॥

चार भाग में-इसका उद्देश्य इसके नाम ही से प्रगट है-वर्तमान समय का प्रवाह देख यही मालुम होता है कि लोगों का ध्यान स्त्री शिक्षा की ओर अधिक है और स्त्री शिक्षा की आवश्यकता समझी गई है जिस के लिये लोग चेष्टा भी कर रहे हैं-ग्वालियर के प्रजा वत्सल नीति परायण महाराज का भी इस ओर ध्यान गया है ऐसा उत्तम शासन कर्ता पाय यदि वहां की प्रजा अपनी सामाजिक उन्नति करने में आना कानी और शिथिलता करै तो इसमें हम प्रजा ही का दोष कहेंगे-ग्वालियर के महाराज ने हिन्दी को अपने यहां की अदालतों में प्रचलित कर प्रजा के साथ हार्दिक्य सहानुभूति प्रगट की है हमभी उक्त महाराज को इसका बहुत २ धन्यवाद देते हैं-अब यह एक दूसरा उदाहरण हमें उनके प्रजा वात्सल्य का देख पड़ा परिणाम दर्शियों ने हमारी अवनति का बड़ा कारण स्त्रियों में शिक्षा का अभाव कहा है-स्त्री शिक्षा के अभाव से सैकड़ों बरन सहस्त्रों कुटुम्ब अशान्ति या चिन्ता के घर बन गये हैं-पढ़ने लिखने से कहाँ तक उनमें शऊर और शाइस्तगी न आवेगी-कर्कशा पन और लड़ना भिड़ना छोड़ अपने कुनबे वालों का जीवन उभारू न करेंगी-

ग्वालियर के महाराज ने इन्ही बातों को सोच बिचार जान पड़ता है कन्यां धर्म बर्द्धनी सभा स्थापित की है-इसी सभा ने अपने सुयोग्य

और अनुभव प्राप्त उपदेशक पं०-केदारनाथ जी चतुर्वेदी से कन्या बोधनी पुस्तक बालिकाओं की आरंभिक शिक्षा के लिये अति उपयोगी निर्माण कर प्रकाशित की है-इसकी सरल भाषा और विषय जो इसमें दिये गये हैं कन्याओं के लिये बड़े उपयोगी हैं दाम पहले भाग का -) दूसरे =) तीसरे ≡) चौथे का ।) मिलने का पता-पं-केदार नाथ चतुर्वेदी उपदेशक कन्या धर्म वर्धनी सभा लश्कर ग्वालियर है॥

प्रदीप में विज्ञान Advertisement देने का नियम॥

बहुधा हम से लोग अपना विज्ञापन छपवाने के लिये पूछा करते हैं हमने अब तक इसकी कोई नियमावली नहीं स्थिर किया था किन्तु अब लोगों के बार २ पूछने पर यह नियम स्थिर करते हैं-

एक बार के लिये एक पृष्ठ का अग्रिम ४)

एक बार के लिये आधे पृष्ठ का अग्रिम ३)

एक बार के लिये चौथाई पृष्ठ का अग्रिम २)

दो बार के लिये एक पृष्ठ का अग्रिम ७)

दो बार के लिये आधे पृष्ठ का अग्रिम ५)

दो बार के लिये चौथाई पृष्ठ का अग्रिम ३)

तीन बार के लिये एक पृष्ठ का अग्रिम ९)

तीन बार के लिये आधे पृष्ठ का अग्रिम ७)

तीन बार के लिये चौथाई पृष्ठ का अग्रिम ४)

विज्ञापन देने वालों को स्मरण रहे कि बिना अग्रिम मूल्य दिये उनका विज्ञापन कभी न छापा जायगा-

हिन्दीप्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै
बचि दुसह दुरजन बायुसों मणिदीप सम थिर नहि टरै ॥
सूझै बिबेक बिचार उन्नति कुमति सब यामें जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० २६
सं० ५-६-७
प्रयाग
मई, जून, जूलाई
सन् १९०४ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार

पं० रघुनाथ सहाय पाठक के प्रबन्ध से

यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥=)
समर्थों से मूल्य अग्रिम ३।=) ——०*०—— पीछे देने से ४।=)

पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज १=)

——:००:——



हिन्दीप्रदीप

जि० २६ सं० ५-६-७ } प्रयाग { मई, जून, जुलाई सन् १६०४ ई०

हिन्दुस्तान में तालीम का नफा नुकसान ॥

इस बिषय पर कुछ लिखने के पहले इतना सूचित कर दिया चाहते हैं कि तालीम से हमारा मतलब अंगरेज़ी शिक्षा से है-अंगरेज़ी की शिक्षा से हमारा क्या२ उपकार हुआ सो कौन नहीं जानता यह तालीमही है जिसने हमे पशुप्राय हैवान से इनसान बना दिया-कुछ दिन हम और बिना तालीम रहते और जैसा हलचल राज बिराजी हिन्दुस्तान में अंगरेज़ी राज्य के पहले सब ओर फैल रही थी वैसीही अब तक बराबर बनी रहती तो हमारी क्या दशा होती इसे खयाल करने से भी एक बार हृदय कांप उठता है-परमात्मा

सर्वव्यापी को हमारी इसी में कुछ भलाई मंजूर थी कि ऐन वक्त पर अंगरेज़ यहां कदमरंजा हुये और तालीम का प्रवाह बह निकला; तौभी रुपये में चौदह आना बिलकुल अपढ़ कुन्देनातराश और जाहिल जट्ट अब तक भी बने हैं-उस समय तो लोग सोलहो आने निर्विद्य थे विद्या केवल थोड़े से ब्राह्मणों में थी और लाला लोग पढ़े लिखे होते थे; ब्राह्मण जो पढ़ना लिखना सीखे होते थे वे अपढ़ के तुल्य थे पठन पाठन की परिपाटी बिगड़ जाने से उनका पढ़ना लिखना कुछ अजीब ढंग का था; जिसका नमूना ब्राह्मणों में अधिकांश अब तक मौजूद है जिनके पढ़ने का दोही प्रयोजन है या तो मेढ़े की सी लड़ाई लड़ैं या कोरे बाह्मन बन उन्मत्त धनियों के सामने हांथ पसार उनकी जै मनाते हुये बछिया पुजाया करैं-जिस्से उनका ब्रह्मवर्चस नित्य२ घटताही गया तपः शौच सन्तोष स्वाध्याय सिद्धान्त की दृढ़ता देश पर ममत्व आदि गुण लेश मात्र को भी न बच रहा-हिन्दी का तब तक कहीं प्रादुर्भाव भी न हुआ था चिरस्मरणीय सुग्रहीत नामधेय बाबू हरिश्चन्द्र को अक्षय स्वर्गबास हो जिन्हों ने अपना सर्वस्व अर्पण कर हिन्दी को उठा के खड़ी किया-उस समय लाला लोग फारसी उर्दू पढ़ते पढ़ाते थे जिस क्रम का पढ़ना पढ़ाना पुराने लाला लोगों में था उसका नमूना बहुधा अब भी पाया जाता है जिसे हम विद्या कभी न कहैंगे क्योंकि विद्या के बड़े२ लाभ चित्त वृत्ति का विमल होना, धर्म में रुचि, न्याय की ओर झुकावट, परमार्थ में निष्ठा, हम कौन हैं, हमे क्या कर्तव्य है, अपना देश, अपनी जाति, अपनी रीति नीति, आदि बातों में अपना पन आना; सो सब उर्दू फारसी का अनुशीलन किये हुओं में कहीं नाम को भी नहीं है-बहार दानिश यूसुफ़ जुलेखा सी किताबों के पढ़ने का और क्या अंजाम हो सक्ता है-दूसरे मुसल्मान बादशाहों के अनर्गल शासन का असर नुमाइश ज़ाहिरदारी कूटचर्या विषय लंपटता यही सब उनकी बुद्धि और विद्या का रसीला फल हुआ-लाला लोग इस समय राज काज में प्रविष्ट और अगुआ थे इसलिये उस

समय की राजकीय विद्या फारसी इनकी बपौती सी हो गई जिसके अनुशीलन का पूर्वोक्त परिणाम इन्ही पर विशेष व्यापा और पढ़े लिखे तथा सभ्य या शाइस्ता भी यही समझे गये—इस समय के तालीम पाये हुओं में यह तो हम न कहेंगे कि वे बिल्कुल दोष दूषित नहीं हैं क्योंकि सहबास और उदाहरण का बड़ा असर होता है बहुत कुछ पढ़ने लिखने पर भी जिन लोगों में या जैसी समाज में वे रहते हैं उसके अनुसार और उनके ढंग पर उन्हे चलना पड़ता है फिर भी थोड़े से ऐसे निकल आवें गे जिनमें शिक्षा का सच्चा असर आ गया है और वेही सुशिक्षित के नाम से प्रसिद्ध हो रहे हैं जिनके कई क्लास हैं॥

एक वे हैं जो अपने को आज़ाद मान बैठे जो अदृष्ट के किसी तरह कायल नहीं हैं जिनके मत में परलोक या इस दृश्य जगत् का कोई परिचालक हई नहीं—दूसरे वे जिन्हों ने तै कर रक्खा है कि अपनी ज़िन्दगी चैन और आराम से कटै पाप पुण्य धर्म अधर्म न्याय अन्याय यह सब ऐसे लोगों की दन्त कथायें हैं जो सर्वथा दिल के कमज़ोर और निष्पुरुषार्थी हैं " प्रज्ञा पौरुष हीनानां जीविकेति बृहस्पतिः " मन में जिनके सदा यही भावना रहती कि किसी तरह साहब लोगों में हमारा नाम भी दर्ज होजाय—"हैम नेटिब हम कब तक कहलावे गा कैसे हम इस खंदान को तोड़ अलग हों; हिन्दुआनी या हिन्दुओं की रीति नीति सब घिन और ऊब पैदा करने वाली चीज़ें हैं,, इत्यादि— एक तीसरा क्लास इनका और भी है जो अपनी पहुंच के अनुसार अपने को Truth seeker सत्यान्वेषी मानते हैं और सदा उनकी यही इच्छा रहती है कि सत्य क्या है सो खोजें; दूसरी बात सुशिक्षा के यावत् उत्तम गुण देश और जाति वात्सल्य; स्वत्वाभिमान; परस्पर की सहानुभूति; उचित अनुचित का विवेक आदि के जोश में भरे हुये संशोधन के ढंग पर अपने को सुधारने और आगे बढ़ने के लिये एक सहारा या अवलम्ब खोज रहे हैं जिससे किसी तरह समाज के बन्धन से छुटकारा पाय स्वछन्द हो जांय-बंगाल वालों को ब्रह्म समाज इस तरह का

सहारा मिलगया राजा राय मोहन रायन भी हुये होते तो कोई न कोई अपने मन की करने को निकल आता-हमारे इस प्रान्त और पंजाब वालों को स्वामी दयानन्द इस तरह का औज़ार हाथ लग गये-सच पूछो तो उक्त स्वामी जी के ऋषित्व का चोखापन मिटाने को ये लोग प्रधान कारण हुये; हमने उनका वह समय देखा है जब वे कौपीन मात्र शेष अवधूत वेश में रहते थे संस्कृत ही बोलते थे आर्ष ग्रन्थ पाणिनि व्याकरण और वेद के अद्भुत पण्डित थे-उस समय स्वामी जी प्रतिमा का तो खण्डन करते थे किन्तु वैदिक कर्म श्राद्ध और यज्ञ आदि का बहुत अच्छा प्रतिपादन करते थे-कुशाग्र बुद्धि के थेही दाना को इशारा काफी होता है कहा भी है ॥

"जले तैलं खले गुह्यं पात्रे दानं मनागपि ।
प्राज्ञे शास्त्रं समायाति विस्तारं वस्तुशक्तितः" ॥

"जल में तेल, खल में छिपाने की कोई बात, योग्य पात्र में दान, बुद्धिमान् में शास्त्र, वस्तु की शक्ति के अनुसार अधिक फैलता है" इन लोगों की बातें सुन २ इनके गुरू बनने को आधुनिक सभ्यता और नये विज्ञान के सिद्धान्तों और उसूलों को वेदों से सिद्ध करने के प्रयत्न में प्रवृत्त हुये-रेल तार टेलीफोन सब वेद से सिद्ध करने लगे; यूरोप के वैज्ञानिक बहुत सी विज्ञान सम्बन्धी बातें तब तक इजाद न कर सके थे नहीं उन्हें भी स्वामी जी वेदों से सिद्ध कर दिखाते-कदाचित् स्वामी जी अंगरेज़ी पढ़े होते तो ऐसी भूल न करते-संसार में मान और प्रतिष्ठा पाने की लालसा ऐसी प्रबल होती है कि बड़े २ एकान्त सेवी योगियों को भी योगपथ से डिगा देती है-अस्तु स्वामी जी तथा उनके अनुयायी जो कुछ करते हैं उसमें हमारी कोई क्षति नहीं है यदि दूसरों को गालिप्रदान न करते और उनके साथ ऐसी रुखाई से पेश न आते; जो कहो उनको भी तो लोग अवाच्य कुवाच्य कहते हैं और घिन तथा शत्रुता की दृष्टि से देखते हैं; तो शठस्य शाठ्यम् बड़े लोगों को शोभा

नहीं देता रिफार्मर और संशोधकों का बहुत बड़ा दर्जा होता है संशोधक को धैर्य धारण कर मौनावलम्ब किये अपना काम करते जाना चाहिये "हाथी अपनी चाल चला जाता है कुत्ते भूंका करते हैं,, और यदि इतना धैर्य न हुआ तो अवश्य उस संशोधन कर्त्ता में कुछ त्रुटि है-ईसा इसी संशोधन निमित्त जान तक खो बैठे-कहा है"

"स्थिरा शैली गुणवतां खलबुध्या नवाध्यते।
रत्नदीपस्य हि शिखा वात्ययापि नशाम्यति"॥

खलों की निन्दा से गुणवानों के बंधे हुये क्रम में बाधा नहीं पहुंचती रत्न दीपक की जगमगाती ज्योति कैसा ही अंधड़ बहै नहीं बुझती इसी खण्डन मण्डन और दान्त किट्टन का यह फल हुआ कि आर्य समाज-अब वैसी उन्नति नहीं कर रही है वल्कि हमारी हिन्दू समाज में कुछ उभाड़ आ चला है अक्सर सभायें और पाठशालायें स्थापित होती जाती हैं-हमको तो किसी सभा संप्रदाय मत मतान्तरों के झगड़ों से कुछ प्रयोजन नहीं है जो कोई कुछ करते हुये देख पड़े उसी के साथ मिल बजना-मसल है "जहां देखै हंडा परात तहां गावैं सारी रात" प्रयोजन यह कि जिस समय लोगों की जिस ओर जैसी झुकावट होती है उसी के अनुसार उन्हें रहनुमा करने वाले भी मिल जाते हैं तो सिद्ध हुआ कि स्वामी जी आर्य समाज के अग्रणी कर आड़ मात्र के लिये थाप दिये गये हैं वास्तव में इस समय के संशोधक करना वही चाहते हैं जो उन्हे पसन्द है और जिसमें उन्हे आज़ादी मिल सक्ती है-और यह आज़ादी कहां तक तालीम से नुकसान पैदा करने वाली हुई इसे प्रवीण पाठक स्वयम् सोच सक्ते हैं-सच तो यों है कि हमारे पढ़े लिखे इतनी आज़ादी को काम में न लाय इन्द्रियाराम न हो आत्म त्याग Self sacrifice में प्रवृत्त हों तो बड़ा उपकार हो, और सच्ची देश भलाई कर सकें पर उन्हे यह क्यों पसन्द होगा-

वर्षाऋतु ॥

अद्भुत गुण शालिनी अनन्त घनवती इस वर्षाऋतु को देख जगदीश जगन्नियन्ता की विचित्र महिमा चित्त पर अङ्कित होती है–जब मार्तण्ड अत्याचारी राजा की भांत अपने सहस्त्रों करमण्डल को पसार लोगों के चिरसंचित जीवन रसधन को बड़े निर्दय भाव से खींचने लगे–जब भगवान् मयूख माली सूर्य ने मुसलमान बादशाहों की तरह बीर प्रसू बीराङ्गना भारत माता का सर्वस्व लूट उसको निःस्व की भांत शुष्कप्राय कर डाला–जब असहाय दुर्बल और दीन हीन भारतीय प्रजा का अगम्य अपार शोक सागर मर्यादा उल्लंघन कर अश्रुधारा में न प्रगट हो पसीने के द्वारा एक २ अंग से बह निकला–जब ऐसे दुर्दान्त दिन कर राज के असंख्य असहनीय कार्यों को न सह कर असहाय प्रजा ने भक्त वत्सल दीनोद्धारक दीनवन्धु जगच्छरण्य उस बड़े राजा परमेश्वर की शरण लिया; और दुर्दान्त दुर्ग्रह ग्राह पीड़ित गज की भांत रक्षा के हेतु उसे आर्तनाद से पुकारा तब मन से निकली हुई करुणोत्पादक प्रार्थना को सुन दया मय दया सागर ने मानो आज अपनी दया दृष्टि द्वारा वर्षाऋतु का प्रादुर्भाव करा इस अनाथ भारतीय प्रजा को सनाथ और अनुग्रहीत किया है ॥

वर्षा का आरंभ होते ही इस चंचल चित्त में कुछ अनोखे भाव उत्पन्न होने लगे हैं–मरकत मणि सी शोभयमान हरियाली से धरती हरी २ देख आनन्दाश्रु परिप्लुत जुड़ाने हुये नेत्र अपने सन्मुख एक नये युग का आविर्भाव सा पाने लगे–लोचन सुहावनी मेंघों की सघन घटा को देख जान पड़ता है भारत माता के सन्ताप निवृत्यर्थ मानो महाराज घनश्याम के पार्षद्गण बैकुण्ठ से उतरे आ रहे हैं–अथवा पाखण्डियों और कुतर्कियों की कठहुज्जत से वेद विद्या का गौरव घटते देख और अपने चार शिष्यों की वेद मार्ग स्थापन की अद्भुत शक्ति जान मानो श्याम मूर्ति भगवान् कृष्णद्वयपायन अपने समान गुण और

वर्णें वाली असंख्यात शिष्य मण्डली को साथ लिये सब ओर से दौड़े चले आ रहे हैं-अधिक वर्षा से वेग गामिनी नदी और नालों ने भूमि संक्रान्त मार्ग को दुर्गम कर डाला मानो पाखण्ड कलुषित कुमार्ग सा उसे जान भगवान् वेद् व्यास वायु वाहन पर चढ़ आकाश मार्ग का अवलम्बन कर रहे हैं-मेघों की सस्वर गर्जना को सुन ऐसा जान पड़ता है कि महामुनि व्यास महाराज मानो गगन प्राङ्गण में वेदों का उच्च स्वर से उच्चारण कर रहे हैं-आहा क्याही अनुपम दृश्य है घन की सुन्दर सुहावनी गर्जना सुन विरही मयूर धार्मिक वेश की भांत गर्दन उठा २ बड़े ऊंचे स्वर से चिल्लाय चिल्लाय आनन्द प्रकाश कर रहे हैं-वेचारा सूर्य तो एक निराली शोचनीय दशा में जा पड़ा उसका बादलों की ओट में बैठ कर चक्षु जल की धारा बहाना इस बात की साक्षी दे रहा है कि निरपराध प्रजा को व्यर्थ सन्ताप देने से उसे भी सन्तापित और शोक ग्रस्त होना पड़ता है-वारिदों की सार गर्भित गर्जना सुन मेढ़क बहुत से धर्म विरोधियों की तरह अपना कथन निस्सार मान व्यर्थ की टर टर करते हुये कूद फान्द मचाये हैं-विकट बन में तृणावली संछादित सनातन मार्ग छिप जाने से पौराणिक कल्पनाओं की भांत अज्ञ अविशेषज्ञों के चित्त में विशेष भ्रम पैदा कर रहे हैं-नद और नदियां अपनी मर्यादा उल्लंघन कर ऐसही उत्पथ में जा पड़ी हैं जैसे संस्कृत भाषा के ज्ञान शून्य नवशिक्षित समाज के लोग उत्पथ में जा पड़ते हैं किन्तु इन्द्र धनुष को देख ऐसा जान पड़ता है कि देवराज इन्द्र महाराज अपने दैत्यान्तक धनुष को तान गर्ज गर्ज इन उच्छृंखल समाज वालों को समुचित दण्ड देने के लिये उद्यत हुये हैं-तर्क के घने अन्धकार में भक्ति चपला का रूप धारण कर कभी २ चमक जहां तहां धर्म का प्रकाश कर रही है-श्रावण की कराल अन्धकारमयी अमावाश्या की रात में जैसा जुगनू उस अन्धकार के दूर करने को उद्यत हो वैसाही इस समय भेख मात्र से

पुजाने वाले निरावलम्ब हिन्दू धर्म को अवलम्ब देने के यत्न में लगे हैं नये२ लेक्चरारों के लेक्चर के समान अठवारों की लगातार झड़ी उबा देती है उस समय सूर्य देव का दर्शन ऐसा सोहावना मन भावना मालूम होता है मानो चिरकाल की लौ लगने के उपरान्त अपने इष्ट देव का दर्शन मिला हो—सहृदय पाठक शोक नशावन मन भावन बर्षा ऋतु देख मन में ऐसी अनेक कल्पनायें उठती रहैं तो आश्चर्य क्या है ॥

द्वारिका प्रसाद चतुर्वेदी

वर्षा बर्णन की एक दूसरी बानगी ॥

एक दिन सांझ को अपनी जीर्ण झिनगेदार खाट पर पड़ा पाताल यात्रा का अनुभव कर रहा था और सोच रहा था कि आधा आषाढ़ बीतने पर आया पर बर्षा का अभाव ही अब तक देखने में आता है इसका क्या कारण—इस पर अनेक ऊहा पोह मन में उठ रहा था और प्रकृति के रंग मंच पर बादलों का भांत२ का स्वांग लेकर आना और अपने जादूगरी का पिटारा खोल फिर गायब हो जाना और फिर दूसरा स्वांग धर के आना इत्यादि मेरे मन की एकाग्रता को अपनी ओर ऐसा खींच लिया था कि बहुत चाहा कि किसी विषय पर मन को झुकावें किन्तु चित्त इन बादलों के स्वांग पर ऐसा आबिष्ट हो रहा था कि इस ओर से किसी तरह न हटा—इन बादलों में पहले एक बड़ा भारी रुई का ढेर सा सामने देख पड़ा जिसके बगलही से एक श्याम वरण का नीला बादल मनुष्य के आकार का एक छोटासा डंडा हाथ में लिये प्रगट हुआ—मुझे कुछ ऐसा भान हुआ कि प्रकृति के नेपथ्य में कोई जादूगर का भेख धरे आया है—वह आतेही हाथवाले डंडे को उस रुई के ढेर के एक कोने में मारा और चट निनानबे वर्ष की एक बुढिया मैं अपने चरखे के प्रगट हो गई और उसी ढेर में से रुई ले२ कातने लगी

पास के पेड़ों पर बैठी चिड़ियाओं का चहचहाना मानो उस चरखे के कातने का शब्द था ढेर की आधी रुई भी न खसकने पाई थी कि उसी ढेर से अञ्जनियां का नूर जमाये हुये मेघ तुल्य कृष्ण काय "कर शर धनुष बान धर कांधे" एक पुरुष प्रगट हुआ—मुझे सन्देह होने लगा कि ये स्वर्गगामी द्रोणाचार्य तो नहीं हैं जो इस बुड्ढी को पाण्डवों की माता कुन्ती समझ अपने पुत्र अश्वत्थामा का बदला इसी से चुकाया चाहते हैं-पर यह शंका मेरे चित्त में देर तक न ठहरी द्रोणाचार्य यवनाचार्य जी निकले और अपना बायां पैर फैला अपने अस्त्र को उसी ओटी हुई रुई पर लगातार चलाने लगे-पूरबा हवा का चलना और वृक्षों की पत्तियों का खड़खड़ाना मानो धांय २ धुक २ की आवाज़ थी मुझे कुछ ऐसा मालूम हुआ कि यह मनुष्य बड़े २ लिहाफ और पर्दै उन रुइयों से भर २ वर्तमान जापान युद्ध की सेना के लिये फेक रहा है और इसके हाथ की सफाई देख यही बोध हुआ कि बीसवीं शताब्दी की बड़ी २ मेशीनों की काररवाइयां सब हेच और तुच्छ हैं-थोड़ी देर में देखतेही देखते यह सब गायब हो गया और एक दूसरा ही दृश्य नेत्र के सामने प्रगट हुआ—नीले आकाश में चारो ओर से घन घोर घटा ऐसी उमड़ आई जैसा किसी भाग्यवान् पुरुष को जब भाग्य अनुकूल होता है तब कामयाबी सब ओर से उमड़ती चली आती है मिट्टी छूते सोना होजाता है—जैसा कोई प्रसिद्ध विजयी अपनी सब सेना लिये समराङ्गण में आ उपस्थित हो वैसा ही पुष्करावर्त आदि मेघगण के वंशधर जल और स्थल को एकाकार कर देने का बीड़ा उठाये हुये वेदान्तियों का ब्रह्म सदृश सम विषम भाव मिट जाने को धारासार बरसने लगे—बीच २ जो घड़ घड़ाहट और बिजली चमक उठती थी सो मानो आकाशस्थ वृहत् समराङ्गण में बीरों का सिंहनाद या तोपों के छूटने की आवाज़ गूंज रही हो; बिजली की जो चमक थी सो मानो योद्धाओं का ज़िराबख़र या उनके हाथ की सिरोही की चमक थी—इसी भांत देर तक घमासान होता रहा इन बादलों की

ढिठाई और उपद्रव कम होते न जान सूर्य देव जिसे रोकने को अपना कुछ बस न चलते देख अस्ताचल को पधारे–रात का अन्धकार अन्यायी राजा की अनीति सा सब ओर छा गया अभिसारिका नायिका इस अन्धियारे को अपने अनुकूल समझ अपने प्रीति पात्र से मिलने को संकेत स्थान के लिये उठा धाई–मेघगण जिसके मुख चन्द्र को विद्युत् नेत्र के द्वारा देख संदेह में आये हाय गज़ब हुआ चन्द्रमा जो हमारे आकाश की शोभा था क्या मूशलधार पानी में पड़ नीचे गिर पड़ा यह समझ मेघ बड़े ज़ोर से चिल्ला उठे–थोड़ी २ देर के बाद जो एकबारगी बिजली चमक उठती है और बादल बड़े शब्द से गरजते हैं मैं समझता हूं यह वही है–

"निरीक्ष्य विद्युन्नयनैः पयोदो मुखं निशायामभिसारिकायाः। धारानिपातैः सह किन्नु वान्तश्चन्द्रोयमित्यार्ततरं ररासे" ॥

कहावत है–"किसी को बैगन बावले किसी को बैगन पथ्य"–अभिसारिकाओं को इस वर्षा में बहुधा प्रिय समागम का सुख मिलता है किन्तु बिरहिणियों को बिरहानल का अधिक सन्ताप सहना पड़ता है इसी सन्ताप की दशा में कोई बिरहिणी कह रही है–

"पीउ पीउ रटत पुकारत है कहा पीउ; पीउ पीउ को सन्देसो मोहि आय के सुनायदे;। हाहा बलि पौन गौन तेरो कहुं दिस है; ऐसे में रवन को भवन में बुलाय दे ॥ दूतिका ह्वै दामिन तू दौर वह देस जाय आनन्द के कन्द श्री गोविन्द जू को लाय दे;। घेरि घेरि घन रस बरसत है सावन में एरे घनश्याम घनश्याम सों मिलाय दे–

इत्यादि इस बर्षा के सुहावने आगमन को अधिक पल्लवित न कर उसके वर्णन की एक दूसरी बानगी अपने वाचक वृन्द को अर्पण करता हूं पढ़ने में यदि रोचक न हो तो माफ़ करेंगे–M P.

प्राचीन ग्रन्थकारों का संक्षेप बिवरण।

गङ्गा दास

छन्दो मञ्जरी इनही कवि गङ्गा दास जी की बनाई हुई है। ग्रन्थ के प्रारम्भ और अन्त में कवि ने कुछ अपना पता बताया है—यथा आरम्भ में॥

देवं प्रणम्य गोपालं वैद्यगोपालदासजः।
सन्तोषातनयश्छन्दो गङ्गादासस्तनोत्यदः॥

अर्थात् भगवान् कृष्ण को नमस्कार कर के मैं गङ्गादास जो कि गोपाल दास वैद्य (पिता) का पुत्र और सन्तोषा (माता) का पुत्र हूं इस छन्दो मंजरी नाम ग्रन्थ को बनाता हूं।

और अन्त में—

सर्गै षोड़शभिः समुज्वलपदै र्नव्यार्थ भव्यांशयै।
र्येनाकारि तदच्युतस्य चरितं काव्यं कविप्रीतिदम्॥
कंशारेः शतकं दिनेशशतकद्वन्द्वं च तस्यास्त्वसौ।
गङ्गा दास कवेः श्रुतौ कुतुकिनां सच्छन्दसां मञ्जरी॥

अर्थात् गङ्गा दास कवि ने कवियों को प्रसन्न करने हारे अच्युत चरित नाम सोलह सर्ग वाले काव्य को बनाया जिस में बहुत से ललित पद तथा नवीन अर्थ और मनोहर आशय भरे हुए हैं। उसी कवि ने कंसारि भगवान् कृष्णचन्द्र की बाल लीला का जिसमें बर्णन है और सूर्य शतक भी सौ २ श्लोक के दो शतक अनूठी कविता के बनाये। उसी कवि की प्रतिभा का यह छन्दो मंजरी सुनने हारों के कर्णों को तृप्ति दायक होवे।

उपरोक्त श्लोकों से इस ग्रन्थ कर्त्ता के माता पिता और उसके विरचित ग्रन्थों के नाम विदित होते हैं। यह वैद्य वंश में उत्पन्न

हुए थे और यद्यपि लोग इन्हें महा कवि न कहें पर तौभी ऐसे भाग्यवान् थे कि इनका रचित छन्दो मंजरी नाम छोटा सा ग्रंथ भारत वर्ष भर में प्रचलित है। सुनने में आता है कि इनके पिता गोपाल दास वैद्य ने "पारिजात हरण" नाम नाटक बनाया है।

छन्दोमंजरी में एक श्लोक मुरारि मिश्र कृत 'अनर्घ्य राघव' नाम नाटक से उद्धृत मिलता है। अतएव अनुमित होता है कि ये मुरारि से प्राचीन हैं। पर इनका ठीक २ समय निरूपित नहीं होता। मुरारि का समय किसी किसी के मत में ख्रीष्टीय १२वीं शताब्दी है निदान कवि गङ्गा दास बारहवीं शताब्दी से अर्वाचीन अनुमित होते हैं॥

गङ्गाधर

इस कवि के रचित श्लोक गोविन्द पुर के एक शिला लेख में मिले हैं। उस शिला लेख में मिति शाके १०५९ अर्थात् सन् ११३७ ई० दी है। अतएव अनुमान होता है कि उसी समय में यह कवि विद्यमान था। लेख में यह कवि अपनी वंशावली भी कुछ लिखता है जिस से विदित होता है कि उसके प्रपितामह का नाम दामोदर, पितामह का नाम चक्रपाणि, पिता का नाम मनोरथ, चाचा का नाम दशरथ और भाइयों का नाम महीधर तथा पुरुषोत्तम है। एपिग्राफिया इण्डिका में इस लेख के सम्बन्ध में अनुमान किया गया है कि श्रीधर दास विरचित सदुक्ति कर्णामृत सन् १२०५ ई० में रचा गया।

विल्हण के विक्रमाङ्क देव चरित में भी एक गङ्गाधर कवि का नाम मिलता है। नहीं जान पड़ता कि यह गोविन्द पुर के शिला लेख वाले गङ्गा धर हैं वा दूसरा कोई॥ काव्य संग्रह में गङ्गाधर कवि विरचित 'मणिकर्णिकाष्टक' छपा है न जाने यह गङ्गाधर इनमें से कौन हैं॥

गुणाढ्य।

कथा सरित्सागर में इस कवि का उल्लेख किया गया है।

इनके विरचित ग्रन्थ का नाम वृहत्कथा है जिसे कि लोग बड़ाह कथा भी कहते हैं। कथा सरित्सागर में इन्हें कात्यायन और व्याड़ि का सम कालीन कहा है और कात्यायन का समय सन् ईस्वी के आरम्भ होने से ३१५ वर्ष पूर्व माना जाता है अतएव गुणाढ्य का भी वही समय निर्द्धारित होता है। पुरुष परीक्षा में विक्रमादित्य से बड़ाह नाम एक राजा की भेंट लिखी है यदि इसी बड़ाह की कथा गुणाढ्य ने लिखी हो तो सम्भव है वे विक्रमादित्य के नवरत्न वाले वर रुचि के समय में रहे हों!

जगद्धर के लिखने से जान पड़ता है कि गुणाढ्य ने महादेव जी से बड़ाह राजा की कथा को सुन के वृहत् कथा नाम ग्रन्थ बड़ाह के वर्णन में लिखा यदि यह बात शुद्ध हो तो गुणाढ्य ख्रीष्टीय छठवीं शताब्दी में विद्यमान् समझ पड़ते हैं। पर इस से और कथा सरित्सागर से बड़ा भेद पड़ता है। संभव है कि वररुचि के लिये कात्यायन नाम लिख गया हो किन्तु व्याड़ि के नाम में भूल नहीं हो सकती। इसी से निर्णय यही ठीक होगा कि गुणाढ्य सन् ईस्वी से ३१५ वर्ष पूर्व वाले कात्यायन के सम सामयिक हैं और वृहत्कथा जिसे कदाचित् भूल से लोग बड़ाह कथा कहते हों के रचियता हैं॥

गुणाढ्य कवि के प्राचीन होने में कोई सन्देह नहीं है गोवर्द्धनाचार्य ने अपनी आर्या सप्तशती ग्रन्थ में बालमीकि और व्यास के उपरान्त कवियों के नाम की गणना में तीसरा नाम इन्हीं का दिया है तद्यथा–

"अति दीर्घजीविदोषात् व्यासेन यशोपहारितं हन्त।
केनोच्येत गुणाढ्यः स एव जन्मान्तरापन्नः"॥

पैशाची भाषा जो प्राकृती भाषा का एक भेद है उसमें १ लाख श्लोकों में इन्होंने वृहत्कथासरित्सागर नाम का ग्रन्थ रचा है जिसे सोमदेव शर्मा एक काश्मीर के पण्डित ने २० हज़ार श्लोक में पिशाच

भाषा से अनुवाद स्वरूप लिखा है-जिस ग्रन्थ की अद्भुत कल्पना और पाण्डित्य है।

गोवर्द्धनाचार्य।

ये कवि गीत गोविन्दकार जयदेव तथा उमापतिधर आदि के सम कालीन हैं। गीत गोविन्द में जयदेव इनका उल्लेख कर के बड़ाई की है कि शृङ्गार रस की कविता लिखने में ये बड़े निपुण थे। इनका बनाया आर्या सप्तशती नाम एक ग्रन्थ है यद्यपि नाम से तो विदित होता है कि इस ग्रन्थ में आर्या छन्द के ७०० श्लोक होंगे पर काव्य संग्रह से जो छपा है उसमें ७३१ श्लोक हैं। गोवर्द्धनाचार्य ने निज रचित ग्रन्थ में अपने पिता का नाम नीलाम्बर लिखा है। इनके ग्रन्थ में बाल्मीक, व्यास, बृहत्कथा के रचयिता गुणाढ्य कालिदास, भवभूति, बाण आदि का नामोल्लेख मिलता है और ये सब कवि उमापति धर से प्राचीन हैं भी; अतएव उमापतिधर के सम सामयिक होने से इनका समय १२वीं शताब्दी का आरम्भ और मध्य भाग सिद्ध होता है॥

राढ़ देश में मल्लभूमि की राजधानी बिष्णुपुर है वहां के राजा के आश्रित मुरारि कवि शाके ११०० अर्थात् सन् ११७८ ईस्वी के पूर्व विद्यमान थे उसने अपने को गोवर्द्धन भट्ट का पुत्र बताया है। कौन जाने कदाचित् ये गोवर्द्धन आर्या सप्तशती के रचियता हों गोबर्द्धनाचार्य ने अपने शिष्यों में से एक का नाम उदयन लिखा है। ये प्रसिद्ध नैयायिक उदयनाचार्य ही हैं वा और कोई सो स्पष्ट नहीं जाना जाता॥

गोविन्द ठक्कुर।

चन्द्रदत्त मैथिल कृत संस्कृत भाषान्तर वाली भक्तमाला में गोविन्द ठक्कुर को काव्य प्रदीप का रचयिता बतलाया है। और यह भी लिखा है कि गोविन्द ठक्कुर मम्मट भट्ट से भेंट करने गये और उनको जूता पहिने और डाढ़ी गोल बनाये देख उन्हें आश्चर्य हुआ

कि ये मुसलमान् के वेश में क्यों रहते हैं। यदि भक्तमाला की बात सत्य हो तो मम्मट भट्ट के सम कालीन गोविन्द ठक्कुर भी १२ वीं सदी के अन्तिम वा १३वीं सदी के प्रारम्भ काल में माने जा सकते हैं। काव्य प्रकाश के टीकाकार कमलाकर भट्ट (जिसने सन् १६१२ ई० में शूद्र कमलाकर नाम ग्रन्थ रचा है) अपने ग्रन्थ में काव्य प्रदीप का नाम लिखते हैं। इस कारण गोविन्द ठक्कुर उसके पूर्व ही किसी समय में रहे होंगे ऐसा निश्चय होता है। गोविन्द ठक्कुर के एक चचेरे भाई की पांचवीं पीढ़ी में नरसिंह ठक्कुर हुए जिसने काव्य प्रकाश पर टीका लिखी है और जिसका निर्णीत समय १६६८ ई० है। प्रत्येक पीढ़ी को लगभग ३० वर्ष का समय देके यदि लेखा लगावें तो गोविन्द ठक्कुर का समय किसी प्रकार १६वीं सदी के प्रारम्भ वा पन्द्रहवीं सदी के अन्तिम भाग से पूर्व नहीं पड़ सकता। काव्य माला में इनका वंश-वृक्ष दिया है और इन्हें मिथिला का निवासी बतलाया है पर उनका निश्चित समय नहीं लिखा। केवल इतना ही अनुमान करके छोड़ दिया है कि गोविन्द ठक्कुर १६वीं शताब्दी के अन्तिम भाग से पिछले कभी नहीं हो सकते।

घटकर्पर।

महाराज विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नों में से घटकर्पर भी एक हैं। इस ने बाईस श्लोक का एक काव्य बनाया है जिसमें यमक रक्खे गये हैं। सुनते हैं कि इनने जब प्रतिज्ञा की कि जो कोई दूसरा कवि यमक में मुझे जीत लेतो मैं उसके यहां पानी भरूं तो कवि शिरोमणि कालिदास ने नलोदय काव्य बना के यमक में इन्हें परास्त किया। काव्य संग्रह में घटकर्पर काव्य और नलोदय दोनो छपे हैं। ग्रन्थों को देखने से इतना तो अवश्य झलकता है कि घटकर्पर कालिदास की नाईं कठिन और गूढ़ कूट से भरा यमक लिखने नहीं बैठे थे। इनका बनाया नीतिसार नाम का एक और ग्रन्थ भी है जिसके देखने से इनकी कविता शक्ति भली भांति प्रकट होती है। विक्रमादित्य के

सभासद होने से इनका समय भी सन् ख्रीष्टीय छटवीं शतक निर्णीत होता है ।।

२२ श्लोक का वर्षा के वर्णन में राक्षस काव्य नाम का एक छोटा सा काव्य है जिसका पहिला श्लोक यह है ।

"पश्याब्जदृक् गिरितटेषु कुमातृसाह्वान् भूदेवराजरिपुशत्रु समावधूतान् । वैश्वानराग्निजरिपुघ्नशराभिभूतैर्दृक्श्रोत्रशत्रु भिरुपसितपुष्पशोभाम्" ।।

राक्षस इसका नाम इसलिये है सि इसमें कूट भरा है-यह कदाचित् घटकर्पर ही का हो

चटक।

मनोरथः शङ्खदत्तश्चटकः सन्धिमांस्तथा ।
बभूवुः कवयस्तस्य वामनाद्याश्च मन्त्रिणः ॥

कल्हण राज तरङ्गिणी में लिखते हैं—

अर्थात् मनोरथ, शंखदत्त, चटक और सन्धिमान् ये राजा जयापीड़ की सभा के कवि थे । बामन आदिक पण्डित उनके मंत्री थे । निदान चटक कवि का समय राजा जयापीड़ का राज्य काल अर्थात् सन् ७७२ ई० से ८०३ ई० तक अनुमित होता है । ये कश्मीर निवासी थे । इनका बनाया कोई ग्रन्थ देखने वा सुनने में नहीं आता । हरि मोहन प्रामाणिक ने इनका नामान्तर चालक भी लिखा है ॥

चाणक्य ।

ये कवि पाटलिपुत्र के राजा चन्द्रगुप्त के मंत्री थे । विशाख दत्त ने मुद्राराक्षस नाटक में इनके कला कौशल दरसाये हैं । लोग कहते हैं कि ये नीतिशास्त्र के आचार्य कामन्दक के गुरु हैं और इनके बनाये ग्रन्थ का नाम "चाणक्य नीति„ है। गुणाढ्य ने वृहत्कथा में इनका नाम लिखा

है पर गुणाढ्य चन्द्रगुप्त के पूर्व हुये हैं और चाणक्य चन्द्रगुप्त के समकालीन हैं। यदि चाणक्य गुणाढ्य से पीछे हों तो कथा सरित्सागर की बात ठीक नहीं जंचती। निदान चाणक्य, को गुणाढ्य आदि के समकालीन मानने से यह बाधा दूर हो सकती है अतएव चाणक्य का समय भी ख्रीष्ट से ३१५ बर्ष पूर्व के लग भग मानना चाहिये। कथा सरित्सागर में जो कुछ चाणक्य के सम्बन्ध में है उसे फिर लिखेंगे।

चोर कवि।

ये प्रसिद्ध कवि काश्मीरी हैं इन्हीं का नामान्तर बिल्हण है। इनके बनाये ग्रन्थों का नाम चौर पञ्चाशिका, विक्रमाङ्क देव चरित और कर्ण सुन्दरी नाटिका हैं। इनने और भी कई ग्रन्थ बनाये होंगे पर उक्त तीन ग्रन्थों को छोड़ औरों का पता नहीं है। कुछ श्लोक सुभाषितावलि में बिल्हण रचित कह के उद्धृत हुए हैं। चौर पञ्चाशिका एक प्रसिद्ध ग्रन्थ है जिस की रचना के विषय में सुनने में आता है कि बिल्हण जब गुजरात के राजा बैरिसिंह की बेटी शशिकला के पढ़ाने के लिये गुरू नियुक्त किये गये तो उसके यौवन के सौन्दर्य पर मोहित होगये और उसके साथ गुप्त गान्धर्व बिवाह कर लिया। इस वृतान्त के राजा के कान तक पहुंचते बिलम्ब न लगा। राजा ने कवि को बध किये जाने की आज्ञा दी। बध के स्थान पर पहुंचते २ कवि ने अपनी प्रियतमा के बर्णन में पचास श्लोक रच डाले। राजा ने इस काव्य रचना का समाचार सुना और उसने न केवल कवि के प्राण ही छोड़ दिये बरन अपनी बेटी भी उसे ब्याह दी। परन्तु यह कथानक असम्भव जान पड़ता है क्योंकि गुजरात का राजा बैरिसिंह सन् ९२० ई० में मर गया और विक्रमाङ्क देव चरित द्वारा विदित होता है कि बिल्हण ख्रीष्टीय ग्यारहवीं शताब्दी के अन्तिम भाग में कश्मीर से बाहर निकले और उस समय गुजरात में चालुक्य बंश का भीमदेव का

पुत्र कर्ण राज राज्य कर रहा था। इतना तो अवश्य सिद्ध होता है कि बिल्हण को गुजरात में कुछ क्लेश मिला होगा जिसे उन ने सोमनाथ जी का दर्शन करके भुला दिया। जान पड़ता है कि इस समय सोमनाथ की वह शोभा न रही होगी जैसी कि महमूद ग़ज़नवी की चढ़ाई के पहिले थी जैसा मार्शमयान आदि इतिहास लिखने वालों ने बर्णन किया है। यदि ग़ज़नी के लुटेरे के पूर्व बिल्हण ने सोमनाथ का दर्शन किया हो तो संभव है कि सन् ९२० ई० में वैरिसिंह के समकालीन रहे हों। किन्तु न तो राज तरङ्गिणी और न विक्रमाङ्क देव चरित (जिन्हें हम कथानक की अपेक्षा अधिक प्रमाणिक मान सकते हैं) इस बात के सिद्ध होने में कुछ सहायता देते हैं। राज तरङ्गिणी के द्वारा ज्ञात होता है कि काश्मीर के राजा कलश ने सन् १०६४ ई० से लेके सन् १०८८ ई० पर्यन्त राज्य किया। इसी राजा के समय बिल्हण कश्मीर देश को छोड़ भ्रमण के लिये बाहर निकले। विक्रमाङ्क देव चरित द्वारा जाना जाता है कि बिल्हण मथुरा, कन्नौज, बनारस, प्रयाग, अयोध्या धारा, गुजरात आदि देशों में घूमते हुए सेतुबन्ध रामेश्वर तक जा पहुंचे थे॥

बूल्हर साहिब अनुमान करते हैं कि बिल्हण लगभग सन् १०६५ ई० में भारतवर्ष के भिन्न २ राजाओं के दरबार में गये होंगे और अन्त में जाके पश्चिमी चालुक्य राजा विक्रमादित्य के यहां ठहरे जिनके वर्णन में उनने विक्रमाङ्क देव चरित नामक काव्य बनाया। पश्चिमी चालुक्य राजा विक्रमादित्य छठवां सन् १०७६ ई० में राज गद्दी पर बैठा। विक्रमादित्य के पिता का नाम सोमेश्वर था। विक्रमादित्य के उत्तराधिकारी का नाम भी सोमेश्वर ही मिलता है और इसके राजगद्दी पर बैठने का समय सन् ११२७ ई० है॥

बिल्हण ने विक्रमाङ्क देव चरित में अपने बंश का कुछ वर्णन भी किया है और अपने पुरखों का निवास स्थान खोनमुख नाम कश्मीर

का एक गांव बतलाया है। कश्मीर के खोनमुख गांव में कौशिक गोत्र में उत्पन्न वेद शास्त्रादि में निपुण मुक्ति कलश नाम एक पण्डित थे। मुक्ति कलश के पुत्र का नाम राज कलश और राज कलश के बेटे का नाम ज्येष्ठ कलश था। ज्येष्ठ कलश की पत्नी का नाम नागा देवी था। यही नागा देवी बिल्हण की माता थीं। बिल्हण के जेठे भाई का नाम इष्टराम और कनिष्ठ भाई का नाम आनन्द था॥

बिल्हण शरीर से बहुत सुन्दर थे। यदि चौर पञ्चाशिका का कथानक सत्य हो तो अचरज नहीं कि राज कन्या इनके गुणों में से सौन्दर्य को प्रधान समझ इन पर मोहित हुई हो॥

निदान बिल्हण प्रसिद्ध कश्मीरी कवि थे और कर्ण सुन्दरी नाटिका के आरम्भ में इनने मङ्गला चरण में नागा नन्द की नाईं जिन (अर्हन देव) से सभासदों के कल्याण की प्रार्थना की है। इनका समय ख्रीष्टीय ग्यारहवीं सदी का पिछला भाग मान लेने में कोई अड़चन नहीं है॥

कुछ लोगों का मत है कि चोर कवि एक और भी हैं जो गुण सिन्धु राजा के पुत्र थे। पर उनके विषय में भी बिल्हण की नाईं राज कन्या पर आसक्ति और अन्त में छुटकारे का वर्णन है। यदि यह बिल्हण से भिन्न कोई कवि हैं तो इनके समय का कुछ भी पता नहीं है। 'कवि चोर मयूरकौ, इस श्लोक की पंक्ति के द्वारा यदि चोर को मयूर का समकालीन मान लें तो चोर भी मयूर के समान ख्रीष्टीय सातवीं सदी के प्रारम्भ में वर्तमान माने जा सकते हैं॥ ह०-सं०-सि-

---

वेंकटेश्वर की विपरीत भावना।

अब धर्म की रक्षा में कहीं से कुछ भी कोर कसर बच न रहेगी इसलिये कि अब इसके स्थापक और सहारा देने वाले वेंकटेश्वर मुस्तैद हुये हैं जिसके संपादक का ओर से छोर और नख से सिख तक हमसे

कुछ छिपा नहीं है—हमारे पत्र का जो कुछ गौरव है वह वेंकटेश्वर प्रेसों के मिटाये नहीं मिट सकता सम्पादक का अपनी स्वच्छन्द अनुमति प्रकाश करने में संकुचाना कैसा? हमारी समझ में समाचार पत्र का यह कर्तव्य नहीं है कि अपनी समाज में जो बिगाड़ है उसे बिगड़ा हुआ न कह उसकी प्रशंसा करता जाय और ग्राहकों के मन की कह अपना पाकेट पूर्ण करे--अस्तु वेंकटेश्वर का लक्ष्य केवल रुपया कमाना है तब ऐसी कोई संशोधन की बात जिसमें लोग उन से रूठ पत्र लेने से मुह मोड़ बैठें उसे कब वे चाहेंगे कि उसका सुधार हो बरन ऐसों का संपादक ही बनना अयुक्त है सच है—

"विधिरेव विशेषगर्हणीयः करट त्वं रट कस्तवापराधः।
सहकारतरौ चकार यः सहवासः सरलेन कोकिलेन" ॥

——

घर दुआरी और पानी का महसूल।

पानी का महसूल योंहीं इतना सख़ रक्खा गया है कि ग़रीबों को देते बहुत गढ़ा रहा है जिस मकान की जो कुछ हैसियत है उसके अनुसार लिया जाय तब भी देने वालों को इतना न अखरै—अभी हाल में जो मकानों की जांच की गई सो बहुधा ऐसे समय जब प्लेग शहर में फैला था और लोग इधर उधर भाग गये थे-जांच करने वाले न जानिये कौन महापुरुष थे उन्हों ने अपने मन से जिस घर की हैसियत तीन या चार रुपये महीने किराये की थी उसे पांच किसी २ का छ भी आंका जिसकी हैसियत १०) महीने किराये की थी उसे १५) महीने के हिसाब से हौस टैक्स और पानी का महसूल भी कायम कर दिया कहते हैं नोटिस टैक्स के बढ़ने की दे दी गई थी कि इतने दिनों के भीतर जिसे उजर करना हो करैं पर वह नोटिस कब दी गई किसी

को आज तक न मालूम हुआ—ऐसे २ टैक्सों की नोटिस देने का क्या यही ढंग है? फिर जिस समय जांच की गई मकान वाले को बुला के कह देना था कि तुम पर इतना इज़ाफ़ा टिकस का किया जाता है सो कुछ न हो अब उस इज़ाफ़ा किये हुये महसूल की उगाही की जा रही है—लोग बड़ी चीत्कार मचाये हुये हैं और यह दोचन्द टिक्कस सबों को बहुत ही बहुत अखर रहा है-इसकी फिर से जांच होनी चाहिये नहीं तो यह सरासर एक प्रकार म्युनिसिपलिटी की ओर से मनमानी हो रही है जो गवर्नमेंट के उदारशासन की किसी तरह शोभा नहीं है—गवर्नमेंट को इसकी नोटिस लेना उचित है और यदि यह सही हो तो इसका संशोधन किया जाय॥

सुशिक्षितों का अपढ़ समाज से क्यों मेल नहीं है।

हमारी अपढ़ समाज को ये सुशिक्षित बदनाम कर रहे हैं कि ये लोग हमे अपनी समाज से अलग किये हुये हैं किन्तु अपने दोषों की ओर एक बार भी दृष्टि नहीं देते-इनमे जो उनकी सच्ची भलाई का अंकुर होता तो कभी ये अपढ़ समाज वाले इन से न घिनाते और न इनका तिरस्कार करने की हिम्मत उन्हे होती—ये सुशिक्षित अपनी योग्यता का यही सारांश मान बैठे हैं कि इन अपढ़ों की ज़ीट उड़ावें और हिन्दुस्तान की तरक्की में बाधा डालने वाले इन्ही को सिद्ध करैं? किन्तु ऐसा नहीं है उनकी सच्ची भलाई जो इन्हे मंजूर होती तो ये हर तरह की हानि सह कर भी इनकी भलाई में प्रवृत्त रहते—खान पान का बिचार और परहेज़गारी छोड़ देनाही इनके मत में तरक्की करना है यही सब देख पुराने क्रम वालों को इनकी ओर से हिचक है—सच पूछो तो हिन्दू धर्म को कहीं से कुछ रोक टोक नहीं है आत्मदमन अलबत्ता इसमें इस ओर छोर तक पहुंच गया है जिसके न निबहने के भय से इतनी कैद इसके साथ लगा दी

गई हैं जो पूर्ण आत्मदमन किये हुये अपने सिद्धान्तों का और आचार बिचार की ओर ध्यान रक्खे हुये हैं उन्हें कहीं और किसी समय कोई रोक टोक नहीं है-पक्का हिन्दू टेम्स के तट पर बैठ वैसाही सन्ध्योपासन कर सक्ता है जैसा कलि कलुष बिध्वंसिनी पुण्यतोया गंगा जी के तट पर-हिन्दू धर्म में दृढ़ अपनी हानि सह कर प्रजा मात्र के उपकार साधन निमित्त विलायत गया हो तो अधिकांश हमारी समाज को उसकी ओर से कभी हिचक न होगी जिसके उदाहरण भी दो एक मौजूद हैं-पर जो बिलाइत जाते हैं और अब तक गये हैं वे तो यहीं से सिद्ध हो बैठते हैं आचार बिचार का लेश भी उनमें नहीं रह जाता सब कुछ खा पी आठो गांठ कुम्मैद हो तब इंगलैंड जाते हैं-इतनाही कसर रह जाती है कि ६ महीने भी वहां रह आये तो सब तरह पर साहब लोग बन गये एक मेम साथ ले वहां से लौटे और हम लोगों को जानवर समझने लगे-प्रजा का उपकार साधन ये क्या करैंगे बहुधा बेरिस्टर हो जाने का सहज लटका है उसी की चेष्टा में लगते हैं और यहां आय कानूनो के जाल में लोगों को फसाने में लग जाते हैं-तो निश्चय हुआ कि हमारा हिन्दूपन आगे बढ़ने में इतना बाधक नहीं है जैसा इन पढ़े लिखों का दुराचरण और कुढंग बिगाड़े हुये है जिनको निज का आराम और सुख तथा भोग बिलास की एकाग्र बासनाही जीवन का सार है-अपढ़ों का समूह जो दमन करने में औरों के लिये दर्पण के समान है सब भांत बहुत सी बातों में अपने को कसे रहते हैं विद्या न होने से इस समय की बहुत सी बातों को नहीं समझते हैं तो क्या इसलिये घिन के लायक हो गये? आप की सुशिक्षा और समझ किस काम की जो उस शिक्षा को काम में न लाये? तालीम और बर्तमान् सभ्यता के जितने दोष और बुराइयां हैं जैसा नेचरिये हो ईश्वर पर बिश्वासक न रहना, पान दोष खान, पान का बिचार मन से ढीला कर देना आदि अनेक बातों में अगुआ बनने को मुस्तैद पर साहस धैर्य अध्यवसाय आत्मत्याग आदि में काम पड़ने

पर दुम दबाय पीछे हटते हुये देखे जाते हो-जो सब बात घुणाक्षर-न्याय से किसी २ अपढ़ में बहुधा पाई गई हैं जिनका औदार्य, देश और जाति की भलाई के काम में प्रवृत्ति, दृढ़ता और साहस आदि सराहने के लायक है और सब के ऊपर उनमें चित्त की सरलता जो शिक्षितों की अपेक्षा विशेष प्रशंसनीय है जिनमें ज़बानी जमा खर्च बहुत कुछ है कर्तव्यता में कुछ नहीं ॥

श्रीमान् बरोदा नरेश को धन्यबाद।

श्रीमान् बरोदा नरेश को बहुत २ धन्यबाद है जिन्होंने अपनी प्रजा की सच्ची भलाई के ख्याल से अपने राज्य में बाल्य बिबाह की कुप्रथा को मिटाने के लिये हाल में १२ बर्ष की लड़की और १६ बर्ष के लड़के के ब्याहे जाने की कैद का कानून जारी कर दिया है अर्थात् १२ और १६ के भीतर जो लड़की और लड़के को ब्याहेंगे वे दंड के योग्य होंगे-ऐसाही हमारे और२ राजा लोग अपने२ राज्य में कानून जारी कर दें तो सर्वनाशकारी यह बाल्य बिबाह जड़ पेड़ से उखड़ जाय-अस्तु इस पर वेङ्कटेश्वर बेतरह चिढ़ जामे के बाहर हो गये हैं और अपनी बेतुकी तान को फिर से दोहरा डाला है-हम नहीं समझते इसमें कौन सी धर्म की हानि है क्या धर्म के मर्म को केवल वेङ्कटेश्वरही जानते हैं? महाराजा के साथ वेङ्कटेश्वर की कोई भीतरी खटपट हो तो हम नहीं जानते किन्तु ज़ाहिरा तो महाराज तथा उनके कामदारों की इसमें शुद्ध प्रजा की भलाई की इच्छा प्रगट होती है-हमारे प्रान्तों में तो १२ बर्ष के नीचे असमर्थ की क्या समर्थ लोग भी कन्या को नहीं ब्याहते ८ और ९ तो अब गया ऐसेही कोई निपट नासमझ "अष्टबर्षा भवेद्गौरी,, को मानने में श्रद्धा रखते हैं जहां ८ और ९ रहा वहां अब १२ और १३ रक्खा गया है-लिखने के जोश में दो एक ऐसे अश्लील शब्द महाराज वेंक्टेश्वर लिख गये हैं जो

समाचार पत्रों के लिये अनुचित है–रजस्वला को ब्याह एक ही माता पिता नर्क में जांयगे देश का देश जो नरक की यातना का अनुभव कर रहा है उद्धार पावेगा–हमारा यह अनुभूत है और वर्षों के मनन के उपरान्त हमने यह सिद्ध किया है कि जब तक बाल्य बिवाह न रोका जायगा और ऋषियों के समय का ब्रम्हचर्य फिर से देश में स्थापित न होगा हिन्दुस्तान का कल्याण कभी न होगा–बाल्य बिवाह कायम रख आगे बढ़ने की जितनी चेष्टा और प्रयत्न सब व्यर्थ हैं–कमसिनी में ब्याह को धर्म तो उक्त संपादक सिद्ध करते हैं ब्रम्हचर्य की मर्याद नष्ट होती है इसमें कितना अधर्म है इसकी उपेक्षा कर बैठे "अष्ट वर्षा भवेद्गौरी" को सम्पादक साहब स्मृति वाक्य मान रहे हैं हमे क्या अधिकार है कि हम उनके मन्तव्य को उनके मन से अलग करैं खास कर उस दशा में जब वे हमें धर्मच्युत कह रहे हैं–अधर्म को धर्म मानने में जैसी उनकी पालिसी है उसे हम सहस्र वार दण्डवत् करते हैं हम अपने बेधर्मही अच्छे पर इतना अवश्य कहे देते हैं और किसी बात पर वे अपने मन्तव्य पर जैसी चाहैं वैसी क़लम वे चलावें हम से कुछ प्रयोजन नहीं बिवाह के विषय को जब उठावेंगे हम उन्हें अवश्य टोकैंगे हम से रूठे तो हई हैं और रूठ जांय हमको इसकी कुछ परवाह नहीं है–एक २ जनून सबको सवार रहता है किसी को विलाइत यात्रा का खब्त है; किसी को बिधवा बिवाह का पागलपन है; किसी को परदा उठा देने का मेनिया है; किसी को देश की बनी चीज़ों के बर्तने का जनून है, हमें बाल्य बिवाह रुक जाने का ख़ब्त है अन्त में प्रार्थना है वेंकटेश्वर हमें माफ़ करेंगे आगे जैसी उनकी इच्छा–

यहां के लोगों के अल्पायु होने का क्या कारण है।

सर्वमन्यं परित्यज्य शरीर मनुपालयेत्–चरक संहिता–

भारत का पहिले का इतिहास पढ़ने से प्रगट है कि पूर्व काल में यहां के लोग देवताओं के समान कान्ति वाले; विस्तृत प्रभावशाली; ईश्वर और धर्म पर श्रद्धाबुद्धि रखने वाले; विमल और उज्वल काया के दृढ़ शरीर वाले; पराक्रमी; सत्यवक्ता; सीधे स्वभाव के; तपः स्वाध्याय निरत; दया दान जितेन्द्रियता यम नियम और ब्रह्मचर्य में परायण थे-रागद्वेष रहित परिश्रमी और अभिमान शून्य थे यही कारण था कि वे दीर्घजीवी होते थे ८० या ९० कोई २ सौ तक पहुंचते थे; किन्तु आज जो हम अपने देशवालों की उमर का औसत निकालते हैं तो ५० वर्ष से अधिक औसत नहीं निकलता-पहले के लोगों में प्रथम युवा अवस्था उपरान्त प्रौढ़ावस्था फिर पीछे बुढ़ापा आके दखल जमाताथा अब जवानी के बादही बुढ़ापा आ दबा लेता है जिस्से जल्द जर्जरित कलेवर हो थोड़ेही दिनों में उनका दीप निर्बाण हो जाता है; सो किसी एक प्रान्त में नहीं वरन देश भर का यही हाल है कि लोगों की उमर कम होती चली जाती है-इन दिनों राज नैतिक तथा सामाजिक सुधार; व्यापार की वृद्धि; धन संचय और नाम पैदा करने की तरकीबें देश भर में सब ठौर देखने में आती हैं किन्तु हमारे किसी संशोधक का ध्यान इस ओर कभी नहीं जाता कि इसका निर्णय करते कि यहां की ३० करोड़ प्रजा की आयु क्यों दिनों दिन क्षीण होती जाती है और लोग क्यों अल्पायु होते जाते हैं-इन दिनों के लोगों के शरीर के ढांचे देखने में कमज़ोर हैं बल और पराक्रम रसातल को धंसा चला जाता है पेट से निकलतेही चश्मे की हाजत होने लगती है २० या २२ वर्ष की उमर में सिर के बालों में सुफेदी आने लगती है-पीप का सा रंग चेहरा ज़र्द बरसों के बीमार से मालूम होते हैं शरीर की जब यह दशा है तो Mental faculties मानसिक विचार शक्तियों का क्या कहा जाय-बढ़िया और चटकीले स्टाइलों में दवा-

इयों का विज्ञापन पढ़ विचारवान् यहां के लोगों की शारीरिक अवस्था तथा मानसिक शक्तियों का अनुमान अच्छी तरह कर सक्ते हैं-कहीं पर नपुंसकतापहारक घृत बिक रहा है; कहीं प्रमेह की अव्यर्थ महौषधि की धड़ाधड़ बिक्री हो रही है; कहीं मालसा की चित्र बिचित्र नोटिस मुहल्ले२ चिपकाई जाती है; छोटा या बड़ा कोई नगर न बच रहा होगा जहां दवाखाना Medical Hall दिन रात खुले न रहते हों; परिणामदर्शी ज़रा ध्यान देकर सोचैं जहां के लोगों की गिज़ा दवाइयां हो रही हैं वहां पराक्रम साहस ओज बीर्य बिचार शक्ति कितनी होगी और ऐसों से देश या जाति का क्या उपकार हो सक्ता है-बल और बीर्य की इतनी मुहताजगी हो गई कि हम को दवाइयों का सहारा लेना पड़ा तो बस हो चुका बल और बीर्य की इति श्री हो गई॥

जिस देश में साठा पाठा कहे जाते थे वहां अब ५० बर्ष चलना अति कठिन हो रहा है-सोचना चाहिये कि हमारी इस शोचनीय गर्हित दशा का मूल या आदि कारण क्या है-बिचारते हैं तो पहिला इसका कारण दरिद्रता है; देश दिन२ धन से क्षीण होता जाता है उद्यम और रोज़गार सब भांत मारा पड़ा बल और पुष्टि के बढ़ानेवाले पदार्थ घी दूध आदि दुर्लभ होते जाते हैं कूरा अन्न खानेवालों के शरीर में कहां से ताकत आवे-दूसरे यह कि "जितं सर्वं जिते रसे,, दरिद्रता के कारण या जो कुछ इसका हेतु हो लोगों की ज़बान उनके काबू में न रही खाने पीने के पदार्थ तथा जीवन स्थिर रखने वाली बुद्धि धीरे२ घटने लगी और स्वाद लोलुपों के जिह्वा का स्वाद बढ़ गया; खान पान में संयम न रहा सब कुछ खाने पीने लगे-"आहारात्सत्वशुद्धिः,, योग दर्शन के इस सिद्धान्त को लोगों ने बालायताक कर दिया—खान पान का ज़रा बिचार न रख होटल को देवस्थान और वहां के भोजन को महाप्रसाद मानने लगे-

पहले लोग अपवित्र, उच्छिष्ट, बासी या सड़ा इत्यादि तमोगुणी भोजन जो बरकाते थे उसका यही कारण है कि भोजन का असर बुद्धि या दिमाग पर जल्द और बहुत बड़ा होता है; सहबा‍ह आदि का भी असर होता है पर भोजन का जैसा असर होता है उससे कम– इसी से लिख दिया गया "आहारात् सत्व शुद्धिः" तमोगुणी भोजन से तामसी स्वभाव के हो गये आलस्य जो तमोगुण का प्रधान अंग है बढ़ता गया; जो आलसी हैं जिनको मेहनत करने की आदत नहीं है वे थोड़ाही परिश्रम से थक जाते हैं; थकावट सुस्ती पैदा करती है थे ढ़े से परिश्रम में अधिक मिलने की लालच बढ़ती गई–लालच अधिक होने से एक को दूसरे के साथ स्पर्द्धा बढ़ती गई स्पर्द्धा से रागद्वेष पैदा हुये; झुठाई न्याय अन्याय का बिचार मन से ढीला पड़ गया; लोभ के सहकारी काम क्रोध डाह मद मात्सर्य भेद बुद्धि और अभिमान भी भरपूर कदम ज़माने लगे; निर्दयता हिंसा भय शोक झुंझलाहट आदि बुरी आदतों ने धैर्य साहस पुरुषार्थ दृढ़ता आदि को उखाड़ डाला– इस भांत ज्यों२ लोगों में उत्तम गुणों का लोप होता गया त्यों२ निर्बलता बढ़ती गई उधर दुराचरणों का परिणाम ईश्वर की कृपा भी कम होती गई प्रति बर्ष अनावृष्टि अतिवृष्टि होने लगी–समय पर बर्षा न हो कुसमय के पानी बरसने से जल और बायु दोनो दूषित हो गये जिनका संपर्क पाय यावत् प्राकृतिक पदार्थ पृथ्वी और जल आदि में पहले की सी उत्पादिका शक्ति न रही काष्ठ औषधियां तथा अन्नादि "औषध्यः फलपाकान्ताः" और बनस्पति वृक्ष आदि क्षीण बल के हो गये उनकी उपज कम होने लगी–उनकी पैदावार अन्न तथा तृण आदि के खानेवाले मनुष्य तथा और जीव जन्तु पशु पक्षी अल्पशक्ति और अल्पायु हो गये–उधर औषधियां क्षीण वीर्य हो गई इधर थोड़ी उमर में पूर्ण युवा होने के पहिले बाल अवस्था ही से स्त्री और पुरुष का जोड़ा मिलने लगा अल्पशक्ति अल्पवीर्य वाले सन्तान पैदा

होने लगे-हमारे बाबुओं में स्त्रियों को मेम बनाने की कामना ने गर्भ रक्षण की क्रियाओं को एकदम लोप कर दिया जो पैदा होते हैं आरम्भ ही से क्षीण बल क्षीणकाय बालक जन्मते हैं-ब्रम्हचर्य या वीर्य संरक्षण की रीति चालही देश से उठा दी गई इधर बिवाह कर दिया उधर स्कूल या कालेज में भरती कर दिये गये पढ़ने की कड़ी मेहनत और इमतिहान पास करने की चिन्ता बालकों को उभड़ने नहीं देती किसी तरह परिक्षोत्तीर्ण हुये तो मुग्ध मुखच्छवि के भूमि में पाव रखते ही १८ या २० की उमर तक दो एक सन्तान के बाप बन संसार की चक्की में छोड़ दिये गये घर ग्रहस्थी की फिकिर दामन गीर हो गई; घर में स्त्री एक ऐसी सांकड़ पांव में छोड़ दी गई कि उनका यह लोक परलोक दोनों फीका पड़ गया-गले पड़े बजाये सिद्ध के सिद्धान्त अनुसार सृष्टि बढ़ाने के काम में प्रवृत्त हुये जिसका फल यह हुआ कि उनके सन्तान उनसे भी अधिक निर्बल हुये और यही क्रम पीढ़ी दर पीढ़ी जारी रहा-परिणाम जिसका यही हुआ कि लोगों की आयु दिन २ घटती ही चली जाती है इस क्रमागत क्षीणता से हमारे विचार भी ऊट पटांग होते हैं जिस ऊट पटांग विचार से देश का या जाति का सुधार तथा भलाई कहां हो सक्ती है जब तक शारीरिक या मानसिक शक्तियां पुष्ट न होंगी हमारा दीर्घायु होना संभव नहीं दीर्घ जीवी होने को बिवाह की कुप्रथा रुकना पहिली बात है सो काहे को कभी होना है-द्वारिका प्रसाद-

---

सभ्यता क्या है।

हम बहुत दिनों से फेर में पड़े हैं कि सभ्यता किसको कहते हैं कई एक डिक्शनरियां उलट पलट डालीं बहुत से लम्बे चौड़े व्याख्यान और स्पीचों को पढ़ा डाला पर कहीं इसका कुछ पता न लगा तब सोंचते २ यह सोंचा कि किसी नई रोशनी वाले, या मोलवी अथवा

किसी पण्डित से पूछें तो निश्चय हो क्योंकि ऐसे शब्दों का डिक्शिनरियों में पता लगना कठिन है-अकस्मात् पहिले एक नई रोशनी वाले से भेंट हुई मैंने बड़े चाव से उन से पूछा "भाई मुझे एक शङ्का है निवारण कर दीजिये तो कहूं" बोल उठे "तुम बड़े बेवकूफ हो भला आज के दिन हमको फुरसत है किसी एतवार को आओ तो मैं बतलाऊं; मैने फिर कहा थोड़ी सी तो बात है आप चित्त दे कर सुनै तो कहूं। बोले तुम लोगों से बातें करना अपना बेश कीमत वक्त बरबाद करना है ख़ैर आज यही सही पर आप मेरे वाक में खलल न डालिये मैं वाकिङ्ग करता जाता हूं आप अपना प्रश्न करते चलिये मैं ऐन्सर करता जाऊंगा-मैं गरज़ मंदा तो थाही उनके पीछे २ चला पर वे आंधी सा भागते जाते थे मैंभी पतङ्ग का पुछल्ला सा उनके पीछे २ दौड़ता साथ हो गया और हांफते २ पूछा कि सभ्यता किसे कहते हैं?

उन्हों ने जवाब दिया तुमने बड़ी भारी बात पूछी मेरे साथ चले आओ अपने बङ्गले पर पहुंच कर बतलाऊंगा-ख़ैर उनके साथ ही साथ चार कोस का चक्कर लगाय बङ्गले पर पहुंचे तब आपने कहा पूछिये जो आपको पूछना हो-मैने कहा ज़रा दम लेने दीजिये थक बहुत गया हूं-भौं तिरछी कर बोले आप कैसे असभ्य आदमी हैं विलायत में लोग पचीस मील का चक्कर मार कर आते हैं और शाम को पुलपिट पर खड़े घंटों तक लेक्चर देते हैं यदि थके भी तो चूं नहीं करते आप के माफिक ऐसे बेहूदा तौर पर कह बैठें कि मैं थक गया तो समाज में उनकी हंसी हो और लेडी लोग कभी उनसे मुंह से भी न बोलैं क्योंकि वहां की चाल है अगर मर्द चार मील चले तो लेडी साहेब १० मील चलने का दावा बांध सक्ती हैं चलना भी सभ्यता का चिन्ह है अब कभी आप ऐसा मत कहियेगा-सभ्यता शब्द का विचार जो आपने पूछा था सो सुनिये इसके अर्थ तो मैं आप को ठीक २ नहीं बतला सक्ता पर जो उदाहरण मैं देता हूं उसी से सभ्यता का तात्पर्य